MUNI INTERNATIONAL SCHOOL

भारत बोध

मेरा भारत - श्रेष्ठ भारत

भारतीय होने का गौरव

Vol - 1

Disclaimer

This is a consideration notes and Muni International School is not responsible or liable in any manner for any content in this file. All the material is taken from different sources. Before claiming, One has to verify it from other sources also.

मुझे गर्व है कि मैं भारतीय हूँ

क्योंकि मेरा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है और सबसे प्राचीन सभ्यता (१०,००० वर्ष से भी अधिक) का जन्मदाता हैं। हमारी सभ्यता सबसेबड़ी, पुरानी है।

क्योंकि विश्व की सर्वप्रथम यूनिवर्सिटी तक्षशिला (७०० BC में) में स्थापित हुई जहाँ पुरे विश्व से १०५०० विद्यार्थी ६० से अधिक विषय पढ़ते थे।

क्योंकि मेरे देश की भाषा संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा है।

क्योंकि मेरे देश की जीडीपी मई २०१५ में चीन से भी अधिक पहुंच चुकी है।

क्योंकि भारत में सबसे अधिक पोस्ट ऑफिसेस और न्यूज़ चैनल्स (७९८ टीवी चैनल्स - जुलाई २०१४) है।

क्योंकि मेरा देश एकमात्र ऐसा देश है जिसने आज तक किसी अन्य देश में घुसपैठ नहीं की है।

क्योंकि शतरंज की खोज मेरे देश में हुई।

क्योंकि एक भारतीय सुन्दर पिचोरी गूगल के सीईओ है।

क्योंकि बोलीवूड विश्व का सबसे बड़ा फिल्म केंद्र है जहाँ हर वर्ष लगभग १००० फिल्मों का निर्माण होता है।

क्योंकि मेरा देश की रेलवे विश्व का सबसे बड़ा एम्प्लायर है जो १.६ मिलियन लोगो को रोजगार देता है।

क्योंकि १९८६ से भारत विश्व के लिए डायमंड का एकमात्र स्रोत है। (सोर्स : जेमोलोजिकल इंस्टिट्यूट ऑफ़ अमेरिका)

क्योंकि वाराणसी विश्व का सबसे प्राचीन शहर है जहां ५०० बी सी में महात्मा बुद्ध गए थे।

क्योंकि स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया की विश्व में सबसे अधिक शाखाएं है।

क्योंकि सिलिकन वैली और वाशिंगटन डी सी में लगभग ४९% तकनिकी विशेषज्ञ भारतीय है।

Countries equal to Indian States

छेत्रफल के मामले में भारत का विश्व में सातवां नंबर है परन्तु इसके विभिन राज्य दुनिया के कई देशो के छेत्रफल के बराबर है।

Indian inventions

1. भारतीय वैज्ञानिक (Indian scientist)

भारत में विज्ञान के क्षेत्र में भी असाधारण शोध हुए हैं वह भी साधन और सुचना की कमी के बावजूद। इस देश ने आर्यभट के नाम पर एक ऐसा वैज्ञानिक पाया जिसने पुरे विश्व को गिनती की गणना के लिए शुन्य दिया। ब्रह्माण्ड के रहस्यों को पहली बार सामने रखा। चरक पहले चिकित्सक थे जिन्होंने पाचन, चयापचय और शरीर प्रतिरक्षा की अवधारणा को दुनिया के सामने रखा। प्लास्टिक सर्जरी के पिता कहे जाने वाले सुश्रुत जी भी इसी देश ने पाया। गणित और खगोलशास्त्र के वैज्ञानिक भास्कराचार्य भी भारत देश के ही निवासी थे। रेडिओ विज्ञान के पिता जगदीश चंद्र बासु से लेकर मिसाइल मैन ए. पी. जे. अब्दुल कलाम तक हमरे देश में महँ वैज्ञानिकों की सुदीर्घ परंपरा रही है जिन्होंने अपने शोध से पूरी दुनिया को चौंका दिया है। कुछ वैज्ञानिकों के नाम निचे दिए गए हैं : -

i. **बौधायन** : बौधायन भारत के प्राचीन गणितज्ञ और शुल्ब सूत्र तथा श्रौतसूत्र के रचयिता थे। ज्यामिति के विषय में प्रमाणिक मानते हुए सारे विश्व में यूक्लिड की ही ज्यामिति पढ़ाई जाती है। मगर यह स्मरण रखना चाहिए कि महान यूनानी ज्यामितिशास्त्री यूक्लिड से पूर्व ही भारत में कई रेखागणितज्ञ ज्यामिति के महत्वपूर्ण नियमों की खोज कर चुके थे, उन रेखागणितज्ञों में बौधायन का नाम सर्वोपरि है। उस समय भारत में रेखागणित या ज्यामिति को शुल्व शास्त्र कहा जाता था। बौधायन के सूत्र वैदिक संस्कृत में हैं तथा धर्म, दैनिक कर्मकाण्ड, गणित आदि से सम्बन्धित हैं। वे कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित हैं। सूत्र ग्रन्थों में सम्भवतः ये प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। इनकी रचना सम्भवतः 8वीं-7वीं शताब्दी ईसापूर्व हुई थी।

   1) **बौधायन प्रमेय या पाइथागोरस प्रमेय :** समकोण त्रिभुज से सम्बन्धित पाइथागोरस प्रमेय सबसे पहले महर्षि बोधायन की देन है। पायथागोरस का जन्म तो ईसा के जन्म के 8 वी शताब्दी पहले हुआ था जबकि हमारे यहाँ इसे ईसा के जन्म के 15 वी शताब्दी पहले से ही ये पढ़ायी जाती थी। बौधायन का यह निम्न लिखित सूत्र है :
   "दीर्घचतुरश्रस्याक्ष्णया रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यग् मानी च यत् पृथग् भूते कुरूतस्तदुभयं करोति ॥"
   विकर्ण पर कोई रस्सी तानी जाय तो उस पर बने वर्ग का क्षेत्रफल ऊर्ध्व भुजा पर बने वर्ग तथा क्षैतिज भुजा पर बने वर्ग के योग के बराबर होता है। यह कथन 'पाइथागोरस प्रमेय' का सबसे प्राचीन लिखित कथन है।

   2) 2 का वर्गमूल : बौधायन श्लोक संख्या i.61-2 (जो आपस्तम्ब i.6 में विस्तारित किया गया है) किसी वर्ग की भुजाओं की लम्बाई दिए होने पर विकर्ण की लम्बाई निकालने की विधि बताता है। दूसरे शब्दों में यह 2 का वर्गमूल निकालने की विधि बताता है।
   "समस्य द्विकर्णि प्रमाणं तृतीयेन वर्धयेत।

तच् चतुर्थेनात्मचतुस्त्रिंशोनेन सविशेषः ।।"

किसी वर्ग का विकर्ण का मान प्राप्त करने के लिए भुजा में एक-तिहाई जोड़कर, फिर इसका एक-चौथाई जोड़कर, फिर इसका चौतीसवाँ भाग घटाकर जो मिलता है वही लगभग विकर्ण का मान है।

ii. **चरक :** चरक एक महर्षि एवं आयुर्वेद विशारद के रूप में विख्यात हैं। वे कुषाण राज्य के राजवैद्य थे। इनके द्वारा रचित चरक संहिता एक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ है। इसमें रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है। आचार्य चरक ने आचार्य अग्निवेश के अग्निवेशतन्त्र में कुछ स्थान तथा अध्याय जोड़कर उसे नया रूप दिया जिसे आज हम चरक संहिता के नाम से जानते है।

iii. **जीवक कौमारभच्च :** जीवक कौमारभच्च प्राचीन भारत के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य थे। अनेक बौद्ध ग्रन्थों में उनके चिकित्सा-ज्ञान की व्यापक प्रशंसा मिलती है। वे बालरोगविशेषज्ञ थे। वे महात्मा बुद्ध के निजी वैद्य थे।

iv. **सुश्रुत :** शल्य चिकित्सा (Surgery) के पितामह और 'सुश्रुत संहिता' के प्रणेता आचार्य सुश्रुत का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में काशी में हुआ था। इन्होंने धन्वन्तरि से शिक्षा प्राप्त की। सुश्रुत संहिता को भारतीय चिकित्सा पद्धति में विशेष स्थान प्राप्त है। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे। ये उपकरण शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए खोजे गए थे। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयां, चिमटियां आदि हैं। सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की। सुश्रुत ने कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेष निपुणता हासिल कर ली थी। सुश्रुत नेत्र शल्य चिकित्सा भी करते थे। सुश्रुतसंहिता में मोतियाबिंद के ओपरेशन करने की विधि को विस्तार से बताया गया है। उन्हें शल्य क्रिया द्वारा प्रसव कराने का भी ज्ञान था। सुश्रुत को टूटी हुई हड्डियों का पता लगाने और उनको जोडऩे में विशेषज्ञता प्राप्त थी। शल्य क्रिया के दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिए वे मद्यपान या विशेष औषधियां देते थे। मद्य संज्ञाहरण का कार्य करता था। इसलिए सुश्रुत को संज्ञाहरण का पितामह भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सुश्रुत को मधुमेह व मोटापे के रोग की भी विशेष जानकारी थी। प्रारंभिक अवस्था में शल्य क्रिया के अभ्यास के लिए फलों, सब्जियों और मोम के पुतलों का उपयोग करते थे। मानव शारीर की अंदरूनी रचना को समझाने के लिए सुश्रुत शव के ऊपर शल्य क्रिया करके अपने शिष्यों को समझाते थे। सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा में अद्भुत कौशल अर्जित किया तथा इसका ज्ञान अन्य लोगों को कराया। इन्होंने शल्य चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद के अन्य पक्षों जैसे शरीर सरंचना, काय चिकित्सा, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग आदि की जानकारी भी दी।

v. **<u>आर्यभट :</u>** आर्यभट (476-550) प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् और गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ की रचना की जिसमें ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है। आर्यभट का भारत और विश्व के ज्योतिष सिद्धान्त पर बहुत प्रभाव रहा है। उन्होंने एक ओर गणित में पूर्ववर्ती आर्किमिडीज़ से भी अधिक सही तथा सुनिश्चित पाई के मान को निरूपित किया तो दूसरी ओर खगोलविज्ञान में सबसे पहली बार उदाहरण के साथ यह घोषित किया गया कि स्वयं पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। आर्यभट ने ज्योतिषशास्त्र के आजकल के उन्नत साधनों के बिना जो खोज की थी, उनकी महत्ता है। कोपर्निकस (1473 से 1543 ई.) ने जो खोज की थी उसकी खोज आर्यभट हजार वर्ष पहले कर चुके थे। आर्यभट के अनुसार किसी वृत्त की परिधि और व्यास का संबंध 62,832 : 20,000 आता है जो चार दशमलव स्थान तक शुद्ध है।

1) **शून्य** : दस की घात के लिए एक स्थान धारक के रूप में शून्य का ज्ञान आर्यभट के स्थान-मूल्य अंक प्रणाली में निहित था।
2) **अपरिमेय (इर्रेशनल) के रूप में पाई** : आर्यभट ने पाई (π) के सन्निकटन पर कार्य किया और शायद उन्हें इस बात का ज्ञान हो गया था कि पाई इर्रेशनल है। आर्यभटीयम (गणितपाद) के दूसरे भाग वह लिखते हैं:
   चतुराधिकं शतमष्टगुणं द्वाषष्टिस्तथा सहस्त्राणाम्।
   अयुतद्वयस्य विष्कम्भस्य आसन्नौ वृत्तपरिणाहः॥
   इसके अनुसार व्यास और परिधि का अनुपात ((4 + 100) × 8 + 62000) / 20000 = 3.1416 है।
3) **क्षेत्रमिति और त्रिकोणमिति :** गणितपाद 6 में, आर्यभट ने त्रिकोण के क्षेत्रफल को इस प्रकार बताया है- त्रिभुजस्य फलाशारिरम समदलाकोटि भुजर्धसमवर्गः। इसका अनुवाद है: एक त्रिकोण के लिए, अर्ध-पक्ष के साथ लम्ब का परिणाम क्षेत्रफल है। आर्यभट ने अपने काम में द्विज्या (साइन) के विषय में चर्चा की है और उसको नाम दिया है अर्ध-ज्या इसका शाब्दिक अर्थ है "अर्ध-तंत्री"। आसानी की वजह से लोगों ने इसे ज्या कहना शुरू कर दिया।
4) **नक्षत्रों के आवर्तकाल :** समय की आधुनिक अंग्रेजी इकाइयों में जोड़ा जाये तो, आर्यभट की गणना के अनुसार पृथ्वी का आवर्तकाल (स्थिर तारों के सन्दर्भ में पृथ्वी की अवधि)) 23 घंटे 56 मिनट और 4.1 सेकंड थी; आधुनिक समय 23:56:4.091 है। इसी प्रकार, उनके हिसाब से पृथ्वी के वर्ष की अवधि 365 दिन 6 घंटे 12 मिनट 30 सेकंड, आधुनिक समय की गणना के अनुसार इसमें ३ मिनट २० सेकंड की त्रुटि है। नक्षत्र समय की धारण उस समय की अधिकतर अन्य खगोलीय प्रणालियों में ज्ञात थी, परन्तु संभवतः यह संगणना उस समय के हिसाब से सर्वाधिक शुद्ध थी वो भी बिना किसी यन्त्र के।
5) **सूर्य केंद्रीयता :** आर्यभट का दावा था कि पृथ्वी अपनी ही धुरी पर घूमती है और उनके ग्रह सम्बन्धी ग्रहचक्र मॉडलों के कुछ तत्व उसी

गति से घूमते हैं जिस गति से सूर्य के चारों ओर ग्रह घूमते हैं। इस प्रकार ऐसा सुझाव दिया जाता है कि आर्यभट की संगणनाएँ अन्तर्निहित सूर्य केन्द्रित मॉडल पर आधारित थीं, जिसमे ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते हैं।

vi. **<u>वराह मिहिर :</u>** वराहमिहिर (वरःमिहिर) ईसा की पाँचवीं-छठी शताब्दी के भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ थे। वाराहमिहिर ने ही अपने पंचसिद्धान्तिका में सबसे पहले बताया कि अयनांश का मान 50.32 सेकेण्ड के बराबर है। अपने पिता आदित्यदास से परम्परागत गणित एवं ज्योतिष सीखकर इन क्षेत्रों में व्यापक शोध कार्य किया। समय मापक घट यन्त्र, इन्द्रप्रस्थ में लौहस्तम्भ के निर्माण। वस्तुतः ऋग्वेद काल से ही भारत की यह परम्परा रही है। वरःमिहिर ने पूर्णतः इसका परिपालन किया है। 550 ई. के लगभग इन्होंने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें बृहज्जातक, बृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका, लिखीं। इन पुस्तकों में त्रिकोणमिति के महत्वपूर्ण सूत्र दिए हुए हैं, जो वराहमिहिर के त्रिकोणमिति ज्ञान के परिचायक हैं।पंचसिद्धांतिका में वराहमिहिर से पूर्व प्रचलित पाँच सिद्धांतों का वर्णन है। ये सिद्धांत हैं : पोलिशसिद्धांत, रोमकसिद्धांत, वसिष्ठसिद्धांत, सूर्यसिद्धांत तथा पितामहसिद्धांत। वराहमिहिर ने इन पूर्वप्रचलित सिद्धांतों की महत्वपूर्ण बातें लिखकर अपनी ओर से 'बीज' नामक संस्कार का भी निर्देश किया है, जिससे इन सिद्धांतों द्वारा परिगणित ग्रह दृश्य हो सकें। इन्होंने फलित ज्योतिष के लघुजातक, बृहज्जातक तथा बृहत्संहिता नामक तीन ग्रंथ भी लिखे हैं। बृहत्संहिता में वास्तुविद्या, भवन-निर्माण-कला, वायुमंडल की प्रकृति, वृक्षायुर्वेद आदि विषय सम्मिलित हैं।अपने पूर्ववर्ती वैज्ञानिक आर्यभट्ट की तरह उन्होंने भी कहा कि पृथ्वी गोल है। विज्ञान के इतिहास में वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि कोई शक्ति ऐसी है जो चीजों को जमीन के साथ चिपकाये रखती है। आज इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते है।वराहमिहिर ने पर्यावरण विज्ञान (इकालोजी), जल विज्ञान (हाइड्रोलोजी), भूविज्ञान (जिआलोजी) के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियां की। उनका कहना था कि पौधे और दीमक जमीन के नीचे के पानी को इंगित करते हैं। आज वैज्ञानिक जगत द्वारा उस पर ध्यान दिया जा रहा है।त्रिकोणमिति में $\sin^2 x + \cos^2 x = 1$, $\sin x = \cos(\frac{\pi}{2} - x)$ और $\frac{1-\cos 2x}{2}=\sin^2 x$ त्रिकोणमितीय सूत्र वाराहमिहिर ने प्रतिपादित किये हैं । अंकगणित में वराहमिहिर ने शून्य एवं ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया। क्रमचय-संचय में वराहमिहिर ने वर्तमान समय में पास्कल त्रिकोण (Pascal's triangle) के नाम से प्रसिद्ध संख्याओं की खोज की। इनका उपयोग वे द्विपद गुणाकों (binomial coefficients) की गणना के लिये करते थे। प्रकाशिकी में वराहमिहिर का प्रकाशिकी में भी योगदान है। उन्होने कहा है कि परावर्तन कणों के प्रति-प्रकीर्णन (back-scattering) से होता है। उन्होने अपवर्तन की भी व्याख्या की है।

vii. **<u>ब्रह्मगुप्त :</u>** ब्रह्मगुप्त (598-668) प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ थे।वे तत्कालीन गुर्जर प्रदेश (भीनमाल) के अन्तर्गत आने वाले प्रख्यात शहर उज्जैन (वर्तमान मध्य प्रदेश) की अन्तरिक्ष प्रयोगशाला के प्रमुख थे और इस दौरान उन्होने दो विशेष ग्रन्थ लिखे: ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त (सन 628 में) और खण्डखाद्यक या खण्डखाद्यपद्धति (सन्

665 ई में)।'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' उनका सबसे पहला ग्रन्थ माना जाता है जिसमें शून्य का एक अलग अंक के रूप में उल्लेख किया गया है। यही नहीं, बल्कि इस ग्रन्थ में ऋणात्मक (negative) अंकों और शून्य पर गणित करने के सभी नियमों का वर्णन भी किया गया है। उनके ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त के द्वारा ही अरबों को भारतीय ज्योतिष का पता लगा। अब्बासिद ख़लीफ़ा अल-मंसूर (७१२-७७५ ईस्वी) ने बग़दाद की स्थापना की और इसे शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित किया। उसने उज्जैन के कंकः को आमंत्रित किया जिसने ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त के सहारे भारतीय ज्योतिष की व्याख्या की। अब्बासिद के आदेश पर अल-फ़ज़री ने इसका अरबी भाषा में अनुवाद किया। ब्रह्मगुप्त ने किसी वृत्त के क्षेत्रफल को उसके समान क्षेत्रफल वाले वर्ग से स्थानान्तरित करने का भी यत्न किया। ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी की परिधि ज्ञात की थी, जो आधुनिक मान के निकट है। इन्होंने एक घातीय अनिर्धार्य समीकरण का पूर्णाकों में व्यापक हल दिया, जो आधुनिक पुस्तकों में इसी रूप में पाया जाता है। ब्रह्मगुप्त का सबसे महत्वपूर्ण योगदान चक्रीय चतुर्भुज पर है। उन्होने बताया कि चक्रीय चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्बवत होते हैं। ब्रह्मगुप्त ने चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल निकालने का सन्निकट सूत्र (approximate formula) तथा यथातथ सूत्र (exact formula) भी दिया है।

viii. **<u>वाग्भट :</u>** आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांगसंग्रह तथा अष्टांगहृदय के रचयिता। प्राचीन संहित्यकारों में यही व्यक्ति है, जिसने अपना परिचय स्पष्ट रूप में दिया है। अष्टांग हृदयम्, आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसके रचयिता वाग्भट हैं। इसका रचनाकाल 500 ईसापूर्व से लेकर 250 ईसापूर्व तक अनुमानित है। इस ग्रन्थ में ग्रन्थ औषधि (मेडिसिन) और शल्यचिकित्सा दोनो का समावेश है। चरक, सुश्रुत और वाग्भट को सम्मिलित रूप से वृहत्त्रयी कहते हैं।

ix. **<u>भास्कराचार्य</u>** : भास्कराचार्य या भाष्कर द्वितीय (1114 – 1185) प्राचीन भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे। इनके द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि है जिसमें लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित तथा गोलाध्याय नामक चार भाग हैं। ये चार भाग क्रमशः अंकगणित, बीजगणित, ग्रहों की गति से सम्बन्धित गणित तथा गोले से सम्बन्धित हैं। आधुनिक युग में धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति (पदार्थों को अपनी ओर खींचने की शक्ति) की खोज का श्रेय न्यूटन को दिया जाता है। किंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि गुरुत्वाकर्षण का रहस्य न्यूटन से भी कई सदियों पहले भास्कराचार्य ने उजागर कर दिया था। भास्कराचार्य ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रंथ में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बारे में लिखा है कि 'पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है। इस कारण आकाशीय पिण्ड पृथ्वी पर गिरते हैं' । उन्होने करणकौतूहल नामक एक दूसरे ग्रन्थ की भी रचना की थी। ये अपने समय के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे। कथित रूप से यह उज्जैन की वेधशाला के अध्यक्ष भी थे। उन्हें मध्यकालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता है। वह प्रथम गणितज्ञ थे जिन्होनें पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा था कि कोई संख्या जब शून्य से विभक्त की जाती है तो अनंत हो जाती है। किसी संख्या और अनंत का जोड़ भी अंनत होता है। खगोलविद् के रूप में भास्कर अपनी तात्कालिक गति की अवधारणा के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे खगोल वैज्ञानिकों को ग्रहों की गति का सही-सही पता लगाने में मदद मिलती है। भास्कर को अवकल गणित का संस्थापक

कह सकते हैं। उन्होंने इसकी अवधारणा आइज़ैक न्यूटन और गोटफ्राइड लैब्नीज से कई शताब्दीयों पहले की थी। ये दोनों पश्चिम में इस विषय के संस्थापक माने जाते हैं। जिसे आज अवकल गुणांक और रोल्स का प्रमेय कहते हैं। न्यूटन के जन्म के आठ सौ वर्ष पूर्व ही इन्होंने अपने गोलाध्याय नामक ग्रंथ में 'माध्यकर्षणतत्व' के नाम से गुरुत्वाकर्षण के नियमों की विवेचना की है। ये प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने दशमलव प्रणाली की क्रमिक रूप से व्याख्या की है। इनके ग्रंथों की कई टीकाएँ हो चुकी हैं तथा देशी और विदेशी बहुत सी भाषाओं में इनके अनुवाद हो चुके हैं। 69 वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी द्वितीय पुस्तक करणकुतूहल लिखी। इस पुस्तक में खगोल विज्ञान की गणना है। यद्यपि यह कृति प्रथम पुस्तक की तरह प्रसिद्ध नहीं है, फिर भी पंचांग आदि बनाने के समय अवश्य देखा जाता है।

x. **राम सेतु :** भारत में राम के सैनिकों द्वारा बनाए गए राम सेतु ने आज भी विश्व को आश्चर्यचकित कर रखा है। उस सेतु के तैरेते हुए पत्थर का रहस्य का आज भी वैज्ञानिकों को खोज करने के लिए मजबूर करता है। शास्त्रों में इस सेतु की लंबाई 100 योजन और चौड़ाई 10 योजन है जिसका अनुपात 10:1 है। यदि आज के पैमाने के अनुसार नापा जाए तो लंबाई 35 किलोमीटर और चौड़ाई 3.5 किलोमीटर होती है जिसका अनुपात भी 10:1 ही होता है।

ऐसे और भी कई वैज्ञानिक हैं जिनके बारे हम आसानी से पता लगा सकते हैं।

2. समय रेखा की खोज (Invention of Time line)

भारत के ऋषि मुनियों ने कई हजार साल पहले ही बता दिया था की पूरी धरती का केंद्र भारत में उज्जैन है। वहां राजा जय सिंह ने यन्त्र महल बनवाया जिसका इस्तेमाल समय जानने के लिए किया जाता था। आर्यभट ने 499 BC में अपनी किताब में ऐसी जगह नाम दिया था जहाँ एक ही समय और अलग अलग जगह पर सूरज उगता और डूबता है और एक ही समय पर कहीं धुप सर पर होती है तो उसी समय पर कही पर रात होती है। ऐसे और भी कई ऋषि मुनि थे जैसे वराहमहिरा, लल्लाचार्य, भास्कर और शंकरनारायण जिन्होंने बार बार समय को ले कर दिन रात को लेकर एक ही समय पर अलग अलग जगह की दिन रात की स्थिति को लेकर कई बार प्रमाण 1500 साल पहले ही दे दिए थे।

i.

3. प्राचीन भारतीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी

प्राचीन भारत का साहित्य अत्यन्त विपुल एवं विविधतासम्पन्न है। इसमें धर्म, दर्शन, भाषा, व्याकरण आदि के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, रसायन, धातुकर्म, सैन्य विज्ञान आदि भी वर्ण्यविषय रहे हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्राचीन भारत के कुछ योगदान निम्नलिखित हैं

i. **गणित :** अनादि वेदकाल और सिन्धु सरस्वती सभ्यता से आधुनिक काल तक भारतीय गणित के विकास होता रहा है । सरस्वती-सिन्धु परम्परा के उद्गम का

अनुमान अभी तक 7000 ई पू का माना जाता है। पुरातत्व से हमें नगर व्यवस्था, वास्तु शास्त्र आदि के प्रमाण मिलते हैं, इससे गणित का अनुमान किया जा सकता है। यजुर्वेद में बड़ी-बड़ी संख्याओं का वर्णन है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद संहिताओं से गणित तथा ज्योतिष को अलग-अलग शास्त्रों के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। शास्त्र के रूप में 'गणित' का प्राचीनतम प्रयोग लगध ऋषि द्वारा प्रोक्त वेदांग ज्योतिष नामक ग्रन्थ का एक श्लोक में माना जाता है। पर इससे भी पूर्व छान्दोग्य उपनिषद् में सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने जो 18 अधीत विद्याओं की सूची प्रस्तुत की है, उसमें ज्योतिष के लिये 'नक्षत्र विद्या' तथा गणित के लिये 'राशि विद्या' नाम प्रदान किया है। इससे भी प्रकट है कि उस समय इन शास्त्रों की तथा इनके विद्वानों की अलग-अलग प्रसिद्धि हो चली थी। कुछ गणितज्ञ जैसे लगधमुनि(वेदांगज्योतिष के रचयिता 1350 ई पू अ.स.),भरत मुनि(400 ई पू),आर्यभट (476-550, ज्योतिष), वराहमिहिर(ज्योतिष), श्रीधराचार्य (750) और भी कई गणितज्ञ आये जिन्होंने गणित का इतिहास हजारो साल पहले ही बदल दिया था। जिसमे जगद्गुरू स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ द्वारा विरचित वैदिक गणित अंकगणितीय गणना की वैकल्पिक एवं संक्षिप्त विधियों का समूह है। इसमें 16 मूल सूत्र दिये गये हैं। वैदिक गणित गणना की ऐसी पद्धति है, जिससे जटिल अंकगणितीय गणनाएं अत्यंत ही सरल, सहज व त्वरित संभव हैं। गणित की कई शाखाएँ हैं जैसे अंकगणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति, सांख्यिकी, बीजगणित, कलन, इत्यादि जिनकी खोज भारत में हुई। प्राचीन काल से ही भारत में गणितशास्त्र का विशेष महत्व रहा है। यह सभी जानते हैं कि शून्य एवं दशमलव की खोज भारत में ही हुई। यह भारत के द्वारा विश्व को दी गई अनमोल देन है। इस खोज ने गणितीय जटिलताओं को खत्म कर दिया। गणितशास्त्र को मुख्यत: तीन भागों में बांटा गया है। अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित। वैदिक काल में अंकगणित अपने विकसित स्वरूप में स्थापित था। 'यजुर्वेद' में एक से लेकर 10 खरब तक की संख्याओं का उल्लेख मिलता है। इन अंकों को वर्णों में भी लिखा जा सकता था। बीजगणित का साधारण अर्थ है, अज्ञात संख्या का ज्ञात संख्या के साथ समीकरण करके अज्ञात संख्या को जानना। अंग्रेजी में इसे ही अलजेब्रा कहा गया है। भारतीय बीजगणित के अविष्कार पर विवाद था। कुछ विद्वानों का मानना था इसके अविष्कार का श्रेय यूनानी विद्वान दिये फान्तस को है। परंतु अब यह साबित हो चुका है कि भारतीय बीजगणित का विकास स्वतंत्र रूप से हुआ है और इसका श्रेय भारतीय विद्वान आर्यभट्ट (446 ई.) को जाता है। रेखागणित का अविष्कार भी वैदिक युग में ही हो गया था। इस विद्या का प्राचीन नाम है- शुल्वविद्या या शुल्वविज्ञान। अनेक पुरातात्विक स्थलों की खुदाई में प्राप्त यज्ञशालाएं, वेदिकाएं, कुण्ड इत्यादि को देखने तथा इनके अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि इनका निर्माण रेखागणित के सिद्धांत पर किया गया है। ब्रह्मस्फुट सिद्धांत, नवशती, गणिततिलक, बीजगणित, गणितसारसंग्रह, गणित कौमुदी इत्यादि गणित शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ हैं।

ii. **<u>कैलकुलेटर :</u>** पूरा विश्व गणना करने के लिए नई नई खोज कर रहा था वहीं भारत में हजारों सालों पहले यह स्पष्ट हो गया था की मनुष्य सर्व श्रेष्ठ है मानव ने

कैलकुलेटर बनाया, कंप्यूटर बनाया और इन्हे हराने वाली एक भारतीय महिला थी जिन्हे ह्यूमन कैलकुलेटर के नाम से भी पुरे विश्व में जाना गया जिनका नाम शकुंतला देवी है और उन्होंने ने हुनर की श्रेय वैदिक गणित को दिया।

iii. **<u>खगोल शास्त्र :</u>** खगोल शास्त्र, एक ऐसा शास्त्र है जिसके अंतर्गत पृथ्वी और उसके वायुमण्डल के बाहर होने वाली घटनाओं का अवलोकन, विश्लेषण तथा उसकी व्याख्या की जाती है। यह वह अनुशासन है जो आकाश में अवलोकित की जा सकने वाली तथा उनका समावेश करने वाली क्रियाओं के आरंभ, बदलाव और भौतिक तथा रासायनिक गुणों का अध्ययन करता है। यह विज्ञान भारत में ही विकसित हुआ। प्रसिद्ध जर्मन खगोलविज्ञानी कॉपरनिकस से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोल आकृति और इसके अपनी धरी पर घूमने की पुष्टि कर दी थी। इसी तरह आइजक न्यूटन से 1000 वर्ष पूर्व ही ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धंत की पुष्टि कर दी थी। यह एक अलग बात है कि किन्हीं कारणों से इनका श्रेय पाश्चात्य वैज्ञानिकों को मिला। भारतीय खगोल विज्ञान का उद्भव वेदों से माना जाता है। वैदिककालीन भारतीय धर्मप्राण व्यक्ति थे। वे अपने यज्ञ तथा अन्य धर्मिक अनुष्ठान ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ लग्न देखकर किया करते थे। शुभ लग्न जानने के लिए उन्होंने खगोल विज्ञान का विकास किया था। वैदिक आर्य सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन गति से परिचित थे। वैदिककालीन खगोल विज्ञान का एक मात्र ग्रंथ 'वेदांग ज्योतिष' है। इसकी रचना 'लगध' नामक ऋषि ने ईसा से लगभग 100 वर्ष पूर्व की थी।

iv. **<u>भौतिक विज्ञान :</u>** प्राचीनतम वैज्ञानिक ग्रंथों, जैसे कि विशेषिक में, जो 6 वीं सदी ई.पू. या संभवतः और पहले की रचना है – ''उपनिषादिक तत्व मीमांसा से वैज्ञानिक यथार्थवादः दार्शनिक विकास' ' – में विभिन्न प्रकार के पौधों और प्राकृतिक वस्तुओं के भौतिक गुणों को लिपिबद्ध करने का प्रारंभिक प्रयास किया गया। प्राकृतिक घटनाओं का निरीक्षण करके उनका वर्गीकरण और संक्षेप में उनका वर्णन करने का भी प्रयास किया गया। उसके बाद पदार्थ की संरचना और उनके भौतिक व्यवहार के बारे में सिद्धांत प्रतिपादित किया गया और उनके लिए सूत्रा विकसित किए गए। इस प्रकार यद्यपि भारत में भौतिकी और रसायन के प्राचीनतम प्रयोग इन प्रारंभिक विवेक सम्मत ग्रंथों में वैज्ञानिक गवेषणा और वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण के तत्व विद्यमान थे। प्राचीनतम परमाणु सिद्धांत कम से कम 2500 वर्ष पुराना है। भारत में दर्शन की लगभग हर विवेकसम्मत विचारधारा में मूलकणों की प्रकृति के संबंध में कुछ न कुछ आख्यान है और इन विभिन्न विचारधाराओं ने इस विचार को प्रसारित किया कि पदार्थ परमाणुओं द्वारा संरचित है जो अविभाज्य और अनश्वर है। जिनका उल्लेख ''उपनिषादिक तत्व मीमांसा से वैज्ञानिक यथार्थवादः दार्शनिक विकास' ' में है। जिसमे कणो की भौतिकी, आणविक-परमाणविक गतियां, चाहे वह घूर्णन हो या वृत्ताकार गति या हारमोनिक गति, तेजस /उष्मा/ अवयव अणु-व्यूहों को प्रभावित करता है जिससे नए अणुओं और भिन्न रंग का निर्माण होना, प्रकाश और ध्वनि, गति के नियम ऐसे और भी नियम है जिनमे भौतिक विज्ञान के नियम वर्णित है।

v. **<u>आयुर्वेदशास्त्र :</u>** आयुर्वेद शास्त्र का विकास उत्तरवैदिक काल में हुआ। इस विषय पर अनेक स्वतंत्र ग्रंथों की रचना हुई। भारतीय परंपरा के अनुसार आयुर्वेद की रचना सबसे पहले ब्रह्मा ने की। ब्रह्मा ने प्रजापति को, प्रजापति ने अश्विनी कुमारों को और फिर अश्विनी कुमारों

ने इस विद्या को इन्द्र को प्रदान किया। इन्द्र के द्वारा ही यह विद्या सम्पूर्ण लोक में विस्तारित हुई। इसे चार उपवेदों में से एक माना गया है।आयुर्वेद के सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ चरकसंहिता के बारे में ऐसा माना जाता है कि मूल रूप से यह ग्रन्थ आत्रेय पुनर्वसु के शिष्य अग्निवेश ने लिखा था। चरक ऋषि ने इस ग्रन्थ को संस्कृत में रूपांतरित किया। इस कारण इसका नाम चरक संहिता पड़ गया। बताया जाता है कि पतंजलि ही चरक थे। इस ग्रन्थ का रचनाकाल ई. पू. पांचवी शताब्दी माना जाता है।

vi. **रसायनशास्त्र :**रसायनशास्त्र का प्रारंभ वैदिक युग से माना गया है। प्राचीन ग्रंथों में रसायनशास्त्र के 'रस' का अर्थ होता था-पारद। पारद को भगवान शिव का वीर्य माना गया है। रसायनशास्त्र के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के खनिजों का अध्ययन किया जाता था। वैदिक काल तक अनेक खनिजों की खोज हो चुकी थी तथा उनका व्यावहारिक प्रयोग भी होने लगा था। परंतु इस क्षेत्र में सबसे ज्यादा काम नागार्जुन नामक बौद्ध विद्वान ने किया। उनका काल लगभग 280-320 ई. था। उन्होंने एक नई खोज की जिसमें पारे के प्रयोग से तांबा इत्यादि धातुओं को सोने में बदला जा सकता था। रसायनशास्त्र के कुछ प्रसिद्ध ग्रंथों में एक है रसरत्नाकर। इसके रचयिता नागार्जुन थे। इसके कुल आठ अध्याय थे परंतु चार ही हमें प्राप्त होते हैं। इसमें मुख्यत: धातुओं के शोधन, मारण, शुद्ध पारद प्राप्ति तथा भस्म बनाने की विधियों का वर्णन मिलता है। प्रसिद्ध रसायनशास्त्री श्री गोविन्द भगवतपाद जो शंकराचार्य के गुरु थे, द्वारा रचित 'रसहृदयतन्त्र' ग्रंथ भी काफी लोकप्रिय है। इसके अलावा रसेन्द्रचूड़ामणि, रसप्रकासुधाकर रसार्णव, रससार आदि ग्रन्थ भी रसायनशास्त्र के ग्रन्थों में ही गिने जाते हैं।

vii. **ज्योतिषशास्त्र :** ज्योतिष वैदिक साहित्य का ही एक अंग है। इसमें सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, नक्षत्र, ऋतु, मास, अयन आदि की स्थितियों पर गंभीर अध्ययन किया गया है। इस विषय में हमें 'वेदांग ज्योतिष' नामक ग्रंथ प्राप्त होता है। इसके रचना का समय 1200 ई. पू. माना गया है। आर्यभट्ट ज्योतिष गणित के सबसे बड़े विद्वान के रूप में माने जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार इनका जन्म 476 ई. में पटना (कुसुमपुर) में हुआ था। मात्र 23 वर्ष की उम्र में इन्होंने 'आर्यभट्टीय' नामक प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में पूरे 121 श्लोक हैं। इसे चार खण्डों में बांटा गया है- गीतिकापाद, गणितपाद, कालक्रियापाद और गोलपाद। वराहमिहिर के उल्लेख के बिना तो भारतीय ज्योतिष की चर्चा अधूरी है। इनका समय छठी शताब्दी ई. के आरम्भ का है। इन्होंने चार प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की- पंचसिद्धान्तिका, वृहज्जातक, वृहदयात्रा तथा वृहत्संहिता जो ज्योतिष को समझने में मदद करती हैं।

viii. **संगीतशास्त्र :** भारतीय परंपरा में भगवान शिव को संगीत तथा नृत्य का प्रथम अचार्य कहा गया है। कहा जाता है के नारद ने भगवान शिव से ही संगीत का ज्ञान प्राप्त किया था। इस विषय पर अनेक ग्रंथ प्राप्त होते हैं जैसे नारदशिक्षा, रागनिरूपण, पंचमसारसंहिता, संगीतमकरन्द आदि। संगीतशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्यों में मुख्यत: उमामहेश्वर, भरत, नन्दी, वासुकि, नारद, व्यास आदि की गिनती होती है। भरत के नाटयशास्त्र के अनुसार गीत की उत्पत्ति जहां सामवेद से हुई है, वहीं यजुर्वेद ने अभिनय (नृत्य) का प्रारंभ किया।

ix. **धर्मशास्त्र :** प्राचीन काल में शासन व्यवस्था धर्म आधारित थी। प्रमुख धर्म मर्मज्ञों वैरवानस, अत्रि, उशना, कण्व, कश्यप, गार्ग्य, च्यवन, बृहस्पति, भारद्वाज आदि ने धर्म के विभिन्न सिद्धांतों एवं रूपों की विवेचना की है। पुरुषार्थ के चारों चरणों में इसका स्थान पहला है।उत्तर काल में लिखे गये संग्रह ग्रंथों में तत्कालीन समय की सम्पूर्ण धार्मिक व्यवस्था का वर्णन मिलता है। स्मृतिग्रंथों में मनुस्मृति, याज्ञवल्कय स्मृति, पराशर स्मृति, नारदस्मृति, बृहस्पतिस्मृति में लोकजीवन के सभी पक्षों की धार्मिक दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है तथा कुछ नियम भी प्रतिपादित किये गये हैं।

x. **अर्थशास्त्र :** चार पुरुषार्थो में अर्थ का दूसरा स्थान है। महाभारत में वर्णित है कि ब्रह्मा ने अर्थशास्त्र पर एक लाख विभागों के एक ग्रंथ की रचना की। इसके बाद शिव (विशालाक्ष) ने दस हजार, इन्द्र ने पांच हजार, बृहस्पति ने तीन हजार, उशनस ने एक हजार विभागों में इसे संक्षिप्त किया। अर्थशास्त्र के अंतर्गत केवल वित्त संबंधी चर्चा का ही उल्लेख नहीं किया गया है। वरन राजनीति, दण्डनीति और नैतिक उपदेशों का भी वृहद वर्णन मिलता है। अर्थशास्त्र का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है कौटिल्य का अर्थशास्त्र। इसकी रचना चाणक्य ने की थी। चाणक्य का जीवन काल चतुर्थ शताब्दी के आस-पास माना जाता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में धर्म, अर्थ, राजनीति, दण्डनीति आदि का विस्तृत उपदेश है। इसे 15 अधिकरणों में बांटा गया है। इसमें वेद, वेदांग, इतिहास, पुराण, धार्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, ज्योतिष आदि विद्याओं के साथ अनेक प्राचीन अर्थशास्त्रियों के मतों के साथ विषय को प्रतिपादित किया गया है। इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ है कामन्दकीय नीतिसार, नीतिवाक्यामृत, लघुअर्थनीति इत्यादि।

xi. **प्रौद्योगिकी ग्रन्थ :** 'भृगुशिल्पसंहिता' में 16 विज्ञान तथा 64 प्रौद्योगिकियों का वर्णन है। इंजीनियरी प्रौद्योगिकियों के तीन 'खण्ड' होते थे। 'हिन्दी शिल्पशास्त्र' नामक ग्रन्थ में कृष्णाजी दामोदर वझे ने 400 प्रौद्योगिकी-विषयक ग्रन्थों की सूची दी है, जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं- "विश्वमेदिनीकोश, शंखस्मृति, शिल्पदीपिका, वास्तुराजवल्लभ, भृगुसंहिता, मयमतम्, मानसार, अपराजितपृच्छा, समरांगणसूत्रधार, कश्यपसंहिता, वृहतपराशरीय-कृषि, निसारः, शिगृ, सौरसूक्त, मनुष्यालयचंद्रिका, राजगृहनिर्माण, दुर्गविधान, वास्तुविद्या, युद्धजयार्णव।" प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित 18 प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में से 'कश्यपशिल्पम्' सर्वाधिक प्राचीन मानी जाती है। प्राचीन खनन एवं खनिकी से सम्बन्धित संस्क्रित ग्रन्थ हैं- 'रत्नपरीक्षा', लोहार्णणव, धातुकल्प, लोहप्रदीप, महावज्रभैरवतंत्र तथा पाषाणविचार। 'नारदशिल्पशास्त्रम' शिल्पशास्त्र का ग्रन्थ है।

xii. **ललित कला :** वेदों का पाठ किया जाता था जो सस्वर एवं शुद्ध होना आवश्यक था। इसके फलस्वरूप वैदिक काल में ही ध्वनि एवं ध्वनिकी का सूक्ष्म अध्ययन आरम्भ हुआ। सौंदर्य या लालित्य के आश्रय से व्यक्त होने वाली कलाएँ ललित कला (Fine arts) कहलाती हैं। अर्थात वह कला जिसके अभिवंयजन में सुकुमारता और सौंदर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यतः मनोविनोद के लिए हो। जैसे गीत, संगीत, नृत्य, नाट्य, तथा विभिन्न प्रकार की चित्रकलाएँ। तमिलनाडु में प्रसिद्ध यह नृत्य पहले पहल आडल, कूलू, दासियाट्टम, चिन्नमेलम आदि नामों से जाना जाता था। इस नृत्य में भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में वर्णित प्रणालियों का शुद्ध अनुकरण होने के कारण इसे 'भरतनाट्यम्' कहने लगे। भरत शब्द ही भाव, राग और ताल के संयोग को सूचित करता है। यह नाट्य तांडव, लास्य दो प्रकार के हैं। शिवजी द्वारा तंडु

नामक भूतगण को प्रदत्त तांडव तथा पार्वती देवी से प्रदत्त लास्य है। यह नृत्य अत्यंत प्राचीन माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष रूप में मिली हुई वस्तुओं में एक नर्तकी की प्रतिमा है। तमिल के पंचमहाकाव्यों में श्रेष्ठ शिप्पधिकारम में भी हम इस नाट्यप्रणाली का उल्लेख पाते हैं। यह प्रणाली केवल दक्षिण भारत में ही प्रचलित नहीं थी, अपितु उत्तर भारत में भी एक काल में यह प्रचलित थी। प्रमाणस्वरूप हम उत्तर भारत के अनेक भग्न शिलाखंडों में इस नृत्यप्रणाली का प्रतिपादन पाते हैं। आज सांस्कृतिक नवजागरण के इस युग में पाश्चात्य देशों का ध्यान भरतनाट्यम की ओर आकृष्ट हुआ है। इन नृत्यप्रणाली में पहले पुष्पांजलि, फिर मुखशाली, फिर शुद्ध यति नृत्य, शब्दशाली, सूडादि शब्द नृत्त, शब्दसूड, फिर अनेक प्रकार के गीतों का अभिनय, फिर प्रबंध नर्तन तथा अंत में सिंधुतरु ध्रुवपद आदि का क्रम रखा गया है। यह नाट्य कविता, अभिनय, रस, राग आदि का सम्मिश्रित रूप है जो क्रमश: यजु:, साम, अथर्वण वेदों का सार तथा धर्म, अर्थ काम, मोक्ष को प्रदान करनेवाला माना जाता है। आजकल इस नृत्यप्रणाली का प्रचलन व्यापक हो गया है। राग, ताल, अभिनय, नृत्त, चित्रकारी, शिल्पकला आदि से युक्त इस कला का संपोषण इसकी वारीकियों की ओर विशेष ध्यान देते हुए बड़ी श्रद्धा के साथ हो रहा है।

4. पृथ्वी का आकार (Shape of earth)

भारत में 10000 वर्ष पहले वराह अवतार की कथा मशहूर है जिसमे वराह जी पृथ्वी को पानी के बहार निकलते हैं और चित्र में वरह जी अपनी नाक पर गोल पृथ्वी को पानी से बहार निकाल कर लाते हैं। अर्थात भारत में 10000 साल पहले भी पता था की धरती गोल है। दूसरा geography को भारत ने भूगोल नाम दिया था क्यों की भूमि गोल होती है। गोल होने के साथ इसमें गति भी है इस लिए इसका नाम जगत भी दिया।

इतना ही नहीं धरती के आकर के साथ उसमे जीव जंतु और मानव के शरीर के साथ साथ मानसिकता के विकास के लिए भी भारतीय ग्रंथों में कई हजार सालों पहले ही वर्णन है बाद में डार्विन थ्योरी ने 1859 में उसके बारे में बताया।

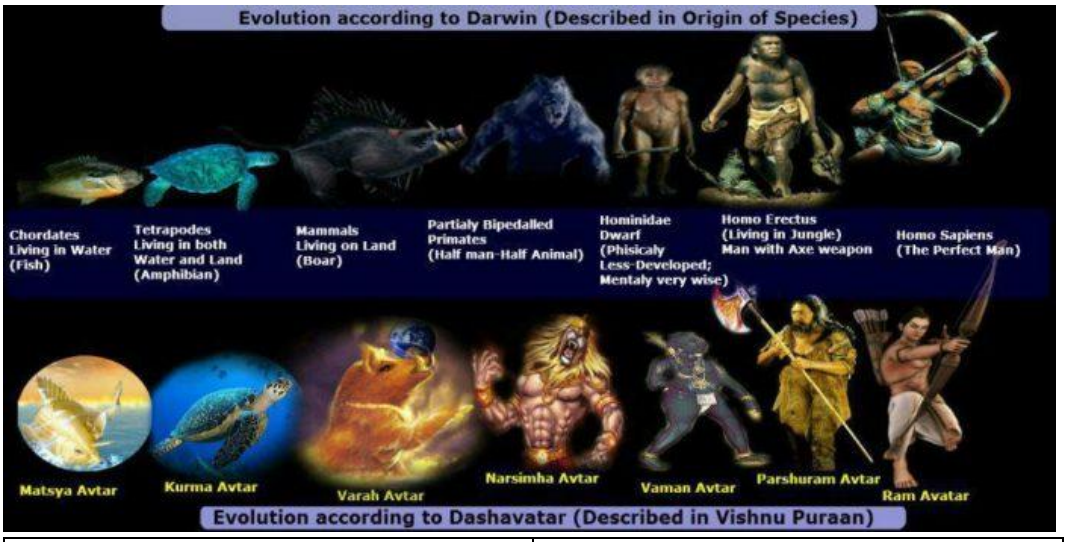

भारत के अनुसार	डार्विन के अनुसार
मत्स्य अवतार	Chordates Living in water (Fish)
कूर्मा अवतार	Tetrapod's Living in both water and land

वराह अवतार	Mammals Living on Land (Boar)
नरसिम्हा अवतार	Partially Bipedalled Primates (Half Man Half Animal)
वामन अवतार	Hominidae Dwarf (Physically Less developed: Mentally very wise
परसुराम अवतार	Homo Erectus Living in Jungle (Man with axe weapon)
श्री राम अवतार	Homo Sapiens (The perfect Man)

5. Newton's law of motion (न्यूटन के गति के नियम)

पुरे विश्व में आज गति के नियम हर जगह पढ़ाया जा रहा है भारत में इन नियमों को ऋषि कणाद ने दूसरे सदी BC में बताया था। सोलहवीं सदी AD में न्यूटन ने गति के तीन नियम दिए थे। ऋषि कणाद के अनुसार ये नियम थे :

i. वेगः निमित्तविशेषात कर्मणो जायते
ii. वेग निमित्तापेक्षात कर्मणो जायते नियतदिक क्रिया प्रबन्धे हेतु
iii. वेगः संयोगविशेषविरोधी

6. ज्येष्ठा तारा (Antares)

वैज्ञानिकों ने Antares तारे को सबसे ज्यादा चमकदार बताया है। भारतीय ऋषि मुनियों ने हजारों साल पहले ही इसके बारे में बताया था जो की अथर्व वेद में वर्णित है और इस तारे का नाम ज्येष्ठ रखा था क्यों की वे जानते थे ज्येष्ठ तारा सूरज से 40000 हजार गुना बड़ा है। यह मानवों द्वारा बताया गया सबसे बड़ा तारा है।

7. सप्तऋषि तारे (Great Bear Constellation)

सप्तऋषि तारे (Great Bear Constellation) के बारे में बताया उसमे जो दूसरा तारा है वह जुड़वाँ हैं। मगर भारत में इन तारों को सप्तऋषि के नाम से जाना जाता है। इनमे प्रत्येक तारा का एक नाम दिया गया है जिसमे दूसरे तारे का नाम अरुंधति और वशिष्ठ बताया। ये दोनों तारे एकदूसरे के चरों तरफ दोनों ही चक्कर लगते हैं और दक्षिण भारत में यह परम्परा भी बनाई की पति पत्नी शादी के बाद इन तारों को देखेंगे ये सब कुछ तब बतया गया जब राकेट या टेलिस्कोप नहीं थे।

8. ज्योतिष (Astrology)

भारत में अपने आस-पास की घटनाओं को ग्रहों-नक्षत्रों की गतिविधियों से जोड़ने लगा और इस तरह एक शास्त्र ही बन गया, जिसे आज हम ज्योतिष कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र की प्रामाणिक

परिभाषा वेदो में है। ग्रह (ग्रह, नक्षत्र, धूमकेतु आदि) और समय का ज्ञान कराने वाले विज्ञान को ज्योतिष अर्थात ज्योति प्रदान करने वाला विज्ञान कहते हैं। एक तरह से यह रास्ता बतलाने वाला शास्त्र है। जिस शास्त्र से संसार का ज्ञान, जीवन-मरण का रहस्य और जीवन के सुख-दुःख के संबंध में ज्योति दिखाई दे वही ज्योतिष शास्त्र है। ज्योतिष का उदय भारत में हुआ, क्योंकि भारतीय ज्योतिष शास्त्र की पृष्ठभूमि 8000 वर्षों से अधिक पुरानी है। अलग-अलग जगहों पर ग्रहों की रोशनी का कोण अलग-अलग होने की वजह से प्रकाश की तीव्रता में फर्क आ जाता है। समय के साथ इसका असर भी बदलता जाता है। जिस माहौल में जीव रहता है, उसी के अनुरूप उसमें संबंधित तत्व भारी या हल्के होते जाते हैं। हरेक की अपनी विशेषता होती है। जैसे, किसी स्थान विशेष में पैदा होने वाला मनुष्य उस स्थान पर पड़ने वाली ग्रह रश्मियों की विशेषताओं के कारण अन्य स्थान पर उसी समय जन्मे व्यक्ति की अपेक्षा अलग स्वभाव और आकार-प्रकार का होता है।
इस प्रकार ज्योतिष, विज्ञान जैसा ही है, जिसमें मानव जीवन पर ग्रह-नक्षत्रों के प्रभाव का तर्कसम्मत एवं गणितीय आधार पर अध्ययन किया जाता है और उपलब्ध आँकड़ों एवं सूचनाओं के आधार पर मानव विशेष के वर्तमान, भूत एवं भविष्य की जानकारी दी जाती है।

9. जंग मुक्त लोहा (rust free iron)

वैज्ञानिक जंग रोधक की वस्तुओं को बनाने की कई सालों से प्रयास कर रहे हैं और कुछ बनाई भी हैं मगर उनमे कुछ ही सालों में जंग लग ही जाता है। भारत में आज भी लोहे के खम्भे ऐसे हैं जिनमे 2400 साल बारिश और अब प्रदूषण के बाद भी लोहे में जंग नहीं लगा। एक है दिल्ली में और दूसरा है बंगलौर के पास। आश्चर्य जनक बात तो यह है की यह किसी वैज्ञानिक ने नहीं यह वहां आस पास रहने वाले लोगों ने आदिशंकराचार्य के स्वागत में बनवाया गया था। लोहस्तम्भ इस बात का प्रमाण है की कई सैकड़ों साल पहले ही यहाँ के लोग जंग मुक्त लोहे के तकनीक जानते थे।

10. जस्ता निकलने की विधि (Remove Zinc form Zinc Core)

जिंक कोर से जिंक निकलने के लिए जिंक को 997 डिग्री सेल्सियस और 1000 डिग्री सेल्सियस के बीच में गरम करना पड़ता है। जिंक 997 डिग्री पर तरल पदार्थ बनता है और 1000 डिग्री पर भाप। जब भी जिंक निकला जाता था तब जिंक तरल बनते निचे आ जाता था और निचे ज्यादा गरम होने पर तुरंत ही भाप बन जाता था। भारत ने 4000 साल पहले से ही जिंक निकलता आ रहा है। बाद में यह विधि भारत से बहार गई और विश्व में फ़ैल गई।

11. Reasons To Believe ancient Bharat Is Based On Science

i. People are advised to worship Neem and Banyan tree in the morning. Inhaling the air near these trees, is good for health.

ii. If you are trying to look ways for stress management, there can't be anything other than Hindu Yoga aasan Pranayama (inhaling and exhaling air slowly using one of the nostrils).
iii. Hindu temples are built scientifically. The place where an idol is placed in the temple is called 'Moolasthanam'. This 'Moolasthanam' is where earth's magnetic waves are found to be maximum, thus benefitting the worshipper.
iv. Every Hindu household has a Tulsi plant. Tulsi or Basil leaves when consumed, keeps our immune system strong to help prevent the H1N1 disease.
v. The rhythm of Vedic mantras, an ancient Hindu practice, when pronounced and heard are believed to cure so many disorders of the body like blood pressure.
vi. Hindus keep the holy ash in their forehead after taking a bath, this removes excess water from your head.
vii. Women keep kumkum bindi on their forehead that protects from being hypnotised.
viii. Eating with hands might be looked down upon in the west but it connects the body, mind and soul, when it comes to food.
ix. Hindu customs requires one to eat on a leaf plate. This is the most eco-friendly way as it does not require any chemical soap to clean it and it can be discarded without harming the environment.banana; palash leaves
x. Piercing of baby's ears is actually part of acupuncture treatment. The point where the ear is pierced helps in curing Asthma.
xi. Sprinkling turmeric mixed water around the house before prayers and after. Its known that turmeric has antioxidant, antibacterial and anti-inflammatory qualities.
xii. The old practice of pasting cow dung on walls and outside their house prevents various diseases/viruses as this cow dung is anti-biotic and rich in minerals.
xiii. Hindus consider drinking cow urine to cure various illnesses. Apparently, it does balance bile, mucous and airs and a remover of heart diseases and effect of poison.
xiv. The age-old punishment of doing sit-ups while holding the ears actually makes the mind sharper and is helpful for those with Autism, Asperger's Syndrome, learning difficulties and behavioural problems.
xv. Lighting 'diyas' or oil or ghee lamps in temples and house fills the surroundings with positivity and recharges your senses.
xvi. Janeu, or the string on a Brahmin's body, is also a part of Acupressure 'Janeu' and keeps the wearer safe from several diseases.
xvii. Decorating the main door with 'Toran'- a string of mangoes leaves;neem leaves;ashoka leaves actually purifies the atmosphere.
xviii. Touching your elder's feet keeps your backbone in good shape.
xix. Cremation or burning the dead, is one of the cleanest form of disposing off the dead body.
xx. ॐ Chanting the mantra 'Om' leads to significant reduction in heart rate which leads to a deep form of relaxation with increased alertness.
xxi. Hanuman Chalisa, according to NASA, has the exact calculation of the distance between Sun and the Earth.
xxii. The 'Shankh Dhwani' creates the sound waves by which many harmful germs, insects are destroyed. The mosquito breeding is also affected by Shankh blowing and decreases the spread of malaria.

Indian Geography

1. भारत की ऋतुएँ (Indian Seasons)

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहां समय-समय पर छः ऋतुएं (Six Types of Ritu) अपनी छटा बिखेरती हैं। प्रत्येक ऋतु दो मास की होती है।

भारत में परंपरागत रूप से मुख्यतः छः ऋतुएं परिभाषित की गयी हैं।

अलग अलग मौसम में अलग अलग ताप और दाब पृथ्वी पर होता है। यही ताप और दाब अलग अलग मौसमी आहार का कारण भी होते है। जैसे गर्मी में ठन्डे प्रवित्ति के आहार या ठण्ड में गर्म प्रवित्ति के आहार। इन आहारों के आधार पर कई पर्व भी मनाये जाते है और उपवास भी किया जाता है। इतनी प्रकार की ऋतुएँ और उनके प्रभाव के कारण कई प्रकार के आहार, त्यौहार या उपवास इत्यादि पुरे विश्व में मात्र भारत देश में ही होता है।

ऋतु	**हिन्दू मास**	**ग्रेगरियन मास**
वसन्त (Spring)	चैत्र से वैशाख (वैदिक मधु और माधव)	मार्च से अप्रैल
ग्रीष्म (Summer)	ज्येष्ठ से आषाढ (वैदिक शुक्र और शुचि)	मई से जून
वर्षा (Rainy)	श्रावन से भाद्रपद (वैदिक नभः और नभस्य)	जुलाई से सितम्बर
शरद् (Autumn)	आश्विन से कार्तिक (वैदिक इष और उर्ज)	अक्टूबर से नवम्बर
हेमन्त (pre-winter)	मार्गशीर्ष से पौष (वैदिक सहः और सहस्य)	दिसम्बर से 15 जनवरी
शिशिर (Winter)	माघ से फाल्गुन (वैदिक तपः और तपस्य)	16 जनवरी से फरवरी

2. जैव विविधता (Biodiversity)

'जैव विविधता' शब्द मूलतः दो शब्दों से मिलकर बना है- जैविक और विविधता। सामान्य रूप से जैव विविधता का अर्थ जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों से है। प्रकृति में मानव, अन्य जीव जन्तु तथा वनस्पतियों का संसार एक दूसरे से इस प्रकार जुड़ा है कि किसी के भी बाधित हाने से सभी का सन्तुलन बिगड़ जाता है तथा अन्ततः मानव जीवन कुप्रभावित हाते है। इस कारण से सदियों से यहाँ हवन, पशु पक्षियों की पूजा, धरती, पेड़-पौधे, नदियों, पर्वतों और वायु की भी पूजा और उसको संरक्षित करने के लिए प्रयास करता आ रहा है। प्राकृत संसाधनों का मात्र ऊपरी सतह के संसाधनों का इस्तेमाल करता आ रहा है।

विविधता - विभिन्न भू-रूपों (diversity - different landforms)

पुरे वश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहाँ कई प्रकार के भू खंडो को देखा जा सकता है। भारत के भू-रूपों को क्रमशः पांच अलग-अलग प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है, क्रमशः ये उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र, उत्तर के मैदान, राजस्थान के रेगिस्तान, पठार और तटीय स्ट्रिप्स और द्वीप समूह हैं। यहाँ अलग अलग भू रूपों की वजह से अलग अलग प्रकार के पेड़ पौधों, जीवों, वातावरण तथा जलवायु भी हैं। इसलिए केवल भारत में ही कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों को देखा जा सकता है और समझा जा सकता है।

Indian History

1. सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley civilization)

हड़प्पा सभ्यता के प्रारम्भिक स्थल सिन्धु क्षत्रे तक ही सीमित होने के कारण, उसे सिन्धु घाटी सभ्यता का नाम दिया गया था । अनेकों स्थलों की खुदाई के बाद पता चलता है कि यह सभ्यता पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों तक फैली थी । इसका विस्तार उत्तर में जम्मू से, दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान तट से उत्तर पूर्व में मेरठ तक था । हरिदत्त वेदालंकार इसका समय 3000 ई.पू. निर्धारित करते है । डॉ. राधा कुमुद मुकर्जी और श्री अर्नेस्ट मैके इस सभ्यता का समय 3250 ई.पू. से 2750 ई.पू. ठहराते है । इतने समय पहले यहां के रहन सहन बहुत ही उच्तम था चाहे नगर निर्माण, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन या धार्मिक जीवन हो सभी बहुत ही उच्च थे। नगर निर्माण में ध्यान देने वाली बाटे होती थी नगर योजना, भवन निर्माण, सार्वजनिक भवन, विशाल स्नानागार, अन्न भण्डार और जल निकासी प्रणाली। इतना ही नहीं भारत में और न जाने कितने प्रकार की वयवस्था 3000 ई.पू. निर्धारित हो चुकी थी। जो आज हम भूल चुके हैं। हमें गर्व है की हजारों साल पहले से ही यहां के लोगों को उच्तम जीवन शैली का ज्ञान था।

2. भारतीय इतिहास : विदेशी इतिहासकारों की दृष्टि में

I. **थॉमस बेबिंग्टन मैकॉले** (25 अक्टूबर 1800 – 28 दिसंबर 1859) : ये ब्रिटिश के इतिहासकार थे जिन्हो ने भारत में 17 सालों तक प्रवास किया और पूरा भारत देश घूमे फिर इंग्लैंड चले गए और उन्हों ने इग्लैंड पार्लियामेंट में हाउस ऑफ़ कॉमन्स में उन्होंने एक लम्बा भाषण दिया जिसमे उन्होंने भारत के बारे में कहा की "मैं पुरे भारत में घूम चूका हूँ पर मैंने एक भी चोर, गरीब या बेरोजगार नहीं देखा। भारत में मैंने इतना धन, इतनी संपत्ति और इतना वैभव मैंने देखा है की इन भारत वासियों को गुलाम बना मुश्किल है " ये बात वो 2 फरवरी 1835 को कह रहा है। आगे वो और भी कहते है "भारत में जिस वयक्ति के भी घर में मैं गया तो मैंने देखा की वहाँ सोने के सिक्कों का ढेर इस तरह से लगा रहता है जैसे की चने या गेहूं का ढेर किसानो के घर में लगा रहता है" माने सामान्य घरों से लेकर विशिष्ट घरों तक सबके पास सोने के सिक्के इतनी अधिक मात्रा में होते थे की वो ढेर लगाकर इन सिक्कों को रखते हैं और वो कहते हैं की भारत वासी कभी इन सिक्कों को गिन नहीं पाते क्योंकि गिनने की फुर्सत नहीं होती है इसलिए वो तराजू में तौल के रखते हैं किसी के घर में सौ किलो सोना होता है किसी के घर में दो सौ किलो सोना और किसी के घरों में पाँच सौ किलो सोना होता है। " इस तरह हमारे भारत के

घरों में सोने का भंडार भरा रहता था।

" I have traveled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have seen in the country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would conquer this country"

Source Link :
https://en.wikiquote.org/wiki/Talk:Thomas_Babington_Macaulay,_1st_Baron_Macaulay
https://www.youtube.com/watch?v=gruD091SorU

II. **<u>विलियम डिग्बी</u>** (1849–1904) : ये ब्रिटैन के इतिहासकार थे जो इस बात के लिए जाने जाते थे की बिना प्रमाण के ये कुछ भी नहीं कहते। विलियम डिग्बी ने भारत के ऊपर एक पुस्तक लिखी है जिसमे उन्हों ने कहा है की अंग्रज़ों के पहले का भारत विश्व का सर्व संपन्न कृषि प्रधान देश ही नहीं बल्कि एक सर्व श्रेष्ठ औद्योगिक और व्यापारिक देश भी था जो सर्व श्रेष्ठ था। और ये उनहोंने 17 वीं शताब्दी में कहा है मतलब आज से 3 सौ साल पहले। उनका यहभी कहना था की भारत की भूमि जितनी उपजाऊ है इतनी और किसी भी देश की नहीं है। आगे कहते है के भारत के व्यापारी इतने होशियार जितने किसी भी देश के नहीं। भारत के कारीगर जो हाँथ से कपड़ा बनाते हैं उनका बनाया हुआ कपड़ा रेशम का तथा अन्य कई वस्तुए पुरे विश्व के बाजार में बिक रही हैं और इन वस्तुओं को भारत के व्यापारी जब बेचते हैं और बदले में इन वस्तुओं के वो सोना या चाँदी की मांग करते हैं जो सारी दुनिया के दूसरे व्यापारी आसानी के साथ दूसरों को दे देते हैं। उसके बाद वो कहते हैं की भारत में उत्पादन के बाद जो बिक्री की प्रक्रिया है वो दुनिया के दूसरे बाज़ारों पर निर्भर करती है और ये वस्तुएं जब दूसरे देशों के बाज़ारों में बिकती है तो भारत में सोना और चाँदी ऐसे प्रवाहित होता है जैसे नदियों में पानी प्रवाहित होता है और जैसे भारत में नदियों का पानी महासागर में गिर जाता है वैसे ही दुनिया के नदियों का तमाम सोना चाँदी भारत में प्रवाहित होकर भारत के महासागर में गिर जाता है। और वो अपनी पुस्तम के लिखते हैं की दुनिया में सोना चाँदी आता तो है मगर एक ग्राम भी भारत से बहार जाता नहीं है इसका कारण उन्हों ने बताया है के भारत में हरेक प्रकार की वस्तु के उत्पादन होता इसलिए वो बेचते तो हैं मगर कभी खरीदते नहीं हैं। इसका अर्थ है की आज से 300 साल पहले भारत निर्यात प्रधान देश था एक भी वास्तु हम बहार से नहीं खरीदते थे।

III. **<u>फ्रांसवा पयार्ड</u>** : ये फ्रांस के इतिहास कर थे। फ्रांसवा पयार्ड ने 1711 में भारत के बारे में एक बहुत बड़ा ग्रन्थ लिखा है और उसमे उसने सैकड़ों प्रमाण दिए हैं उस ग्रन्थ में से एक प्रमाण यह है की भारत देश में मेरी जानकारी में 36 तरह के ऐसे उद्योग चलते हैं जिनमे उत्पादित होने वाली हर वास्तु विदेशों में निर्यात होती है, भारत के सभी शिल्प और उद्योग उत्पादन में सबसे उत्कृष्ट, कलापूर्ण और कीमत में सबसे सस्ते हैं सोना, चांदी लोहा इस्पात, तांबा अन्य धातुएं जवाहरात लकड़ी के सामान, मूल्यवान दुर्लभ पदार्थ, ये सब इतनी विविधता के साथ भारत में बनती हैं जिनके वर्णन का कोई अंत नहीं हो सकता। और सबसे महत्व की बात वो कह रहा है की मुझे जो प्रमाण मिले हैं उनसे यह पता चलता है की भारत का निर्यात दुनिया के बाज़ारों में पिछले 3000 वर्षों से अबादित रूप से बिना रुके हुए लगातार चल रहा है। यह बात वह 1711 में लिख रहा है।

IV. **मार्टिन** : मार्टिन जो की स्कॉटिश इतिहासकार हैं जिन्हों ने अपनी इतिहास की पुस्तक में लिखा है की ब्रिटैन के निवासी इंग्लैंड के निवासी जब बर्बर और जंगलों के निवासी की तरह जीवन बिताते रहे तब भारत में दुनिया का सबसे बेहतरीन कपड़ा बनता था और सारी दुनिया के देशों में बिकता था। मुझे ये स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं है भारत वासियों ने सारी दुनिया को कपड़ा बनाना और पहनना और पहनना सिखाया है और वो कहता है हम अंग्रेजो ने और अंग्रेजों के सहयोगी जातियों के लोगों ने भारत से ही कपड़ा बनाना सीखा है और पहनना भी सीखा है। रोमन साम्राज्य में जितने भी राजा और रानियां हुए हैं वो सभी भारत से कपड़े मंगाते रहे है, पहनते रहे हैं और उन्ही से उनका जीवन चलता रहा है।

V. **टैवर्निया** : टैवर्निया एक फ्रांसिसी इतिहास कर हैं उनका कहना था की भारत के वस्त्र इतने सुन्दर और इतने हलके हैं की हाँथ पर रखो तो ये पता ही नहीं चलता की उनका वजन कितना है। सूत की महीन कटाई मुश्किल से नज़र आती है। भारत में कलिकार, ढाका और मालवा में इतना महीन कपड़ा बनता है की पहनने वाला ऐसा लगता है की वो नग्न है। मतलब कपड़े की बुनाई इतनी बारीक़ है की अंदर का शरीर भी उसमे से दीखता है। इतनी अद्भुत बुनाई भारत के कारीगर जो हाँथ से कर सकते हैं वो दुनिया के किसी देश में कल्पना करना भी संभव नहीं है।

VI. **विलियम बर्ड** : उनका कहना है की भारत में मलमल का उत्पादन इतना विलक्षण है ये भारत के कारीगरों का कमाल है जब इस मलमल को घास पर बिछा दिया जाता है और उस पर ओस की कोई बून्द गिर जाती है तो वो दिखाई नहीं देती है क्योंकि ओस की बून्द में जितना पतला रंग होता है उतना ही हल्का वह कपड़ा होता है इसलिए ओस की बून्द और कपड़ा आपस में मिल जाते हैं हांथों से इतनी बारीक़ बुनाई भारत के कपड़ो की है भारत के कपड़ो की यह भी इतिहास रहा है की 13 - 14 मीटर का थान भी एक अंगूठी से निकाल दिया जाता था और उस थान का वजन 100 ग्राम से भी काम होता है। विलियम जी कहते हैं की उनहोंने कई थान का वजन किया और उन्हों ने पाया की कई तो 10 या 20 रत्ती के कपड़े थे (रत्ती एक वजन मापने की इकाई है जो तोला से काम होता है) I. उनका कहना है की हम अंग्रेजों ने तो कपडा बनाना भी सन 1780 के बाद शुरू किया है। भारत में तो पिछले 3000 सालों से कपड़ों का उत्पादन होता रहा है और सारी दुनिया में बिकता रहा है।

VII. **थॉमस मुनरो** : वो मद्रास में गवर्नर रहा है और लम्बे समय तक गवर्नर रहा है उस समय उसे किसी राजा ने एक शॉल भेंट में देदिया और जब मुनरो की नौकरी पूरी हो गई तो वो भारत से लन्दन चला गया लन्दन की संसद में एक दिन उसने अपना बयान दिया सन 1813 में की "मैं भारत से एक शॉल ले कर आया उस शॉल को मैं 7 वर्षों से उपयोग कररहा हूँ उसको मैंने कई बार धोया है और प्रयोग किया है मगर उसकी क्वालिटी एकदम बरक़रार है और उसमे कहीं कोई सिकुड़न नहीं हैं। मैंने पुरे यूरोप में प्रवास किया है एक भी देश ऐसा नहीं है जो भारत देश जैसी क्वालिटी की शॉल दे सके। " भारत ने अपने वस्त्र उद्योद में सारी दुनिया का दिल जीत लिया है। और भारत के वस्त्र अतुलिय और अप्रमेय मापदंड के हैं जिसमे सारे भारत वासी रोजगार पारहे हैं।

VIII. **<u>भारत की तकनिकी :</u>** उद्योगों के साथ साथ इस देश में विज्ञान और तकनिकी का भी बहुत विकास हुआ है और हमर अतीत के भारतीय विज्ञान और तकनीकी के बारे में दुनिया भर में बहुत सारे शोध कर्ताओं ने बहुत सारी पुस्तक लिखी है ऐसा ही कुछ अँगरेगज़ है जो भारत में काफी लम्बे समय तक रहे है जिनका नाम है जी.डब्लू लिटनर, थॉमस मुनरो (इन दोनों ने भारत के शिक्षा व्यवस्था में बहुत ज्यादा काम किया है), पेन्द्यु कास्ट, कैम्पमैन (इन दोनों ने भारत के विज्ञान और तकनिकी पर काम किया है) कैम्पमैन का कहना था की जिस देश में उत्पादन सबसे अधिक होता है यह तभी संभव है जब उस देश में कारखाने हो और कारखाने किसी देश में तभी संभव है जब वहां पर कोई तकनिकी हो और तकनिकी तभी संभव है जब वहाँ पर विज्ञान हो और विज्ञान किसी देश में मूल रूप से शोध के लिए अगर प्रस्तुत है तभी उसमे से तकनिकी का निर्माण होता है। उनका कहना है की भारत में तकनिकी हजारों साल से रही है तो कारखाने भी रहे होंगे तो उसके बारे में जब खोज की गई तो पता चला की 18 वीं शताब्दी तक इस देश में इतनी बेहतरीन तकनिकी रही है स्टील बनाने की जो दुनिया में कोई और कल्पना भी नहीं कर सकता। स्टील, लोहा अयस्क बनाने के टेक्नोलॉजी जो भारत में रही है वैसी दुनिया में किसी के पास नहीं है। इनका कहना है की भारत में बनाया हुआ अयस्क और लोहा सारी दुनिया में सर्व श्रेष्ठ मन जाता है। उनका कहना है की इंग्लैंड में या यूरोप में जो सबसे अच्छा लोहा है वह भारत के घटिया लोहे का मुकाबला भी नहीं करसकता। ये बात उन्हों ने सन 1842 में कहरहे है। उसके बाद जेम्स फ्रेंक्लिन धातु विशेषज्ञ है उनका कहना है भारत का स्टील यूरोप के स्टील से कई गुना अच्छा है। भारत के कारीगर स्टील को बनाने के लिए जो भाटिया स्तेमाल करते हैं वह दुनिया में कोई नहीं बना पता वह कहता है की हमने लोहा बनाना तो 1825 के बाद शुरू किया भारत में तो लोहा 10 वीं शताब्दी से ही हजारों हजारों टन में बनता रहा है और दुनिया के देशों में बिकता रहा है। वो यह कहता है की मैं 1764 में भारत से स्टील का एक नमूना ले कर आया था मैंने इंग्लैंड के सबसे बड़े विशेषज्ञ डॉ. स्कॉट को स्टील दिया था और उनको यह कहा था लन्दन रॉयल सोसाइटी की तरफ से आप इसकी जाँच कराइये तब डॉ. स्कॉट ने स्टील की जाँच के बाद कहा यह स्टील इतना अच्छा है की सर्जरी के लिए सारे उपकरण इससे बनाये जा सकते हैं जो दुनिया में किसी भी देश के पास उपलब्ध नहीं था। उन्हों ने कहा मुझे ऐसे लगता है भारत के इस स्टील को हम पानी में भी डाल के रखे तो इसमें कभी जंग नहीं लगेगा। कर्नल ए. वॉकर ने भारत के शिपिंग इंडस्ट्री में बहुत काम किया है उनका कहना है की भारत का जो अद्भुत लोहा या स्टील है ये जहाज बनाने के काम में बहुत आता है और वो कहते हैं दुनिया में जहाज बनाने कला और तकनिकी सबसे पहले भारत में ही विकसित हुई है। और दुनिया के देशों ने पानी का जहाज बनाना भारत से सीखा है और किसी भी देश में पानी का जहाज बनाने की तकनिकी उपलब्ध ही नहीं रही है। उनका कहना है की भारत इतना विशाल देश है इसमें लगभग दो लाख गाओं है इन दो लाख गांव को समुद्र के किनारे स्थापित हुआ माना जाता है इन सभी गांवों जहाज बनाने का कार्य हजारों सालों से चलता है। उनका कहना है की यदि हम अंग्रेज लोगों को जहाज खरीदना हो तो हम भारत में जाते है और वहॉ से जहाज खरीद कर लाते हैं। वो कहते है की ईस्ट इंडिया के जितने भी पानी के जहाज दुनिया में चल रहे है ये सारे के सारे भारत की स्टील से बने हुए है ये बात कहते हुए मुझे शर्म आती है की हम इतनी अच्छी स्टील बनाना नहीं शुरू कर पाए हैं फिर वो कहते है की भारत का कोई ऐसा पानी का जहाज जो 50 साल पानी चल चूका हो उसको हम खरीद कर ईस्ट इंडिया की कंपनी में लगाए तो जहाज 20 - 25

साल और चल जाता है इतनी बजबूत पानी के जहाज बनाने की कला और तकनिकी भारत के कारीगरों के हाँथ में है और फिर वो कहते हैं की हम जितने धन में एक नया पानी का जहाज बनाते है उतने ही धन में भारत वासी चार नए पानी का जहाज बना लेते हैं। फिर वो अंत में कहता है की हम भारत में पुराने पानी के जहाज ख़रीदे और उसको ईस्ट इंडिया के सेवा में लगाए यही हमारे लिए अच्छा है नया जहाज बनाकर हम ईस्ट इंडिया कंपनी को दिवालिया नहीं कर सकते हैं उसके पैसे बर्बाद नहीं कर सकते हैं और इसी तरह से वो कहते है की भारत में टेक्नोलॉजी के आधार पर ईंट बनती है, ईंट से ईंट को जोड़ने का चुना बनता है और उसी तरह से भारत में 36 दूसरे लटकोलॉजिकल इंडस्ट्रीज है ये सभी उद्योगों में भारत दुनिया में सबसे आगे है इसलिए हमें भारत से व्यापर करके ये सब तकनिकी लेनी है और इस तकनिकी को इंग्लैंड में लाकर फिर से उत्पादित करना है पुनरुत्पादित करना है।

3. <u>भारत की शिक्षा व्यवस्था</u> : सभी तकनीकी या विज्ञान की विधाओं का मूल आधार शिक्षा होती है। एक जर्मन दार्शनिक हुआ जिसका नाम मैक्स म्युलर था इन्होने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर सबसे जायदा शोध किया है की मैं भारत की शिक्षा व्यवस्था से इतना प्रभावित हूँ शायद ही किसी दुनिया में इतनी सुन्दर शिक्षा वयवस्था होगी जो भारत में है और भारत के बंगाल राज्य के बारे में मैक्स म्युलर कह रहा है की मेरी जानकारी में 80000 से अधिक गुरुकुल पुरे बंगाल राज्य में सफलता के साथ 1000 से अधिक सालों से चल रहे हैं। गुरुकुल की गिनती मैक्स म्युलर ने खुद करवाई थी। इसी तरह एक और अंग्रेज विद्यवाक है जिनका नाम लुबलो था वो यहाँ 16 - 17 साल तक रहे और शिक्षा व्यवस्था पर सर्वेक्षण किया भारत में एक भी गॉव में नहीं है जहाँ गुरुकुल न हो। उनका कहना था भारत में एक भी ऐसा बच्चा नहीं है जो गुरुकुल में न जाता हो ये बात उन्हों ने 18 वीं शताब्दी में कही थी। जी. डब्लू लिटनेर कहते हैं भारत के उत्तर इलाके (पाकिस्तान, पंजाब, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड) का पूरा सर्वेक्षण किया है और उनके अनुसार भारत में 200 लोगों पर एक गुरुकुल चलता है। ये रिपोर्ट उन्होंने 1822 में दी थी और इसी तरह थॉमस मुनरो की रिपोर्ट है उनका कहना है की दक्षिण भारत में 400 लोगों पर कम से कम एक गुरुकुल है। उत्तर और दक्षिण के गणना के अनुसार यदि हम प्रतिशत निकले तो 300 लोगों पर एक गुरुकुल निकलता है जिस समय यह सर्वेक्षण निकला है उस समय भारत की जनसँख्या 20 करोड़ थी। 20 करोड़ जनसँख्या के अनुसार यदि हम गुरुकुल की संख्या निकले तो 732000 गुरुकुल पुरे भारत में निकलते है। अंग्रेज हर 10 सालों में भारत के जनसँख्या की गणना करते थे उनके अनुसार भारत में 732000 गॉव। इसका मतलब यह है की हर गॉव में एक गुरुकुल होता था। और हर गॉव में पढ़ने की उचित व्यवस्था थी। जी. डब्लू लिटनेर के अनुसार 1868 पुरे यूरोप में एक भी विद्यालय नहीं था। उसके आगे वो कहते है की भारत वासी 97% शिक्षित थे। भारत में जितने भी गुरुकुल चल रहे थे उसके लिए किसी भी राजा से दान या अनुदान नहीं लिया जाता था ये गुरुकुल समाज के द्वारा चलाया जाता था समाज भूमि देता था और उसमे कला का स्तेमाल करके गुरुकुल स्वयं चलित था। गुरुकुल में शिष्य के आने का समय सूर्य उदय से लेकर सूर्य अस्त तक रहता था और पढ़ने के 18 विषय (वैदिक गणित, खगोल शास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, धातु विज्ञान, रसायन विज्ञान इत्यादि)। गुरुकुल में किसी भी शिष्य का दाखिला 5 साल 5 महीने और 5 दिन का होते ही हो जाता था और लगातार14 वर्षों तक पढता था। 14 वर्ष के शिक्षा के बाद जब बच्चा निकलता था तो मानव बनकर निकलता था, वो परिवार समाज और देश की जिम्मेदारी उठा सकता था। इतना ही नहीं गुरुकुल में सभी केलिए शिक्षा सामान थी। चाहे राजा का बच्चा हो या दूसरे अन्य का सभी के लिए शिक्षा

सामान थी। सन 1822 में मद्रास प्रान्त में (आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल और कर्णाटक का कुछ हिस्सा) 11575 महाविद्यालय और 109 विश्वविद्यालय रहे हैं। ऐसे ही मुंबई, पंजाब, उत्तर में फोरंटीअर है ये चारो स्थान को मिला दिया जाये तो भारत में लगभग 14000 से ऊपर महाविद्यालय रहे है और 500 से ऊपर विश्वविद्यालय रहे हैं। जो की आज के समय में भी नहीं है वो 1822 में ही था। यूरोप और इंग्लैंड में शिक्षा केवल राजाओं के बच्चे के लिए होते थे जो की महलो में होती थी। अरस्तु और अगस्तु यूनानी दार्शनिक थे जिन्होंने कहा की शिक्षा सबके लिए नहीं होनी चाहिए केवल राजा और उनके अधिकारीयों के लिए होनी चाहिए। मगर भारत में सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था थी ऐसी अद्भुत शिक्षा व्यवस्था पुरे विश्व में और कहीं भी नहीं थी।

4. **<u>भारत की कृषि व्यवस्था</u>** : हमारे अतीत में कृषि व्यवस्था के बारे में जिन अंग्रेजों ने बहुत ज्यादा शोध किया है उनमे से लिस्टर नाम का एक अंग्रेज है वो ये कहता है की भारत में कृषि उत्पादन सर्वोच्च है और अंग्रेजो के संसद में भाषण देते हुए वो बोले की भारत में एक एकड़ में सामान्य रूप से 56 कुंटल धान पैदा होता है और वो ये कह रहा की यह उत्पादन औसतन है। भारत में तो कुछ इलाके ऐसे भी है जहाँ एक एकड़ में 70 से 75 कुंटल धान भी होता है। वो गन्ने के बारे में बताते है की 120 मीटर टन गन्ना सामान्य रूप से पैदा होता है। भारत में कपास का उत्पादन पुरे विश्व में सबसे ज्यादा है। फसलों की विविधता सबसे ज्यादा दुनिया में भारत में ही है। एक अंग्रेज का कहना है की भारत में धान के कम से कम एक लाख से भी अधिक प्रजाति के बीज है और यह बात 1822 में कही जा रही है। फिर अंग्रेज कहते है की भारत में दुनिया का सबसे पहला हल बना और सारी दुनिया में हल बनाना और उसको चलना भारत से ही सीखा है। हल के आलावा खुरपी, खुरपा, हसिया, हथौड़ा, बेल्ची, कुदाली, फावड़ा ये सब दुनिया में बाद में आयी है उनसे पहले भारत में इसका उपयोग होता रहा है और बीज को एक पंक्ति में बोन की जो कला है वो हजारो साल पहले भारत में विकसित हुई है। अगर अंग्रेजो की बात की जाये तो 1750 में विदेशी भारत में आये और खेती सिखने के बाद उन्हों ने खेती का विकास विदेश में किया। उससे पहले वो जंगल में होने वाले उत्पादन या पशुओं के मांस से अपना जीवन चलाया करते थे। मगर भारत के पास तब धान के एक लाख से भी अधिक प्रजाति होती थी। ऐसी बेहतरीन कृषि हमारे भारत में थी।

5. **<u>भारत का चिकत्सा विज्ञान</u>** : इस विज्ञान हजारो किसम की बीमारियों की जड़ीबूटियां और सारी की सारी सर्जरी की विद्या पूरी दुनिया को यही से गयी है और अभी के जो पुराने दस्तावेज मिलते है वो बताते हैं के भारत में हिमाचल प्रदेश और पूरा महाराष्ट्र, कनाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल ये सात आठ राज्य थे जहाँ सर्जरी के सबसे बड़े शोध केंद्र चला करते थे और एक दो नहीं हजारो हजारो सर्जरी के विशेषज्ञ इन केंद्रों में पढ़ कर तैयार होते थे और समाज की सेवा करते थे। जब दुनिया में कोई नहीं जनता था आँख ऑपरेशन भारत में हुआ है और जिसको हम राइनो प्लास्टी कहते है सर्जरी की सबसे आधुनिकतम विद्या उसका सबसे पहला परिक्षण भारत में हुआ था। इंग्लैंड की रॉयल सोसाइटी ऑफ़ सर्जन है वो अपने इतिहास में लिखते है की हमने सर्जरी भारत से सीखी है और उसके बाद पुरे यूरोप को हमने सर्जरी सिखाई है इतना विशाल है भारत के चिकित्सा का इतिहास।

6. **<u>विश्व का एकमात्र "स्वाभाविक" राष्ट्र भारत :</u>**अक्सर आपने कुछ "कथित इतिहासकारों" के मुँह से यह सुना होगा, कि "भारत तो कभी एक राष्ट्र था ही नहीं...", "यह

तो टुकड़ों में बंटा हुआ एक भूभाग है, जिसे जबरन राष्ट्रवाद के नाम पर एक रखने का प्रयास किया जाता है...".

जब JNU में "खा-लीद" जैसे लोग भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशाअल्लाह जैसे नारे लगाते हैं, तो उसके पीछे इन्हीं "नकली इतिहासकारों" (Fake Historians of India) का दिमाग होता है. अंग्रजों, मुस्लिम लीग तथा काँग्रेस ने अपनी तरफ से पूरा प्रयास करके 1947 में आखिरकार भारत के कुछ टुकड़े कर दिए, परन्तु वास्तविकता यही है कि भारत सदैव "एक स्वाभाविक राष्ट्र" था, "एक स्वाभाविक राष्ट्र" (Natural Nation State) है, और इसके कई ऐतिहासिक प्रमाण भी हैं. यह आज हमें पता है कि भारत का वर्तमान स्वरूप 15 अगस्त 1947 की देन है। आज अखंड भारत की कल्पना में हम केवल पाकिस्तान और बांग्लादेश को जोड़ते हैं। परंतु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि एक समय पर बर्मा (Myanmar), श्रीलंका (Sri Lanka), अफगानिस्तान (Afghanistan) आदि भी भारत के ही भाग रहे हैं। चलिए थोड़ी देर के लिए "पालतू बुद्धिपिशाचों" (Distorted History of India by Paid Historians) की बात को मानकर, यदि हम केवल 15 अगस्त 1947 के बाद के भारत को ही लें... तो भी इस समय विश्व में केवल छह नेशन स्टेट या राष्ट्र ऐसे हैं जो आकार में भारत से बड़े हैं और ये छहों के छहों "अस्वाभाविक राष्ट्र" हैं। आईये एक एक कर सभी पर विचार करते हैं।

पहला राष्ट्र है आस्ट्रेलिया। आस्ट्रेलिया क्या है? उसके केवल तटीय इलाकों में लोग बसे हैं। दिल्ली के बराबर आबादी है। इस नाम का भी कोई इतिहास नहीं है। यह बीसवीं शताब्दी में बना एक अस्वाभाविक राष्ट्र है। दूसरा बड़ा राष्ट्र है यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका। अमेरिका तो इस इलाके का नाम भी नहीं है। आज भी यूनाइटेड स्टेट्स किसी अमेरिगो नामक आदमी के नाम से जाना जाता है। इसे वेस्ट इंडिया ही कह दिया होता या वेस्ट इंडियन सबकोंटिनेंट ही कह दिया होता। यदि आपको किसी स्थान को उनके मूल नाम से नहीं बुलाना है, तो कुछ पहचाना सा नाम तो रखना चाहिए था। किसी को पता ही नहीं है कि अमेरिगो कौन था। अमेरिका का मूल नाम तो टर्टल कोंटीनेंट यानी कि कच्छप महाद्वीप है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तो उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी में अस्तित्व में आया है। इसके टूटने का रुदन सैमुएल हंटिंगटन अपनी पुस्तक क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन में कर रहे हैं। भारत में इस पर काफी बहस चल रही है, परंतु बहस करने वालों ने ठीक से उसकी प्रस्तावना तक नहीं पढ़ी है। प्रस्तावना में ही वह कह रहा है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका टूट रहा है। क्यों? क्योंकि उसके नीचे मैक्सिको उसे धक्का दे रहा है। मैक्सिको वहाँ का मूल है। वे वहाँ के मूलनिवासी हैं। उनका अपना क्षेत्र है। दीवार बनाने से क्या होगा? दीवार तो चीन ने भी बनाई थी। फिर भी उसे मंगोल, हूण, शक, मांचू सभी पराजित करते रहे।

इस कड़ी में तीसरा राष्ट्र है कैनेडा। नक़्शे में संयुक्त राष्ट्र के ऊपर कैनेडा है। यहाँ कुछ फ्रांसीसी लोग हैं, कुछ अंग्रेज हैं और इन्होंने एक राष्ट्र बना लिया। यहां का पूरा इतिहास खंगाल डालिये, कैनेडा नाम नहीं मिलेगा। अस्वाभाविक राष्ट्र है। चौथा राष्ट्र है ब्राजील। यह नाम भी आपको इतिहास में नहीं मिलेगा। उन्नीसवीं शताब्दी तक ब्राजील का कोई अस्तित्व नहीं है। यह संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से भगाए गए कुछेक फ्रांसीसी, अंग्रेज और जर्मन लोगों की रचना है। ये कृत्रिम सीमाएं हैं।

पाँचवां बड़ा राष्ट्र है जिसे हम पहले यूएसएसआर के नाम से जानते रहे हैं सोवियत संघ। उससे टूट कर सोलह राष्ट्र अलग हो गए, अब बचा है रूस। रूस के तीन चौथाई हिस्से के बारे में उसे स्वयं ही उन्नीसवीं शताब्दी तक पता नहीं था। यह हिस्सा था रूस का एशियायी हिस्सा। यह तो प्राचीन काल से भारत का हिस्सा रहा है। साइबेरिया का उच्चारण बदलें तो सिबिरिया होता है यानी शिविर का स्थान। इतालवी लोग स्थानों को स्त्रीलिंग से बुलाते हैं। इसलिए शिविर शिविरिया बन गया जिसे हम आज साईबेरिया कहते हैं। यह रूस का हिस्सा नहीं था। यह हिस्सा रहा है भरतवंशी शकों का,

भरतवंशी मंगोलों का। इसे आप नक्शों में आसानी से देख सकते हैं। कब तक रहा है? उन्नीसवीं शताब्दी तक। यह कोई प्राचीन इतिहास नहीं है, जिसे ढूंढना पड़े। यह आधुनिक इतिहास है। फ्रांसीसी क्रांति या पुनर्जागरण के काल के बाद के इतिहास को आधुनिक काल माना जाता है। परंतु यह तो उससे भी कहीं नई घटना है। उन्नीसवीं शताब्दी तक रूस इस इलाके को जानता भी नहीं है। वह स्वयं उसे क्या बतलाता है, इसे देख लीजिए। 18वीं शताब्दी तक रूस अपनी सीमाएं क्या बता रहा है, देख लीजिए। जैसे हम कहते हैं न कि हमारी सीमाएं गांधार तक रही हैं, रूस अपनी सीमाओं के बारे में क्या कहता है? इसलिए यह भी स्वाभाविक राष्ट्र नहीं है। कृत्रिम देश है। शीघ्र ही अपनी स्वाभाविक सीमाओं में आ जाएगा। इसकी स्वाभाविक सीमाएं क्या हैं? आज के यूक्रेन में एक स्थान है कीव। कीव के उत्तर में एक नदी चलती है। उस नदी के आस-पास का इलाका ही वास्तविक रूस है। और कीव सहित यूक्रेन आज रूस से बाहर है।

पाँच विशाल देशों के बाद अगला देश है चीन। चीन का वर्तमान आकार तो पंडित नेहरू का दिया हुआ है। तिब्बत तो कभी उसका था ही नहीं। जिसे भारत के यूरोपीय चश्मेवाले बुद्धिजीवी पूर्वी तूर्कीस्तान या फिर चीनी तूर्कीस्तान कहते हैं, वह भी उसका नहीं रहा है। इसे भी वर्ष 1949 में जवाहरलाल नेहरू ने चीन के लिए छोड़ दिया। यह तो महाकाल के उपासकों का स्थान रहा है। महाकाल के उपासक रहे महान मंगोल सम्राट कुबलाई खाँ ने चीन को पराजित किया था। चीन में मंगोलिया और मंचूरिया का हिस्सा मिला हुआ है। ये दोनों इलाके साम्यवादी चीन का हिस्सा 1949 के बाद रूस और चीन की सहमति से बने। रूस में लेनिन, स्टालिन जैसे कुछ तानाशाह लोग सत्ता में आ गए थे। उन्हें दुनिया भर में मित्र चाहिए था। कहा जाता है दुनिया भर में परंतु उसका वास्तविक अर्थ होता है यूरेशिया में। शेष चारों महादेश तो गिनती में होते ही नहीं हैं। तो साम्यवादी रूस को केवल एक सहयोगी मिला माओ के नेतृत्व वाला साम्यवादी चीन। साम्यवादी रूस ने मंगोलिया और मंचुरिया को चीन का हिस्सा मान लिया।

दूसरा विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की रचना हुई जिसमें यूएसएसआर स्थायी सदस्य था। दूसरा स्थायी सदस्य बनने का प्रस्ताव भारत को मिला था, परंतु जवाहरलाल नेहरू ने कूटनीतिक मूर्खता में वह प्रस्ताव चीन को दिलवा दिया। इन दोनों साम्यवादी देशों ने मिल कर बंदरबाँट की। परंतु आज चीन टूट रहा है। तीन हिस्सों में। यह अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट है। मंचुरिया और मंगोलिया, दोनों ही चीन को अपने कब्जे में रखने वाले देश हैं। वर्ष 1914 तक मंचुरिया का गुलाम रहा है। यह तो हमें कहीं पढ़ाया नहीं जाता कि तेरहवीं शताब्दी से लेकर वर्ष 1914 तक चीन भरतवंशी मंगोलों तथा मंचुओं का गुलाम रहा है।

हमने देखा कि 15 अगस्त 1947 के भारत से दुनिया के छह नेशन-स्टेटों का क्षेत्रफल अधिक है और वे छहों अस्वाभाविक राष्ट्र हैं और ये छहों अतिशीघ्र टूट जाएंगे। आज के दिन भी भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से दुनिया का सबसे बड़ा स्वाभाविक राष्ट्र है। हम जानते हैं कि पाकिस्तान और बांग्लादेश का जन्म कैसे हुआ है। अक्सर यह कहा जाता है कि हम पड़ोसी रोज नहीं बदल सकते। परंतु हमने हर रोज पड़ोसी ही तो बदला है। पाकिस्तान हमारा पड़ोसी कब था, वह तो हमारा घर था। हमारा पड़ोसी अफगानिस्तान भी कब था, वह भी हमारा घर ही था। चीन भी आपका पड़ोसी कब था, नेपाल कब था हमारा पड़ोसी? हमने तो घरवालों को ही पड़ोसी बना दिया है।

याद करें कि युद्ध अपराध के कारण संयुक्त राष्ट्र ने ट्रीटी ऑफ वर्साई के कारण जर्मनी के दो हिस्से कर दिए, वह जर्मनी एक हो गया। अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत एक हो गया। ऐसे में पाकिस्तान और भारत क्यों एक नहीं हो सकते? भारत का नक्शा देखिए, नीचे पेनिनसुलर भारत है, परंतु ऊपर विराट हिमालय है। अफगानिस्तान तो दुर्योधन का ननिहाल गाँधार ही तो था। शकुनि यहीं का था,

और निकट इतिहास में महाराजा रणजीत सिंह का राज्य गाँधार तक था। वर्ष 1905-10 में पंडित दीनदयालू शर्मा काबुल और कांधार में संस्कृत पर भाषण देने जाते हैं, सनातनधर्मरक्षिणी और गौरक्षिणी सभाएं करते हैं। गाँधी जी के जाने पर वायसराय खड़ा नहीं होता, परंतु पंडित दीनदयालू शर्मा से मिलने के लिए इंग्लैंड का राजा भी खड़ा होता है। वर्ष 1910 में अफगानिस्तान नाम का कोई देश था ही नहीं। वर्ष 1922 में अंग्रेजों ने इसे बनाया रूस और उनके ब्रिटिश इंडिया के बीच बफर स्टेट के रूप में।

महाभारत में राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में ढेर सारे राजा आते हैं। वे राजा जो युधिष्ठिर को कर देते हैं, वे सभी आते हैं। जो प्रदेश भारत के चक्रवर्ती सम्राट को कर देते हैं, वे भारत ही कहलाएंगे न? यह भारत कहाँ से कहाँ तक है? यवन प्रांत जिसे आज ग्रीक कहते हैं। परंतु ग्रीक स्वयं को ग्रीक नहीं कहते। वे स्वयं को एलवंशीय कहते हैं। उनके देश का नाम आज भी ग्रीस नहीं एलेनिक रिपब्लिक है। एलवंश मतलब बुद्ध और इला की संतान। यह भारतीय ग्रंथों में मिल जाएंगे। राजसूय यज्ञ के बाद युद्ध के वर्णन में स्पष्ट वर्णन है कि कौन-कौन सी सेनाएं पांडवों के साथ हैं और कौन-कौन कौरवों के साथ। वहाँ 250 जनपदों का उल्लेख है जिसमें दरद, काम्बोज, गाँधार, यवन, बाह्लीक, शक सभी नाम आते हैं। जिसे आज हम इस्लामिक देश के रूप में जानते हैं, यह पूरा इलाका शिव. ब्रह्मा, दूर्गा का पूजक सनातन धर्मावलम्बी चक्रवर्ती भारतीय सम्राट के जनपद रहे हैं।

यह एक रोचक सत्य है कि अंग्रेजों को वर्ष 1910 तक पता नहीं था कि अशोक, देवानां पियदासी कौन है? वे महाभारत को नकार देते हैं। यदि हम महाभारत को गलत भी मान लें तो वायुपुराण, विष्णुपुराण, रामायण, कालीदास का रघुवंश, पाणिनी के अष्टाध्यायी आदि में किए गए भारतसंबंधी वर्णनों को देखें। यदि इन भारतीय संदर्भों से हमारी तुष्टि न हो तो फिर एक मुस्लिम लेखक का संदर्भ देखिए। अल बिरुनी का भारत पुस्तक को पढ़िए। अल बिरुनी की पुस्तक में भारत की सीमाओं और लोगों का वर्णन है। इसमें एक वर्णन है कि भारत के लोगों ने चारों दिशाओं में चार नगरों से आकाशीय गणना की है। उसकी आज तो जाँच की जा सकती है। वह कह रहा है कि इन चारों स्थानों पर भारत के लोग रहते हैं। ये चारों स्थान हैं – उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव, और पूरब तथा पश्चिम के शहरों का अक्षांश और देशांतर गणना दी हुई है। अल बिरुनी का कहना है कि ये गणनाएं तभी सही हो सकती हैं, जब आप वहाँ लगातार जा रहे हों।

पिरी राइस का नक्शा दुनिया का एक नक्शा है। यह फटी-पुरानी अवस्था में किसी विद्वान को मिला। उसने उसे देखा। उस नक्शे की विशेषता है कि उसमें दक्षिणी ध्रुव दिखाया गया है। दक्षिणी ध्रुव पर दो किलोमीटर मोटी बर्फ की परत जमी हुई है। वर्ष 1966 में इंग्लैंड और स्वीडेन ने एक सिस्मोलोजिकल सर्वेक्षण किया और उसके आधार पर दक्षिणी ध्रुव का नक्शा बनाया। यह नक्शा पिरी राइस के नक्शे के एकदम समान है। तो प्रश्न उठा कि पिरी राइस का नक्शा इतना पहले कैसे बना? उस विद्वान ने उस नक्शे को अमेरिका के एयर फोर्स के टेक्नीकल डिविजन के स्क्वैड्रन लीडर को भेजा। स्क्वैड्रन लीडर ने उत्तर लिखा कि नक्शा तो सही है, परंतु उस समय जब बर्फ नहीं थी, जब जानने के लिए जो यंत्र और तकनीकी ज्ञान चाहिए, वह नहीं रहा होगा। वह कहता है कि इस दो किलोमीटर की बर्फ की तह जमने में कई दशक लाख वर्ष लगे। यह नक्शा लगभग तबका बना हुआ है। यह उद्धरण मैप्स ऑफ एनशिएंट सी किंग्स के हैं। पिरी राइस तूर्क का डकैत था। तूर्कों को आमतौर पर हम मुसलमान मान लेते हैं। परंतु ध्यान दें कि ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी तक इसे यूरोप अनातोलिया बोलते थे। तूर्क लोग जब वर्तमान तूर्किस्तान पहुँचे, तब उसका नाम तूर्किस्तान रखा। वे वास्तव में दूर्गा और शिव के उपासक रहे हैं।

पिरी राइस लिख रहा है कि उसने यह नक्शा पुराने नक्शों के आधार पर बनाया है। अमेरिकन नक्शा

बनाने वाले विद्वान लिखते हैं कि इस रास्ते पर लगातार समुद्री यात्राएं होती रही हैं। दक्षिणी ध्रुव पर यात्राएं हो रही हैं व्यापारिक और सैन्य कारणों से। अलग-अलग हिमयुगों में नक्शे बनाए गए हैं। इसे बनाने वाले और यात्रा करने वाले वे लोग हैं, जिनके नाम से एक महासागर का नाम ही रख दिया गया है। हिंद महासागर। दूसरे किसी भी देश के नाम पर महासागर का नाम नहीं रखा गया है, क्यों? इस हिंद महासागर में हिंद का तटीय प्रदेश छोटा सा ही है। फिर भी इसका नाम हिंद महासागर इसलिए है कि इसमें भारतीय ऐसे चलते हैं जैसे कनॉट प्लेस में दिल्ली पुलिस और जनता चलती है। इसी प्रकार हिंद महासागर में भारतीय व्यापारी और उनकी रक्षा के लिए चतुर्गिणी सेना चलती है। चतुर्गिणी में चौथा अंग कौन है? चार प्रकार की सेना है नौसेना। इसका प्रमाण है अजंता में बड़े-बड़े जहाजों का चित्रण है जिसमें हाथी-घोड़े और हथियार लदे होते हैं। ऐसे ही भित्तिचित्र भारत के उत्तर में स्थित पाँच स्थानों में भी मिले हैं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि भारत एक स्वाभाविक राष्ट्र है और अत्यंत विशाल राष्ट्र रहा है। इसके ढेरों प्रमाण मिलते हैं। इस लेख में तो कुछ ही प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं।

7. <u>किताबों में इतिहास :</u> बाबर ने मुश्किल से कोई 4 वर्ष राज किया। हुमायूं को ठोक पीटकर भगा दिया। मुग़ल साम्राज्य की नींव अकबर ने डाली और जहाँगीर, शाहजहाँ से होते हुए औरंगजेब आते आते उखड़ गया।

कुल 100 वर्ष (अकबर 1556ई. से औरंगजेब 1658ई. तक) के समय के स्थिर शासन को मुग़ल काल नाम से इतिहास में एक पूरे पार्ट की तरह पढ़ाया जाता है....

मानो सृष्टि आरम्भ से आजतक के कालखण्ड में तीन भाग कर बीच के मध्यकाल तक इन्हीं का राज रहा....!

अब इस स्थिर (?) शासन की तीन चार पीढ़ी के लिए कई किताबें, पाठ्यक्रम, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगिता परीक्षाओं में प्रश्न, विज्ञापनों में गीत, ...इतना हल्ला मचा रखा है, मानो पूरा मध्ययुग इन्हीं 100 वर्षों के इर्द गिर्द ही है।

जबकि उक्त समय में मेवाड़ इनके पास नहीं था। दक्षिण और पूर्व भी एक सपना ही था।

अब जरा विचार करें..... क्या भारत में अन्य तीन चार पीढ़ी और शताधिक वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाले वंशों को इतना महत्त्व या स्थान मिला है ?

अकेला विजयनगर साम्राज्य ही 300 वर्ष तक टिका रहा। हीरे माणिक्य की हम्पी नगर में मण्डियां लगती थीं।महाभारत युद्ध के बाद 1006 वर्ष तक जरासन्ध वंश के 22 राजाओं ने । 5 प्रद्योत वंश के राजाओं ने 138 वर्ष , 10 शैशुनागों ने 360 वर्षों तक , 9 नन्दों ने 100 वर्षों तक , 12 मौर्यों ने 316 वर्ष तक , 10 शुंगों ने 300 वर्ष तक , 4 कण्वों ने 85 वर्षों तक , 33 आंध्रों ने 506 वर्ष तक , 7 गुप्तों ने 245 वर्ष तक राज्य किया । फिर विक्रमादित्य ने 100 वर्षों तक राज्य किया था । इतने महान् सम्राट होने पर भी भारत के इतिहास में गुमनाम कर दिए गए।

उनका वर्णन करते समय इतिहासकारों को मुँह का कैंसर हो जाता है। सामान्य ज्ञान की किताबों में पन्ने कम पड़ जाते है। पाठ्यक्रम के पृष्ठ सिकुड़ जाते है। कोचिंग वालों की नानी मर जाती है। प्रतियोगी परीक्षकों के हृदय पर हल चल जाते हैं।

वामपंथी इतिहासकारों ने नेहरूवाद का मल भक्षण कर, जो उल्टियाँ की उसे ज्ञान समझ चाटने वाले चाटुकारों...! तुम्हे धिक्कार है !!!

यह सब कैसे और किस उद्देश्य से किया गया ये अभी तक हम ठीक से समझ नहीं पाए हैं और ना हम

समझने का प्रयास कर रहे हैं।

8. एक प्रसिद्ध स्विस लेखक बेजोरन लैंड्सट्रोम, "जसने पुरातन मिस्रियों से लेकर अमेरिका की खोज तक 3000 वर्ष का साहसी यात्राओं और महान खोजकर्ताओं की गाथा का अध्ययन किया, अपनी पुस्तक 'भारत की खोज में लिखा है, मार्ग और साधन कई थे, परन्तु उद्देश्य सदा एक ही रहा - प्रसिद्ध भारत भूमि पर पहुँचने का, जो देश सोना, चांदी, कीमती मणियों और रत्नों, मोहक खाद्यों, मसालों, कपड़ों से लबालब भरा पड़ा था। बेजोरने से ही मिलते - जुलते अनुभव अनेक चिंतकों, शोधकों तथा हीगल, गैल्वैनो, मार्कोपोलो अदि हैं।

9. ब्रिटिश वैज्ञानिक सर बर्नाड लोवेल की पुस्तक 'द ओरिजिन्स एंड इंटरनल इकोनॉमिक्स ऑफ़ स्पेश एक्स्प्लेनेशन' में बताई जिसमे वे लिखते हैं की विलियम कोनग्रेव्ह ने टीपू की सेना द्वारा प्रयुक्त रॉकेट का अध्ययन किया उसमे कुछ सुधर कर 1805 में तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान मंत्री विलियम पिट तथा युद्ध सचिव क्रेसर लीड के सामने प्रस्तुत किया। वे इसे देख पर प्रभावित हुए और उन्हों ने इसे सेना में सम्मलित करने की अनुमति देदी तथा 1806 में नेपोलियन के साथ वाउलांग हरबार युद्ध तथा 1807 में कोपेन हेगन पर किये आक्रमण में उनका प्रयोग किया।

10. एक समय में हमारे देश में भौतिक समृद्धि का माध्यम था - कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य अर्थात पारिवारिक और सामजिक धरातल पर समृद्धि का आधार खेती और खेती के आधारभूत गौवंश तथा व्यापार थे। हजारों वर्षों तक यही समाज जीवन में समृद्धि के माध्यम रहे। सम्पूर्ण विश्व में भारत की कृषि व समृद्ध वयवसाय की मान्यता थी। सम्पूर्ण विश्व में भारत का व्यापर फैला हुआ था। बहुत पुराने काल का वर्णन छोड़ में दे तो 1750 तक विश्व के उत्पादन के मामलों में भारत की क्या स्तिथि थी इसका हम विचार करें तो सैम्युअल हंटिंग्टन द्वारा लिखित पुस्तक "दी क्लैश ऑफ़ सिविलिसशन" में जो तुलनात्मक चार्ट दिया है, उससे यह स्पष्ट होता है की 1750 में भारत का उत्पादन समूचे यूरोप में और सोवियत संघ से अधिक था।

11. **<u>Glmps of history of Sikh</u>**

21 से 27 दिसम्बर सिक्ख इतिहास में ही नही देश के इतिहास में बहुत बड़ी शहादत का दिन है 22 दिसम्बर गुरु गोबिंद सिंह जी 40 सिक्ख फौजों के साथ चमकौर की गड़ी एक कच्चे किले में 10 लाख मुगल सैनिको से मुकाबला करते है एक एक सिक्ख 10 लाख मुगलिया फौजों पर भारी पड़ता है गुरु गोबिंद सिंह जी के बड़े बेटे जिनकी उम्र मात्र 17 वर्ष की है साहेबजादा अजित सिंह ने मुगल फौजों में भारी तबाही की सैकड़ो मुगलों को मौत के घाट उतारा लेकिन 10 लाख मुगलिया फौजों के सामने साहेबजादा अजित सिंह शहीदी को प्राप्त करते है छोटे साहेबजादे जिनकी उम्र मात्र 14 वर्ष की है बड़े भाई की सहादत को देखते हुए पिता गुरु गोबिंद सिंह जी से युद्ध के मैदान में जाने की अनुमति मांगी एक पिता ने अपने हाथो से पुत्र को सजाकर युद्ध के मैदान में भेजा लाखो मुगलों पर भारी साहेबजादा जुझार सिंह ने युद्ध के मैदान में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए और लड़ते लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए ... अपने दोनों लाल सहादत पर पिता गुरु गोबिंद सिंह जी के यह वाक्य चरितार्थ हुए...
मेरा मुझमे कुछ नही जो कुछ है सो तेरा
तेरा तुझको सौप के क्या लागे है मेरा
गुरु गोबिंद सिंह जी के दोनों छोटे बेटे साहेबजादा जोरावर सिंह साहेबजादा फ़तेह सिंह जिनकी उम्र 5 और 7 वर्ष की थी अपनी दादी माता गुजरी जी के साथ युद्ध के दौरान पिता गुरु गोबिंद सिंह जी से बिछड़ जाते है रसोइया गंगू ब्राह्मण की नमक हरामी की वजह से इनाम के लालच में सरहंद के नवाब वजीर खान के पास बंदी बना लिए जाते है दोनों छोटे छोटे मासूम बच्चो को इस्लाम कबूल करवाने तरह तरह की तकलीफे दी जाती है माता गुजरी

जी और छोटे छोटे माता जी के पोतो को किले के ठंडे बुर्ज में कैद कर रखा जाता है दिसम्बर का महिना खून जमा देने वाली ठंड उस पर किले का वह ठंडा बुर्ज जहा सामान्य दिनों में कपकपा देने वाली ठंड पडती है दादी अपने पोतो को अपनी ममता की छाव में सुलाती है 27 दिसम्बर का वह दिन वजीर खान के दरबार में दोनों छोटे साहिबजादों को हाजिर करने का फरमान जारी होता है दादी अपने पोतो को सजा कर माथे पर कलगी लगाकर भेजती है कचहरी में घुसते ही नवाब के समक्ष शीश झुकाना है। जो सिपाही साथ जा रहे थे वे पहले सर झुका कर खिड़की के द्वारा अन्दर दाखिल हुए। उनके पीछे साहबज़ादे थे। उन्होंने खिड़की में पहले पैर आगे किये और फिर सिर निकाला। थानेदार ने बच्चों को समझाया कि वे नवाब के दरबार में झुककर सलाम करें।किन्तु बच्चों ने इसके विपरीत उत्तर दिया और कहा: यह सिर हमने अपने पिता गुरू गोबिन्द सिंघ के हवाले किया हुआ है, इसलिए इस को कहीं और झुकाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।
कचहरी में नवाब वज़ीर खान के साथ और भी बड़े बड़े दरबारी बैठे हुए थे। दरबार में प्रवेश करते ही जोरावर सिंघ तथा फतेह सिंघ दोनों भाईयों ने गर्ज कर जयकारा लगाया– 'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतेह'। नवाब तथा दरबारी, बच्चों का साहस देखकर आश्चर्य में पड़ गये।मुगलिया फरमान बच्चो को सुनाया गया मुसलमान बनना स्वीकार नहीं करोगे तो कष्ट दे देकर मार दिये जाओगे और तुम्हारे शरीर के टुकड़े सड़कों पर लटका दिये जायेंगे ताकि भविष्य में कोई सिक्ख बनने का साहस ना कर सके।''इस्लाम कबूल करने की, तो हमें सिक्खी जान से अधिक प्यारी है। दुनियाँ का कोई भी लालच व भय हमें सिक्खी से नहीं गिरा सकता। हम पिता गुरू गोबिन्द सिंघ के शेर बच्चे हैं तथा शेरों की भाति किसी से नहीं डरते। हम इस्लाम धर्म कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे। तुमने जो करना हो, कर लेना। हमारे दादा श्री गुरू तेग बहादुर साहिब ने शहीद होना तो स्वीकार कर लिया परन्तु धर्म से विचलित नहीं हुए। बच्चो की बाते सुनकर नवाबवजीर खान तिलमिला गया और छोटे छोटे बच्चो को नीव में चिनवाने का आदेश दिया दिल्ली के शाही जल्लाद साशल बेग व बाशल बेग ने जोरावर सिंघ व फतेह सिंघ को किले की नींव में खड़ा करके उनके आसपास दीवार चिनवानी प्रारम्भ कर दी।बनते-बनते दीवार जब फतेह सिंघ के सिर के निकट आ गई तो जोरावर सिंघ दुःखी दिखने लगे। काज़ियों ने सोचा शायद वे घबरा गए हैं और अब धर्म परिवर्तन के लिए तैयार हो जायेंगे। उनसे दुःखी होने का कारण पूछा गया तो जोरावर बोले मृत्यु भय तो मुझे बिल्कुल नहीं। मैं तो सोचकर उदास हूँ कि मैं बड़ा हूं, फतेह सिंघ छोटा हैं। दुनियाँ में मैं पहले आया था। इसलिए यहाँ से जाने का भी पहला अधिकार मेरा है। फतेह सिंघ को धर्म पर बलिदान हो जाने का सुअवसर मुझ से पहले मिल रहा है।छोटे भाई फतेह सिंघ ने गुरूवाणी की पँक्ति कहकर दो वर्ष बड़े भाई को साँत्वना दी: चिंता ताकि कीजिए, जो अनहोनी होइ ।।
इह मारगि सँसार में, नानक थिर नहि कोइ ।।दोनों छोटे साहिबजादे धर्म की रक्षा के लिए शहीद हो गये खबर जब माता गुजरी जी तक पहुची तो उन्होंने भी अपने शारीर का त्याग कर दिया चारो साहिबजादों की सहादत के बाद भी गुरुगोबिंद सिंह जी विचलित नही हुए उनके मुख से यही वाक्य निकला

"इन पुत्रन शीश पर वार दिए सूत चार
चार मुए तो क्या हुआ जीवत कई हजार"

22 से 27 दिसम्बर यह देश के इतिहास में सबसे बड़ा शहीदी दिवस है, ये भारत वर्ष के इतिहास की महत्वपूर्ण व् यादगार घटना है.

Indian Monuments

1. हैदराबाद का गोलकोण्डा किला (Golkonda fort of Hydrabad)

आज सारे संसार में अगर 80 -90 मीटर दूर से बात चित करनी हो तो माइक्रोफोन और स्पीकर की ज़रूरत पड़ती है। मगर भारत के इतहास में ऐसी भी संरचनाये हैं इतनी दुरी के लिए बिना तेज़ बोले ही आवाज पहुँच जाती है जैसे हैदराबाद का गोलकोण्डा किला। यहाँ तक यदि सूई भी गिरे तो उसकी भी आवाज़ गूंज जाती है। ऐसे विज्ञानं की खोज भारत में लगभग सैकड़ों साल पहले ही हो चुकी है। हमें गर्व है की विज्ञान के ऐसे कई चमत्कार भारत के इतिहास में आसानी से मिल जाते हैं।

Indian Language & Literature

संस्कृत(Sanskrit)

संस्कृत भारत की एक शास्त्रीय भाषा है। यह दुनिया की सबसे पुरानी उल्लिखित भाषाओं में से एक है। संस्कृत हिन्दी-यूरोपीय भाषा परिवार की मुख्य शाखा हिन्दी-ईरानी भाषा की हिन्दी-आर्य उपशाखा की मुख्य भाषा है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ हिन्दी, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, बंगला, उड़िया, नेपाली, कश्मीरी, उर्दू आदि सभी भाषाएं इसी से उत्पन्न हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। संस्कृत का अर्थ है- संस्कार की हुई भाषा। इसकी गणना संसार की प्राचीनतम ज्ञात भाषाओं में होती है। संस्कृत को देववाणी भी कहते हैं। विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक या कुछ ही रूप होते हैं, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं। से कम्प्यूटर और कृत्रिम बुद्धि के लिये सबसे उपयुक्त भाषा माना जाता है। शोध से ऐसा पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।संस्कृत विश्व की सर्वाधिक 'पूर्ण' एवं तर्कसम्मत भाषा है।

1. आयुर्वेद (Ayurveda)

पुरे विश्व में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कई तरीके खोजे गए जो कारगर भी थे कुछ तो ऐसे थे जिनमे इलाज का भ्रम मात्र था। ऐसा भी देखा गया की अस्पताल में मंहगे इलाज के बाद स्वस्थ होने का विश्वास दिलाने के बाद जब मरीज़ घर आया तो मरीज़ का देहांत होगया। प्रचलित स्वस्थ

व्यवस्था में इलाज का सबसे कारगर तरीका है चीड़ - फाड़ कुछ ऐसी बीमारियां जैसे पथरी, कमर दर्द या पीलिया जिनका इलाज ही संभव नहीं है वर्तमान चिकित्सालयों द्वारा। मगर आयुर्वेद के माध्यम से हर बिमारियों का इलाज है बिना चीड़ - फाड़ के यहाँ तक जिनका इलाज वर्तमान चिकित्सालयों द्वारा संभव ही नहीं उनका भी इलाज मात्र विचार, संयम या जड़ीबूटियों द्वारा ही कई सालों से आज भी चला आ रहा है।

आयुर्वेद में मानव स्वस्थ रहे इसकी कामना के साथ कम से कम दाम में इलाज किया जाता है। और स्वस्थ होकर समाज गति में स्वयं को लगाए इसकी अपेक्षा होती है। जबकि आज के वर्तमान डॉक्टरों की कामना होती है की जयादा से ज्यादा लोग बीमार रहे और उनसे धन कमाया जा सके इतना ही नहीं अस्पतालों में जाने के बाद दवाइयां दे कर बीमार रखते हैं और काट - फाड़ कर अंग भी निकल लेते है। यही कारण था की वैध को दूसरा भगवान भी कहते थे। आज भी आयुर्वेद ही ऐसी स्वास्थ व्यवस्था है जहाँ हर प्रकार का इलाज होता है यहाँ तक जो डॉक्टरों से भी ठीक नहीं होते उन बिमारियों का भी इलाज करते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार शरीर के बिगड़ने का कारण वात, पित्त तथा कफ का घटना या बढ़ना होता है। इनके घटने या बढ़ने का मुख्य कारण मानव के अनियमित रूप से जीना, संतुलन की कमी, वातावरण, पर्यावरण, भूगोलिक स्थिति, खान - पान तथा नकारात्मक विचार के भेद से है। यह भी देखा गया है की अलग - अलग भू स्थलों पर रहने वाले मानवों की भी सहरीर संरचना भी अलग - अलग होती है चाहे वो पहाड़, मैदानी क्षेत्र , पठार, रेगिस्तान, तटीय क्षेत्र या द्वीप समूह हो।

2. वेद और उसकी ऊंचाई (Vedas and its height)

वेद प्राचीन भारत के साहित्य हैं और दुनिया के सबसे प्राचीन लिखित ग्रंथ होने का गौरव भी वेदों को ही प्राप्त है। इसी के आधार पर दुनिया के अन्य मजहबों की उत्पत्ति हुई जिन्होंने वेदों के ज्ञान को अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न भाषा में प्रचारित किया। 7 नवम्बर सन् 2003 को यूनेस्को (UNESCO) यानी युनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन द्वारा वेदपाठ को "मानवता के मौखिक एवं अमूर्त विरासत की श्रेष्ठ कृति" घोषित किया जा चुका है। भारत सरकार द्वारा सीबीएसई (CBSE) के तर्ज पर ही वैदिक शिक्षा बोर्ड बनाने की पहल भी शुरू कर दी गई है। ऐसे कई ज्ञान है जिसकी जानकारी वैज्ञानिकों ने दिया जिसका वर्णन पहले ही वेदों में था। चाहे वह चिकित्सा सम्बंधित, संगीत सम्बंधित, तत्वज्ञान सम्बंधित, हवन द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित करने के सम्बंधित हो या रहस्यमयी कलाओं के सम्बंधित हो। कोई भी ज्ञान वेदों से अछूता नहीं रहा है।

Indian People

1. Indian heros (भारत देश पुरे विश्व में अपनी महानता)

भारत देश पुरे विश्व में अपनी महानता, सेवा सत्कार, धन संपत्ति, ज्ञान और ऐसी कई चीज़ें हैं जिसके लिए भारत प्रसिद्ध है। व्यापर के लिए यहाँ आये कुछ ब्रिटिश लोगों ने देखा की ये देश शांति प्रिय है उन्हें लगा इसपर जल्दी कब्ज़ा किया जा सकता है। जो की उनहोंने किया और 200 सालों तक शाशन किया। पर धीरे धीरे इसका विरोध भारत वासियों ने शुरू किया जिनमें से कुछ निम्न है।

i. **मोहन दास करमचंद गाँधी (2 अक्टूबर 1869 – 30 जनवरी 1948):** भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया।

ii. **भगत सिंह (28 सितम्बर 1907 - 23 मार्च 1931)** : भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगतसिंह संधु जाट सिक्ख थे वे देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया।

iii. **चन्द्रशेखर आजाद (23 जुलाई 1906 - 27 फरवरी 1931)** : ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के स्वतंत्रता सेनानी थे। वे पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल व सरदार भगत सिंह सरीखे क्रान्तिकारियों के अनन्यतम साथियों में से थे। सन् १९२२ में गाँधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अचानक बन्द कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़ कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन के सक्रिय सदस्य बन गये। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में पहले ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड किया और फरार हो गये। इसके पश्चात् सन् १९२७ में 'बिस्मिल' के साथ ४ प्रमुख साथियों के बलिदान के बाद उन्होंने उत्तर भारत की सभी क्रान्तिकारी पार्टियों को मिलाकर एक करते हुए हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसियेशन का गठन किया तथा भगत सिंह के साथ लाहौर में लाला लाजपत राय की मौत का बदला सॉण्डर्स का हत्या करके लिया एवं दिल्ली पहुँच कर असेम्बली बम काण्ड को अंजाम दिया।

iv. **सुखदेव थापर (15 मई 1907 - 23 मार्च 1931)** : वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। उन्हें भगत सिंह और राजगुरु के साथ २३ मार्च १९३१ को फाँसी पर लटका दिया गया था। इनकी शहादत को आज भी सम्पूर्ण भारत में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। सुखदेव भगत सिंह की तरह बचपन से ही

आज़ादी का सपना पाले हुए थे। ये दोनों 'लाहौर नेशनल कॉलेज' के छात्र थे। दोनों एक ही सन में लायलपुर में पैदा हुए और एक ही साथ शहीद हो गए।

v. **लाला लाजपत राय (28 जनवरी 1865 - 17 नवम्बर 1928)** : भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। इन्हें पंजाब केसरी भी कहा जाता है। इन्होंने पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की थी। ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल में से एक थे। सन् 1928 में इन्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध एक प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और अन्ततः 17 नवम्बर सन् 1928 को इनकी महान आत्मा ने पार्थिव देह त्याग दी।

vi. **सुभाष चन्द्र बोस (23 जनवरी 1897 - 18 अगस्त 1945)** : भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए "दिल्ली चलो!" का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया।

vii. **रानी लक्ष्मीबाई (19 नवम्बर 1835 - 18 जून 1858)** : मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं। उन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में अंग्रेज़ साम्राज्य की सेना से संग्राम किया और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की किन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपनी झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया।

viii. **तात्या टोपे (1814 - 18 अप्रैल 1859)** : भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेनानायक थे। सन 1857 के महान विद्रोह में उनकी भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण, प्रेरणादायक और बेजोड़ थी।

ix. **महाराणा प्रताप सिंह (9 मई 1540-19 जनवरी 1597)** : उदयपुर, मेवाड में शिशोदिया राजवंश के राजा थे। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने कई सालों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मुगलो को कही बार युद्ध में भी हराया। उनका जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कँवर के घर हुआ था। १५७६ के हल्दीघाटी युद्ध में 20000 राजपूतों को साथ लेकर राणा प्रताप ने मुगल सरदार राजा मानसिंह के 80000 की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को झाला मानसिंह ने आपने प्राण दे कर बचाया ओर महाराणा को युद्ध भूमि छोड़ने के लिए बोला। शक्ति सिंह ने आपना अशव दे कर महाराणा को बचाया। प्रिय अश्व चेतक की भी मृत्यु हुई। यह युद्ध तो केवल एक दिन चला परन्तु इसमें 17000 लोग मारे गएँ। मेवाड़ को जीतने के लिये अकबर ने सभी प्रयास किये। महाराणा की हालत दिन-प्रतिदिन चिंतीत हुई। 25000 राजपूतों को 12 साल तक चले उतना अनुदान देकर भामा शाह भी अमर हुआ।

जब भी पंजाब के इतिहास की बात होगी तो शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह का नाम जरूर लिया जाएगा। 13 नवंबर, 1780 को जन्मे रणजीत सिंह ने एक मजबूत और शक्तिशाली सिख साम्राज्य की स्थापना की। उनका जन्म पंजाब के गुजरांवाला इलाके में महा सिंह और राज कौर के परिवार में हुआ था। गुजरांवाला इलाका अभी पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में है। आइए आज उनकी पैदाइश की सालगिरह के मौके पर उनके बारे में जानते हैं और उनसे जुड़ीं 3 रोचक कहानी भी आपको पढ़ने को मिलेगी...

परवरिश

18वीं सदी के उत्तरार्ध की बात करें तो पंजाब प्रशासनिक तौर पर टुकड़े-टुकड़े में बंटा था। इनको मिस्ल कहा जाता था और इन मिस्ल पर सिख सरदारों की हुकूमत चलती थी। रणजीत सिंह के पिता महा सिंह इसी तरह की एक मिस्ल के सरदार थे। उस मिस्ल का नाम सुकरचकिया मिस्ल था जो पंजाब के पश्चिमी हिस्से में थी। महा सिंह के निधन के बाद रणजीत सिंह की परवरिश उनकी मां ने की।

रणजीत सिंह का सैन्य अभियान

रणजीत सिंह ने अन्य मिस्लों के सरदारों को हराकर अपने सैन्य अभियान की शुरुआत की। 7 जुलाई, 1799 को उन्होंने पहली जीत हासिल की। उस समय वह किशोर अवस्था में ही थे। उन्होंने भांगी मिस्ल को हराकर लाहौर पर कब्जा कर लिया। उसके बाद उन्होंने अगले कुछ दशकों में एक विशाल सिख साम्राज्य की स्थापना की।

पंजाब के महाराजा का ताज

12 अप्रैल, 1801 को रणजीत सिंह को पंजाब का महाराजा का ताज मिला। जिस दिन उनको महाराजा घोषित किया गया, वह दिन बैसाखी का था। उस समय वह 20 साल के थे। लेखक और पत्रकार खुशवंत सिंह ने अपनी किताब A History of the Sikhs में उस घटना के बारे में विस्तार से लिखा है। 'साहिब सिंह बेदी ने रणजीत सिंह के ललाट पर केसरिया तिलक लगाया और उनको पंजाब का महाराजा घोषित किया। किले से एक शाही सलामी दी गई। दोपहर बाद नौजवान महाराज हाथी पर सवार हुआ और शहर में निकल पड़ा। शहर की गलियों में प्रजा की भीड़ खड़ी थी जिस पर वह सोने और चांदी के सिक्के बरसाते जा रहे थे। शाम में शहर के सभी घरों को प्रकाशमय किया गया।'

पंजाब के बाहर साम्राज्य विस्तार

अपनी लाहौर विजय के बाद रणजीत सिंह ने अपने सिख साम्राज्य को विस्तार देना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने पंजाब के बाकी हिस्से के अलावा पंजाब से परे इलाके जैसे कश्मीर, हिमालय के इलाके और पोठोहार क्षेत्र पर अपना ध्यान केंद्रित किया। 1802 में उन्होंने अमृतसर को अपने साम्राज्य में मिला लिया। 1807 में उन्होंने अफगानी शासक कुतबुद्दीन को हराया और कसूर पर कब्जा कर लिया। 1818 में मुल्तान और 1819 में कश्मीर सिख साम्राज्य का हिस्सा बन चुका था। अफगानों और सिखों के बीच 1813 और 1837 के बीच कई युद्ध हुए। 1837 में जमरुद का युद्ध उनके बीच आखिरी भिड़ंत थी। इस भिड़ंत में रणजीत सिंह के एक बेहतरीन सिपाहसालार हरि सिंह नलवा मारे गए थे। इस युद्ध में कुछ सामरिक कारणों से अफगानों को बढ़त हासिल हुई और उन्होंने काबुल पर वापस कब्जा कर लिया।

आधुनिक सेना के हिमायती

रणजीत सिंह आधुनिक सेना बनाना चाहते थे। इसके लिए उनको पश्चिमी युद्ध कौशल और तरीकों को अपनाने से भी परहेज नहीं था। उन्होंने अपनी सेना में कई यूरोपीय अधिकारियों को भी नियुक्त किया। उनकी सेना को खालसा आर्मी के नाम से जाना जाता था। उनकी सेना में जहां हरि सिंह नलवा, प्राण सुख यादव, गुरमुख सिंह लांबा, दीवान मोखम चंद और वीर सिंह ढिल्लो जैसे भारतीय जनरल थे तो फ्रांस के जीन फ्रैंकोइस अलार्ड और क्लाउड ऑगस्ट कोर्ट, इटली के जीन बापतिस्ते वेंचुरा और पाओलो डी एविटेबाइल, अमेरिका के जोसिया हरलान और स्कॉट-आयरिश मूल के अलेक्जेंडर गार्डनर जैसे सैन्य ऑफिसर भी शामिल थे। गार्डनर रणजीत सिंह के निधन के बाद भी सिख सेना में रहे। सिख और अंग्रेजों के बीच पहले युद्ध के बाद गार्डनर कश्मीर के महाराजा की फौज में चले गए और कथित रूप से अपने अंतिम दिन श्रीनगर में गुजारे। फ्रेंच सिपाही जीन फ्रैंकॉइस अलार्ड भाड़े के सिपाही और अडवेंचर पसंद थे। उन्होंने नेपोलियन की सेना में अपनी सेवा दी थी। 1822 में वह रणजीत सिंह की सेना में शामिल हुए थे। रणजीत सिंह की फौज में वह ड्रैगून और लांसर्स नाम की कोर के प्रभारी थे जिनको बाद में महाराज की सेना की यूरोपीय ऑफिसर कोर का लीडर बना दिया गया।

सिख साम्राज्य का पतन

दशकों के शासन के बाद रणजीत सिंह का 27 जून, 1839 को निधन हो गया। उनके बाद सिख साम्राज्य की बागडोर खड़क सिंह के हाथ में आई। रणजीत सिंह के मजबूत सिख साम्राज्य को संभालने में खड़क सिंह नाकाम रहे। शासन की कमियों और आपसी लड़ाई की वजह से सिख साम्राज्य का पतन शुरू हो गया। सिख और अंग्रेजों के बीच हुए 1845 के युद्ध के बाद महान सिख साम्राज्य पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

रणजीत नाम कैसे पड़ा

शुरू में उनका नाम बुद्ध सिंह था। कहा जाता है कि उनके पिता महा सिंह ने एक युद्ध में छत्तर सरदार को हराया था। महासिंह ने इस युद्ध में अपनी जीत के बाद बेटे का नाम रणजीत रख दिया जिसका मतलब विजेता होता है।

अब पढ़िए उनके तीन रोचक किस्से...

एक बूढ़ी महिला

एक दिन की बात है महाराजा रणजीत सिंह का जुलूस जा रहा था। सड़क के दोनों किनारे लोगों की बड़ी भीड़ थी जो अपने लोकप्रिय शासक की एक झलक देखने को बेकरार थी। उसी बीच एक बूढ़ी महिला कुछ लोगों को धक्का देते हुए आगे बढ़ी और घोड़े के सामने आ गई। वह महिला अपने साथ एक बर्तन लाई थी। उसने महाराजा के पैर से बर्तन को रगड़ना शुरू कर दिया। यह देखकर हर कोई हैरान था। महाराजा के सेवकों और साथी सैनिकों ने महिला को वहां से हटाने की कोशिश की। लेकिन महाराजा के अंदर यह जानने की जिज्ञासा पैदा हुई कि महिला आखिर ऐसे क्यों कर रही थी। उन्होंने महिला से पूछा तो महिला का जवाब हैरान करने वाला था। महिला ने कहा कि लोग आपको पारस कहते हैं और मैंने सुना है कि पारस से लोहे को रगड़ने पर वह सोना बन जाता है। इसलिए मैं आपके पैर से इसे रगड़ रही हूं ताकि मेरा बर्तन सोना बन जाए। महिला की सादगी और साफगोई से वह काफी प्रभावित हुए और उसे ढेर सारे पैसे एवं बर्तन देने का आदेश दिया।

बच्चा और महाराजा

एक दिन की बात है। कुछ बच्चे एक बागीचे के पास खेल रहे थे। बागीचे में पेड़ से आम लटक रहे थे। बच्चों ने सोचा कि आम तोड़कर खाया जाए। एक बच्चे ने सड़क पर से ईंट का एक टुकड़ा उठाया और पेड़ पर दे मारा। पास से ही महाराजा का काफिला गुजर रहा था। बच्चे की ईंट महाराजा के सिर पर जा लगी। सिपाहियों ने लड़के को पकड़ लिया और महाराजा के सामने लाए। जब महाराजा ने पूछा कि क्या वजह है तो बच्चों ने सारी बातें बता दीं। इस पर महाराजा रणजीत सिंह ने सोचा कि एक पेड़ है जो चोट खाने के बाद भी कुछ देता है तो भला मैं इंसान होकर कैसे कुछ नहीं दे सकता हूं। उन्होंने सिपाहियों को आदेश दिया कि आम लाकर बच्चों के बीच बांटा जाए।

मुहर्रम और पीपल की डाली

मुस्लिमों का मुहर्रम का त्योहार था। ताजिये का जुलूस जिस रास्ते से निकलना था, उस रास्ते में पीपल का एक पेड़ था। पेड़ की एक डाली काफी नीचे थे जिससे जुलूस को निकलने में दिक्कत होती। इससे दो समुदाय के बीच तनाव की स्थिति पैदा हो गई। जब मामला रणजीत सिंह के पास पहुंचा तो उन्होंने कहा कि न तो पेड़ की डाली को काटने की जरूरत है और न जुलूस का रास्ता बदलने की। उन्होंने कहा कि उस रास्ते पर जहां डाली नीचे है, खुदाई करके कुछ समय के लिए एक अस्थायी सड़क बना दी जाए। इससे जुलूस भी आसानी से निकल जाएगा और डाली को काटने की भी नौबत नहीं आएगी।

अब उनसे जुड़ीं कुछ रोचक बातें

-बचपन में उनको चेचक हो गया था। इस बीमारी ने उनकी एक आंख ले ली। भले ही उनकी एक आंख थी लेकिन इससे सभी को बराबर देखते थे।
-उन्होंने अपने पिता के साथ सिर्फ 10 साल की उम्र में पहली लड़ाई लड़ी।
-रणजीत सिंह एक धर्मनिरपेक्ष शासक थे। उनकी सेना में हिंदू, मुस्लिम और यूरोपीय योद्धा एवं जनरल शामिल थे।
-सिख धर्म में भगवान के सामने हर किसी को बराबर माना जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए जब वह गद्दी पर बैठे तो कभी भी ताज नहीं पहना।
-उन्होंने ऐतिहासिक गुरुद्वारों-तख्त सिंह पटना साहिब और तख्त सिंह हजूर सिहाब का निर्माण कराया। तख्त श्री पटना साहिब का निर्माण उस स्थान पर हुआ है जहां 10वें सिख गुरु का जन्म हुआ था और तख्त सिंह हजूर साहिब का निर्माण उस स्थान पर हुआ है जहां उनका निधन हुआ था।
-एक बार एक अफगान शासक शाह शुजा की पत्नी ने महाराजा से आग्रह किया। उसने वादा किया कि अगर महाराजा शाह शुजा की रक्षा करेंगे और उनको लाहौर सुरक्षित ले आएंगे तो वह उनको कोह-ए-नूर हीर देगी। महाराजा ने शाह शुजा को बचाया जिसके बाद 1 जून, 1813 को उनको कोह-ए-नूर हीरा दिया गया।

x. **छत्रपति शिवाजी महाराज या शिवाजी राजे भोसले (1630 - 1680)** : भारत के महान योद्धा एवं रणनीतिकार थे जिन्होंने 1674 में पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नींव रखी। उन्होंने कई वर्ष औरंगज़ेब के मुगल साम्राज्य से संघर्ष किया। सन 1674 में रायगढ़ में उनका राज्याभिषेक हुआ और छत्रपति बने। शिवाजी ने अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों की सहायता से एक योग्य एवं प्रगतिशील प्रशासन प्रदान किया। उन्होंने समर-विद्या में अनेक नवाचार किये तथा छापामार युद्ध (Gorilla War) की नयी शैली (शिवसूत्र) विकसित की। उन्होंने प्राचीन हिन्दू राजनीतिक प्रथाओं तथा दरबारी शिष्टाचारों को पुनर्जीवित किया और फारसी के स्थान पर मराठी एवं संस्कृत को राजकाज की भाषा बनाया।

1. विश्व युद्ध (world War)

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना (जिसे कभी-कभी ब्रिटिश भारतीय सेना कहा जाता है) ने प्रथम विश्व युद्धमें यूरोपीय, भूमध्यसागरीय और मध्य पूर्व के युद्ध क्षेत्रों में अपने अनेक डिविजनों और स्वतंत्र ब्रिगेडों का योगदान दिया था। दस लाख भारतीय सैनिकों ने विदेशों में अपनी सेवाएं दी थीं जिनमें से 62,000 सैनिक मारे गए थे और अन्य 67,000 घायल हो गए थे। युद्ध के दौरान कुल मिलाकर 74,187 भारतीय सैनिकों की मौत हुई थी।

1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना में मात्र 200,000 लोग शामिल थे युद्ध के अंत तक यह इतिहास की सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेना बन गई जिसमें कार्यरत लोगों की संख्या बढ़कर अगस्त 1945 तक 25 लाख से अधिक हो गई। पैदल सेना (इन्फैन्ट्री), बख्तरबंद और अनुभवहीन हवाई बल के डिवीजनों के रूप में अपनी सेवा प्रदान करते हुए उन्होंने अफ्रीका, यूरोप और एशिया के महाद्वीपों में युद्ध किया।

यहाँ तक की जहाँ गाड़िया नहीं जा सकती थी वहां के लिए खच्चर भी भारत से गए थे और उनका चिकित्सा द्वारा ध्वनि भी बंद करदी गई थी ताकि दुश्मन को आगमन का पता न चले। युद्ध की समापन के बाद वापस लौटते समय ब्रिटिश के लिए भारत की सेना अतिरिक्त भार मात्र थी जिसके लिए और भारतीय सेना को डंकिर्क समुद्र तट पर ही छोड़ देने का फरमान निकला मगर कुछ अच्छे लोग जैसे ऐशडाउन जैसे लोगों ने ये बात कही की उन्हें ऐसे फरमान का पता नहीं था और वे भारतीय सेना से समुद्र तट पर मिले जिसके लिए उन्हें बाद में कोर्ट मर्सिअल किया गया। कुछ भारतीय सैनिकों ने अपनी जिम्मेदारी स्वयं स्वीकारी और अपनी टुकड़ियों को बचाया जिनमे से जूनियर अफसर जिमेदार मौला दाद खान का नाम सबसे ऊपर है जिसके लिए बाद में उन्हें पुरुस्कार भी मिला। जब ब्रिटिश यूरोप में युद्ध करते समय अपने सैनिक को बचाने में व्यस्त थे तब भारतीय सैनिकों ने उत्तर अफ्रीका और पश्चिम एशिया के किलों में अपना कब्ज़ा जमाया। ब्रिटिशों का कहना था की कोई भी भारतीय सैनिक डंकिर्क के युद्ध में शामिल नहीं थे मगर डंकिर्क के चर्च में अगर ब्रिटैन रॉयल मिलिट्री अकादमी की तस्वीर देखे तो यह पता चलता है की भारतीय सेना ने न केवल फ्रांस में युद्ध किया बल्कि पर्सिया, इराक, होन्ग कोंग, ग्रीस, इटली और इरिट्रिया में भी युद्ध किया।

Indian Tradition & Culture

12.भारतीय विवाह का आधार और गोत्र

(Indian Weddings – Base & Gotra theory)

भारत में विवाह मात्र दो मानव के साथ रहने का चुनाव नहीं है, न ही यह किसी के आकर्षण में किया गया कार्य है। यह संकल्प है जिसमे पुरुष और एक स्त्री दोनों मिलकर यह शपथ लेते हैं की हम परिवार, समाज तथा प्रकृती के लिए पूरक होते हुए ऐसी संतान के धारक वाहक होंगे जो इस संसार में समाधान, समृद्धि, अभय तथा सह-अस्तित्व की परंपरा को कायम रखेगा या निर्माण करेगा। इसके लिए पुरष योजना प्रधान क्रिया कलापों से तथा स्त्री सत्यता प्रधान क्रिया कलापों से शपथ की पूर्ति के लिए जिम्मेदारी उठाते है।

भारत में विवाह = वि + वाह, अत: इसका शाब्दिक अर्थ है - विशेष रूप से (उत्तरदायित्व का) वहन करना। पाणिग्रहण संस्कार को सामान्य रूप से भारतीय विवाह के नाम से जाना जाता है। अन्य स्थानों में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है जिसे कि विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता है, परंतु भारतीय विवाह पति और पत्नी के बीच जन्म-जन्मांतरों का सम्बंध होता है जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं तोड़ा जा सकता। अग्नि के सात फेरे लेकर और ध्रुव तारा को साक्षी मान कर दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। भारतीय विवाह में पति और पत्नी के आत्मिक संम्बंध होता है और इस संम्बंध को अत्यंत पवित्र माना गया है।

विवाह में पति पत्नी का चुनाव में गोत्र का मिलान किया जाता है। भारत में एक गोत्र में विवाह करना वर्जित माना गया है। एक ही जाती में भी विवाह के कई नियम दिए गए हैं और इन्ही में से एक है की लड़का लड़की अगर एक ही गोत्र के हों तो उनका विवाह नहीं हो सकता। इस सन्दर्भ में विवाह के दौरान सिर्फ लड़का लड़की का ही गोत्र नहीं मिलाया जाता बल्कि उनका दादा दादी का भी गोत्र मिलान किया जाता है। यानी तीन पीढ़ियों का गोत्र देखा जाता है और अगर गोत्र एक हो तो वो विवाह संपन्न नहीं हो सकता।

अगर लड़का लड़की के गोत्र एक हैं तो इसका मतलब है उनके परिवारों का संबंध एक ही वंश/कुल से है। ऐसी स्थिति में लड़का लड़की भाई बहन माने जाते हैं और हिन्दू धर्म में भाई बहन में विवाह नहीं होता इसलिए एक गोत्र के लड़का लड़की का विवाह अनुचित माना जाता है। एक गोत्र में विवाह करने वाले दंपत्ति के गुणसूत्र समान मिल जाते हैं और फिर उनकी आने वाली संतान में आनुवांशिक दोष जैसे मानसिक विकलांगता, अपंगता आदि और अन्य गंभीर बीमारियां होने की सम्भावना काफी बढ़ जाती हैं इसलिए विज्ञान के अनुसार एक गोत्र में शादी

करने वाले दंपत्ति की संतान को शारीरिक कष्ट भोगने पड़ते हैं इसलिए विज्ञान में भी एक गोत्र में शादी करना उचित नहीं माना गया है।

एक अमेरिकी वैज्ञानिक ने कहा की जेनेटिक बीमारी न हो इसका एक ही इलाज है और वो है सेपरेशन ऑफ़ जींस" मतलब अपने नजदीकी रिश्तेदारो में विवाह नही करना चाहिए क्योकि नजदीकी रिश्तेदारों में जींस सेपरेट (विभाजन) नही हो पाता और जींस लिंकेज्ड बीमारियाँ जैसे हिमोफिलिया, कलर ब्लाईंडनेस, और एल्बोनिज्म होने की 100% चांस होती है ..

भारत में हजारों-हजारों सालों पहले जींस और डीएनए के बारे में कैसे लिखा गया है ? हिंदुत्व में गोत्र होते है और एक गोत्र के लोग आपस में शादी नही कर सकते ताकि जींस सेपरेट (विभाजित) रहे.. उस वैज्ञानिक ने कहा की आज पूरे विश्व को मानना पड़ेगा की "हिन्दूधर्म ही" विश्व का एकमात्र ऐसा धर्म है जो "विज्ञान पर आधारित" है।

13.परिवार के महत्व (Importance of Family)

पुरे विश्व में केवल एक मात्र भारत ही है जहाँ परिवार व्यवस्था को महत्त्व दिया जाता है। भारत में परिवार का अर्थ एक ऐसा समूह जहाँ लक्षय की पूर्ति के लिए सम्बन्ध को सम्बोधन सहित संबंधों की सीमा व मर्यादा को ध्यान में रखते हुए एक दूसरे के लिए पूरक और उपयोगी होने के लिए अपनी भागीदारी जिम्मेदारी सहित पूरी करते हैं। जहाँ परिवार के मुखिया का चुनाव जिम्मेदारी और भागीदारी पर निर्भर करती है। परिवार में संबंधों का विभाजन सात प्रकार की जिम्मेदारिओं से है।

1. माता - पिता : पोषण - संरक्षण
2. पुत्र - पुत्री : अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
3. भाई - बहन : परस्पर अभ्युदय में सहयोग
4. गुरु - शिस्य : प्रामाणिक - जिज्ञासु
5. साथी - सहयोगी : दायित्व - कर्त्तव्य
6. मित्र - मित्र : परस्पर पूरक
7. पति - पत्नी : यतीत्व - सतीत्व

माता - पिता : इस सम्बन्ध में पोषण संरक्षण की जिम्मेदारी अनन्यता के भाव से चाहे दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, मामा-मामी, फूफा-बुआ, मौसा- मौसी या वो सभी जो इसे स्वीकारते हैं सभी माता-पिता तुल्य होते हैं।

पुत्र - पुत्री : इस संबंध में ज्ञान सम्पन्न होने के लिए कार्य तथा परिवार में अपनी क्षमता के अनुसार उपयोगिता और पूरकता को प्रमाणित करता है चाहे वो पुत्र - पुत्री, भतीजा - भतीजी, भांजा - भांजी, पोता-पोती, नाती - नातिन या वो सभी जो इसके लिए प्रयासरत होते हैं पुत्र - पुत्री तुल्य होते हैं।

भाई - बहन : इस सम्बन्ध में एक दूसरे को ज्ञान संपन्न होने के लिए सहयोग किया जाता है। जो भी मानव किसी के लिए ऐसा करता है वो तो वह भाई बहन सम्बन्ध के तुल्य होता है।

गुरु - शिष्य : इस सम्बन्ध में गुरु ज्ञान सम्पनता के प्रमाण सहित यह विश्वास दिलाता है की शिष्य को भी ज्ञान संपन्न होने में गुरु उसके लिए पूरक बनेगा। शिष्य अनुसरण और अनुकरण माध्यम से अपनी जिज्ञासा व्यक्त करता है। जो भी इस कार्य को प्रमाणित करता है वह गुरु-शिष्य के तुल्य होता है।

साथी - सहयोगी : इस सम्बन्ध में एक मानव दूसरे मानव के ज्ञान सम्पन्नता तथा भागीदारियों में वस्तु सेवा की जिम्मेदारी स्वीकारता है या वस्तु सेवा के लिए समर्पित होता है।

मित्र - मित्र : इस सम्बन्ध में मित्र एक दूसरे के समाधान, समृद्धि थता अभय के लिए स्वयं को समर्पित करता है। यह विश्वास दिलाता है की हर जिम्मेदारियों का भार प्रेम पूर्वक उठाने के लिए समर्पित हूँ।

पति - पत्नी : इस सम्बन्ध में पुरुष और एक स्त्री दोनों मिलकर यह शपथ लेते हैं की हम परिवार, समाज तथा प्रकृती के लिए पूरक होते हुए ऐसी संतान के धारक वाहक होंगे जो इस संसार में समाधान, समृद्धि, अभय तथा सह-अस्तित्व की परंपरा को कायम रखेगा या निर्माण करेगा। इसके लिए पुरष योजना प्रधान क्रिया कलापों से तथा स्त्री सत्यता प्रधान क्रिया कलापों से शपथ की पूर्ति के लिए जिम्मेदारी उठाते है।

ऐसे सम्बन्धो में जीते हुए तीन पीढ़ियों के मानव समूह जिसमे दादा-दादी की पीढ़ी, माता- पिता के पीढ़ी तथा बच्चों की पीढ़ी एक दूसरे के साथ समाधान, समृद्धि और अभय प्रमाणित करते हैं। जिसने प्रमाण दिया वह परिवार के मुखिया के रूप में चुना जाता है और दूसरे परिवार में प्रेम पूर्वक उपकार विधि से पूरक होता है। ऐसे कई परिवार मिलकर एक गॉव का निर्माण करते हैं और जिसने सबसे ज्यादा पूरकता प्रमाणित की उसे गाँव का मुखिया बनाते हैं। ऐसे कई गाँव मिलकर एक शहर का निर्माण करते है जहाँ आवश्यकता अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग सहित मानव श्रम का क्रय क्या विक्रय होता है। यहाँ कई गाँव के मुखिया शहर की जिम्मेदारी उस मुखिया को देते है जिसने समाधान, समृद्धि तथा अभय सबसे अधिक प्रमाणित करी हो। कई शहर मिलकर एक देश का निर्माण करते हैं। जिसकी अपेक्षा भारतीय संस्कृति करती है। अपेक्षा यह भी है की सभी देश मिल कर ऐसी परिवार व्यवस्था को प्रमाणित करे जिसमें समाधान, समृद्धी और अभय पहले ही प्रमाणित हो चुकी हो और परिणाम स्वरुप सह - अस्तित्व की परंपरा का उदय हो जाय।

1. भारतीय संस्कृति (Indian Culture)

भारत विश्व में सबसे पुराना, सबसे अमीर और विविध संस्कृतियों में से एक है और इस संस्कृति ने भारत को एक अनूठे राष्ट्र बना दिया है। भारतीय संस्कृति अपने पुराने पुराने इतिहास, अलग भूगोल, विविध जनसांख्यिकी और अपने प्राचीन हिरासत से प्रथाओं, परंपराओं और विचारों का मिश्रण है, जो सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान बनाई गई थी और वैदिक काल के दौरान और बौद्ध धर्म की वृद्धि और गिरावट के दौरान अधिक विकसित हुई थी। , स्वर्ण युग, मुस्लिम विजय और यूरोपीय उपनिवेशण। धार्मिक प्रथाओं, भाषाओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं की भारत की महान विविधता, उम्र से इस अनूठी विलय के उदाहरण हैं। भारत विश्व में एकमात्र राष्ट्र है, जो कई संस्कृतियों को अपनाते हैं जो खुद में अद्‌वितीय हैं।भारतीय संस्कृति में कला, वास्तुकला, संगीत,

नृत्य, व्यंजनों, त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं आदि शामिल हैं।

2. अतिथि सत्कार

भारतीय लोग अपने आतिथ्य के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। राष्ट्र का मानना है कि "अतीथ देवो भव", जिसका अर्थ है कि अतिथि भगवान के बराबर हैं और यह भारत को एक विशिष्ट और विशिष्ट राष्ट्र बनाता है। इस अनोखी विशेषता और आतिथ्य के लिए भारत में विदेश से आने वाले लोग भारतीय लोगों के साथ प्यार करने लगते हैं संस्कृति के संदर्भ में अपनी संस्कृति के अलावा हर संस्कृति का आम लक्षण है। राष्ट्र प्यार, स्नेह, विनम्रता और अपनेपन की भावना प्रदान करता है और भारत में लोगों की भीड़ को आकर्षित करता है। यह देश पर गर्व महसूस करने और इस देश का एक हिस्सा होने का एक कारण है।

स्वागत सत्कार का रिवाज

हिंदू धर्म में व्यक्तिगत भगवान की पूजा पांच-चरण की पूजा में की जाती है; इसे पंचोपचार पूजा के रूप में जाना जाता है "षोडशोपचार पूजन" अधिक व्यापक और औपचारिक है, और इसमें 16 चरणों शामिल हैं।

मेहमानों को स्वागत करते हुए पूजा के पांच चरणों में निभाया जाने वाला पांच औपचारिकताएं बन जाती हैं

i. धूप - मेहमानों को स्वागत करते समय कमरों में एक सुखद सुगंध होना चाहिए, क्योंकि यह पहली बात है जो अपनी यात्रा से मेहमानों को आकर्षित या अतिक्रमण करते हैं। एक सुखद खुशबू एक मानव की अच्छे आनंदमय मनःस्थिति बनाये रखने में मदद करता है ।
ii. दीप: भारत के विद्युतीकरण से पहले, एक दीपक जिसे अभिव्यक्ति और शरीर की भाषा के रूप में परिभाषित किया गया है।
iii. नैवेद्य: दूध से बने मिठाई और फल मेहमानों को पेश किए जाते है। ताकि कोई भी मेहमान भूंख से पीड़ित न रहे।
iv. अक्षत: यह अविभाजित होने का प्रतीक है एक तिलक, जो आमतौर पर एक वर्मिलियन पेस्ट से बना होता है, को माथे पर रखा जाता है और उस पर चावल के अनाज रखा जाता है। यह हिन्दू भारतीय परिवारों में आपका स्वागत है।
v. पुष्पा) - एक फूल मंगल-कामना का एक संकेत है जब मेहमान का आगमन होता है, तो फूल द्वारा हम अतिथि के साथ मंगल कामना का भाव व्यक्त करते है। जो उनके साथ कई दिनों तक रहती है।

3. Indian Festival (भारत के प्रमुख त्योहार)

त्योहारों का hamare जीवन में बहोत महत्त्व है और 20 से अधिक त्यौहार पूरे वर्ष पूरे भारत में मनाए जाते हैं। प्रत्येक उत्सव उसी उत्साह और भव्यता के साथ मनाया जाता है यद्यपि, अधिकांश त्योहारों का धार्मिक महत्व है लेकिन धार्मिक विविधता के बावजूद, हर त्यौहार को विशाल धूमधाम के साथ मनाया जाता है और यह भारत में परस्पर धर्मनिरपेक्षता को दर्शाता है। ये त्यौहार पूरे विश्व से भारत को अलग करते हैं और हमें एक भारतीय होने पर गर्व महसूस करने का एक कारण बनते हैं।

भारतीय त्योहार हमारे मनोरंजन के साथ-साथ, सामाजिक और पारिवारिक एकता को बनाये रखने के लिए (रक्षा बंधन, भाईदूज, करवा चौथ, सकट, अहोई आदि) , ऐतिहासिक संस्कृति की परंपरा बनाये रखने के लिए (दिवाली, दशहरा, होली, जन्माष्ठमी इत्यादि) , राष्ट्रीय एकता के लिए (गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस इत्यादि) , महापुरषों के कृत करीत कार्यों के लिए (गांधी जयंती, वाल्मीकि जयंती, बुद्धपूर्णिमा, अंबेडकर जयंती, इत्यादि) और मौसम के बदलाव के कारण होने वाले शुभ परिणामो के लिए(बसंत पंचमी, पोंगल, मकर संक्रांति, लोहरि, ओणम, वैसाखी, भोगली बिहू इत्यादि) दुष्परिणामों के लिए कई प्रकार के उपवास होता है। कुछ त्योहारों के वैज्ञानिक कारण तो इतने उत्तम है जिनसे भारत की परम्पराओं पर गर्व होता है जैसे :

i. **होली का वैज्ञानिक कारण** : होली का त्योहार साल में ऐसे समय पर आता है जब मौसम में बदलाव के कारण लोग उनींदे और आलसी से होते हैं। ठंडे मौसम के गर्म रुख अख्तियार करने के कारण शरीर का कुछ थकान और सुस्ती महसूस करना प्राकृतिक है। शरीर की इस सुस्ती को दूर भगाने के लिए ही लोग फाग के इस मौसम में न केवल जोर से गाते हैं बल्कि बोलते भी थोड़ा जोर से हैं। योगाश्रम के डॉ. प्रधान के अनुसार, होली पर शरीर पर ढाक के फूलों से तैयार किया गया रंगीन पानी, विशुद्ध रूप में अबीर और गुलाल डालने से शरीर पर इसका सुकून देने वाला प्रभाव पड़ता है और यह शरीर को ताजगी प्रदान करता है। जीव वैज्ञानिकों का मानना है कि गुलाल या अबीर शरीर की त्वचा को उत्तेजित करते हैं और पोरों में समा जाते हैं और शरीर के आयन मंडल को मजबूती प्रदान करने के साथ ही स्वास्थ्य को बेहतर करते हैं और उसकी सुदंरता में निखार लाते हैं।

   होली का त्योहार मनाने का एक और वैज्ञानिक कारण है। हालांकि यह होलिका दहन की परंपरा से जुड़ा है। शरद ऋतु की समाप्ति और बसंत ऋतु के आगमन का यह काल पर्यावरण और शरीर में बैक्टीरिया की वृद्धि को बढ़ा देता है लेकिन जब होलिका जलाई जाती है तो उससे करीब 145 डिग्री फारेनहाइट तक तापमान बढ़ता है। परंपरा के अनुसार जब लोग जलती होलिका की परिक्रमा करते हैं तो होलिका से निकलता ताप शरीर और आसपास के पर्यावरण में मौजूद बैक्टीरिया को नष्ट कर देता है। और इस प्रकार यह शरीर तथा पर्यावरण को स्वच्छ करता है।

ii. **दीपावली का वैज्ञानिक कारण** : दीपावली वर्षा ऋतू के बाद आती है। इसलिए यह समय कीटों, फफूंदियों आदि के पोषण का समय होता है। अर्थात इस समय कीड़े - मकौड़े अधिक हो जाते हैं क्यों की इनको सही वातावरण मिलता है और इतने कीट भयानक बीमारी पैदा कर सकते हैं। दीपावली के उपलक्ष में घरों की सफाई करि जाती है जिससे कीड़े - मकौड़े घर से बहार चले जाते है जिनसे बिमारियों का खतरा काम हो जाता है। इस मौके पर दिए भी जलाये जाते है जिससे वातावरण शुद्ध होता है और हवा में फैले बैक्टीरिया आदि भी समाप्त हो जाते है।

iii. **मकर संक्रांति :** मकर संक्रांति के समय नदियों में वाष्पन क्रिया होती है। इससे तमाम तरह के रोग दूर हो सकते हैं। इसलिए इस दिन नदियों में स्नान करने का महत्व बहुत है। मकर संक्रांति में उत्तर भारत में ठंड का समय रहता है। ऐसे में तिल-गुड़ का सेवन करने के बारे में विज्ञान भी कहता है। ऐसा करने पर शरीर को ऊर्जा मिलती है। जो सर्दी में शरीर की सुरक्षा के लिए मदद करता है। इस दिन खिचड़ी का सेवन करने के पीछे भी वैज्ञानिक कारण है। खिचड़ी

पाचन को दुरुस्त रखती है। इसमें अदरक और मटर मिलाकर बनाने पर यह शरीर को रोग-प्रतिरोधक बैक्टीरिया से लड़ने में मदद करती है।

iv. **<u>नवरात्री :</u>** नवरात्र के पीछे का वैज्ञानिक आधार यह है कि पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा काल में एक साल की चार संधियां हैं जिनमें से मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं। अत: उस समय स्वस्थ रहने के लिए तथा शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन-मन को निर्मल और पूर्णत: स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम 'नवरात्र' है। इसमें अंग-प्रत्यंगों की पूरी तरह से भीतरी सफाई करने के लिए हर 6 माह के अंतर से सात्विक आहार के व्रत का पालन करने से शरीर की शुद्धि, साफ-सुथरे शरीर में शुद्ध बुद्धि, उत्तम विचारों से ही उत्तम कर्म, कर्मों से सच्चरित्रता और क्रमश: मन शुद्ध होता है।

4. भोजन (Food)

पुरे विश्व में केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ भोजन के कई प्रकार है और भिन्न भिन्न प्रकार के स्वाद है। भारत में विभिन्न प्रकार के भूखंड और जलवायु है इन विभिन्न प्रकार के भूखंडों के उपजाऊ क्षमता भी अलग अलग होती है । यह क्षमता हर भू खंड पर पड़ते ताप और दाब के कारण है। ताप और दाब का करण वातावरण के ऊपर निर्भर करता है। ताप और दाब का प्रभाव केवल भूमि पर ही नहीं मानवों पर भी पड़ता है। जो जिस वातावरण में रहता है उसके अनुकूल वहां की भूमि खाद्य पदार्थों को जन्म देती है जिसके कारण बीमारिया दूर रहती है। भोजन वातावरण और जलवायु के अनुकूल होते हैं जो दवाइयों के काम करते हैं और इम्यून सिस्टम को भी मजबूत बनता है। भारत में मसाले भी स्वाद से ज्यादा स्वास्थ्य के लिए है। यहाँ बीमारिया जो मेडिकल से ठीक नहीं होती हैं वो मसाले यानि जड़ीबूटियों के योग संयोग से ठीक हो जाती हैं। जैसे बैंगन में लहसुन बैंगन का बादीपन काम करता है, अजवाइन पित्त को काम करता है, हल्दी एंटी-बैटिक दवाओं का काम करती है, मेथी पेट दर्द या नेचुरल इन्सुलिन का काम करती है इत्यादि। ऐसी कई प्रकार के जड़ी बूटियां है जो मसाले के रूप में सभी के घर में होते हैं। प्राचीन इतिहास के अनुसार भारतीय भोजन को खाने का तरीका, पानी पिने का तरीका या क्या खाना है और कितना खाना है। यह सभी कई हजार सालों से विभिन्न ग्रंथों में लिखा है। इसलिए ही भोजन मौसम के अनुसार ही उचित है। दूसरे भू स्थलों का भोजन बीमार या कमजोर कर सकता है।

भोजन हमारी जलवायु और जरूरत के अनुसार विकसित हुआ है। हमारे लाखो करोडो वर्षों में भोजन का जो विकास हुआ है ये सबसे बड़ा विकास है हमारे देश में भारत में मना जाता है और सारे विद्वान इस पर एक मत है की जो भारत में भोजन के ऊपर जो विविधता लाइ है हजारो लाखों सालों में ये भारत की सबसे बड़ी देन है पुरे विश्व को। जितनी विविधता है भारत के भोजन में इतनी विविधता कहीं और नहीं मिलेगी। यदि हम बात करे गेंहू की तो यह भारत में भी है और विदेशों में भी कई जगह है मगर गेहूं से भारत में भिन्न-भिन्न प्रकार के रोटी (तवा रोटी, तंदूरी रोटी, रुमाली रोटी, मिस्सी रोटी आदि) , परांठा (आलू पराठा, गोभी पराठा, मूली पराठा, मेथी पराठा इत्यादि), पूरी (तमतक की पूरी, पालक की पूरी, शलगम की पूरी, मेथी पूरी इत्यादि), कचौरी (उरद की कचौरी, चना दाल कचौरी, आलू की कचौरी, पालक की कचौरी, मेथी की कचौरी इत्यादि) मगर विदेश मात्र दो ही चीज़ बनाते है पाव रोटी और डबल रोटी जो की एक ही तरीके से बनती है। वैज्ञानिकों ने भी यह

प्रमाणित कर की गेहूं के आंटे को गिला करने के बाद 48 मिनट तक में रोटी बन जाना चाहिए। मगर पाव रोटी और डबल रोटी की बात करे तो उसका आता पहले 10 से 20 दिन सड़ाया जाता है और फिर पाव रोटी बनाते है। जो की महीनो तक चलता है और यूरोप जैसे देशों में तो 3 महीने तक पुराना भी कहते हैं। अगर भारत के भोजन की विविधता की बात करे तो जनम से मृत्यु तक हम अलग अलग प्रकार के भोजन खा सकते है। भारत ऐसा देश है जहाँ हम सुबह शाम ताज़ी सब्ज़ी खा सकते है अमेरिका और यूरोप में तो ताज़ी सब्जी सपने जैसी है।

5. वस्त्र (Clothes)

भारत में वस्त्रों का स्तेमाल न केवल स्वयं के रूप को संवारने के लिए है बल्कि शरीर का तापमान बनाये रखने के लिए, तन ढकने के लिए भी है | भारत में मात्र उन वस्त्रों का स्तेमाल होता है जो आवर्तनशील हो, जो धरती में जाने के बाद खाद बन जाये | यहाँ भिन्न - भिन्न जलवायु के कारण भिन्न - भिन्न प्रकार के वस्त्र होते हैं जो की पुरे शरीर को ढकते हैं और खुले होते हैं ताकि शरीर में दबाव न आये और हरेक कोशिकाएं साँस ले सके जिससे मानव ज्यादा स्वस्थ रह सके |भारत में वस्त्रों के रंगो का भी बहुत महत्त्व दिया जाता है | रंगो से निकलते प्रभाव से होने वाले परिणामों के अनुसार किस समय किस प्रकार के वस्त्र पहने या किस रंग के पहने इसका भी ध्यान दिया जाता है यहाँ पर जितने प्रकार के वस्त्र हैं वो पुरे विश्व में नहीं हैं। लगभग प्रत्येक राज्य का अपना पहनावा है।

6. भारत की संस्कृति(Culture of India)

भारत को उच्तम रीती रिवाज़ों के लिए पुरे विश्व में जाना जाता है जिनमे से कुछ निचे है।

i. कान छिदवाने की परम्परा : दर्शनशास्त्री मानते हैं कि इससे सोचने की शक्ति बढ़ती है। जबकि डॉक्टरों का मानना है कि इससे बोली अच्छी होती है और कानों से होकर दिमाग तक जाने वाली नस का रक्त संचार नियंत्रित रहता है।
ii. माथे पर कुमकुम/तिलक : आंखों के बीच में माथे तक एक नस जाती है। कुमकुम या तिलक लगाने से उस जगह की ऊर्जा बनी रहती है। माथे पर तिलक लगाते वक्त जब अंगूठे या उंगली से प्रेशर पड़ता है, तब चेहरे की त्वचा को रक्त सप्लाई करने वाली मांसपेशी सक्रिय हो जाती है। इससे चेहरे की कोशिकाओं तक अच्छी तरह रक्त पहुंचता है।
iii. जमीन पर बैठकर भोजन : पलती मारकर बैठना एक प्रकार का योग आसन है। इस पोजीशन में बैठने से दिमाग शांत रहता है और भोजन करते वक्त अगर दिमाग शांत हो तो पाचन क्रिया अच्छी रहती है। इस पोजीशन में बैठते ही खुद-ब-खुद दिमाग से 1 सिगनल पेट तक जाता है, कि वह भोजन के लिये तैयार हो जाये।
iv. हाथ जोड़कर नमस्ते करना : जब किसी से मिलते हैं तो हाथ जोड़कर नमस्ते अथवा नमस्कार करते हैं। जब सभी उंगलियों के शीर्ष एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और उन पर दबाव पड़ता है। एक्यूप्रेशर के कारण उसका सीधा असर हमारी आंखों, कानों और दिमाग पर होता है, ताकि सामने वाले व्यक्ति को हम लंबे समय तक याद रख

सकें। दूसरा तर्क यह कि हाथ मिलाने (पश्चिमी सभ्यता) के बजाये अगर आप नमस्ते करते हैं तो सामने वाले के शरीर के कीटाणु आप तक नहीं पहुंच सकते।

v. भोजन की शुरुआत तीखे से और अंत मीठे से : जब भी कोई धार्मिक या पारिवारिक अनुष्ठान होता है तो भोजन की शुरुआत तीखे से और अंत मीठे से होता है। तीखा खाने से हमारे पेट के अंदर पाचन तत्व एवं अम्ल सक्रिय हो जाते हैं इससे पाचन तंत्र ठीक से संचालित होता है अंत में मीठा खाने से अम्ल की तीव्रता कम हो जाती है इससे पेट में जलन नहीं होती है।

vi. पीपल की पूजा : लोग सोचते हैं कि पीपल की पूजा करने से भूत-प्रेत दूर भागते हैं। इसकी पूजा इसलिये की जाती है, ताकि इस पेड़ के प्रति लोगों का सम्मान बढ़े और उसे काटें नहीं पीपल एक मात्र ऐसा पेड़ है, जो रात में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है ।

vii. दक्षिण की तरफ सिर करके सोना : जब हम उत्तर की ओर सिर करके सोते हैं, तब हमारा शरीर पृथ्वी की चुंबकीय तरंगों की सीध में आ जाता है। शरीर में मौजूद आयरन यानी लोहा दिमाग की ओर संचारित होने लगता है इससे अलजाइमर, परकिंसन, या दिमाग संबंधी बीमारी होने का खतरा बढ़ जाता है यही नहीं रक्तचाप भी बढ़ जाता है

viii. सूर्य में जल चढ़ाना : भारत में सुबह उठकर सूर्य को जल चढ़ाते नमस्कार करने की परम्परा है। पानी के बीच से आने वाली सूर्य की किरणें जब आंखों में पहुंचती हैं तब हमारी आंखों की रौशनी अच्छी होती है और त्वचा सम्बन्धी रोगों के कीटाणु ख़त्म हो जाते है।

ix. सिर पर चोटी : हिंदू धर्म में ऋषि मुनी सिर पर चुटिया रखते थे आज भी लोग रखते हैं। जिस जगह पर चुटिया रखी जाती है उस जगह पर दिमाग की सारी नसें आकर मिलती हैं इससे दिमाग स्थिर रहता है और इंसान को क्रोध नहीं आता सोचने की क्षमता बढ़ती है।

x. व्रत रखना : आयुर्वेद के अनुसार व्रत करने से पाचन क्रिया अच्छी होती है और फलाहार लेने से शरीर का डीटॉक्सीफिकेशन होता है यानी उसमें से खराब तत्व बाहर निकलते हैं शोधकर्ताओं के अनुसार व्रत करने से कैंसर का खतरा कम होता है हृदय संबंधी रोगों,मधुमेह,आदि रोग भी जल्दी नहीं लगते।

xi. चरण स्पर्श करना : दिमाग से निकलने वाली ऊर्जा हाथों और सामने वाले पैरों से होते हुए एक चक्र पूरा करती है इसे कॉसमिक एनर्जी का प्रवाह कहते हैं इसमें दो प्रकार से ऊर्जा का प्रवाह होता है या तो बड़े के पैरों से होते हुए छोटे के हाथों तक या फिर छोटे के हाथों से बड़ों के पैरों तक।

xii. क्यों लगाया जाता है सिंदूर : शादीशुदा हिंदू महिलाएं सिंदूर लगाती हैं सिंदूर में हल्दी,चूना और मरकरी होता है यह मिश्रण शरीर के रक्तचाप को नियंत्रित करता है इससे तनाव कम होता है।

तुलसी के पेड़ की पूजा : तुलसी इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है लिहाजा अगर घर में पेड़ होगा तो इसकी पत्तियों का इस्तेमाल भी होगा और उससे बीमारियां दूर होती हैं।

7. अनेकता में एकता (Unity in Diversity)

भारत में अनेक प्रकार की जाति और धर्म के मानव रहते हैं जिनके रीति और रिवाज बिलकुल भिन्न है। भारत में हर राज्य का अनुसार भिन्नता आती है परन्तु इसके बावजूद यहाँ पर सामाजिक एकता को देखा जा सकता है। एक धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म में उत्साह पूर्वक योगदान करता हुआ पाया जाता है। कई बार तो यह भी पाया जाता है की दूसरों की जिम्मेदारियों में भी भागीदारी करते हुए उत्साहित होते हैं | यही भारत की एकता धरोहर के रूप में सामने आती है।

8. प्रकृति और अस्तित्व का सम्मान (वसुधैव कुटुंबकम। Respecting Nature & Existence)

भारत कई हजार सालों से प्रकृति के सम्मान रूप में पूजा करता आ रहा है। प्रत्येक के अस्तित्व को नमन करते हुए धन्यवाद देता आ रहा है। भारत ने वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को माना है जिसमे पूरा विश्व एक परिवार है। आज भी पूरी धरती, पूरी प्रकृति का सम्मान करता है चाहे सूरज का, चाँद का, नदियों का, पहाड़ का या वायु का सभी का सम्मान करता है। और यह अपेक्षा करता है की सारी प्रकृति सीमा रहित हो।

9. <u>हवन का महत्व</u>

फ्रांस के ट्रेले नामक वैज्ञानिक ने हवन पर रिसर्च की। जिसमें उन्हें पता चला की हवन मुख्यतः आम की लकड़ी पर किया जाता है। जब आम की लकड़ी जलती है तो फ़ॉर्मिक एल्डिहाइड नामक गैस उत्पन्न होती है।जो कि खतरनाक बैक्टीरिया और जीवाणुओं को मारती है ।तथा वातावरण को शुद्द करती है। इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिकों को इस गैस और इसे बनाने का तरीका पता चला। गुड़ को जलाने पर भी ये गैस उत्पन्न होती है।

टौटीक नामक वैज्ञानिक ने हवन पर की गयी अपनी रिसर्च में ये पाया की यदि आधे घंटे हवन में बैठा जाये अथवा हवन के धुएं से शरीर का सम्पर्क हो तो टाइफाइड जैसे खतरनाक रोग फ़ैलाने वाले जीवाणु भी मर जाते हैं और शरीर शुद्ध हो जाता है।
हवन की महत्ता देखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान लखनऊ के वैज्ञानिकों ने भी इस पर एक रिसर्च की । क्या वाकई हवन से वातावरण शुद्द होता है और जीवाणु नाश होता है ?अथवा नही ? उन्होंने ग्रंथों में वर्णित हवन सामग्री जुटाई और जलाने पर पाया कि ये विषाणु नाश करती है। फिर उन्होंने विभिन्न प्रकार के धुएं पर भी काम किया और देखा कि सिर्फ आम की लकड़ी १ किलो जलाने से हवा में मौजूद विषाणु बहुत कम नहीं हुए । पर जैसे ही उसके ऊपर आधा किलो हवन सामग्री डाल कर जलायी गयी तो एक घंटे के भीतर ही कक्ष में मौजूद बैक्टीरिया का स्तर ९४ % कम हो गया।
यही नहीं उन्होंने आगे भी कक्ष की हवा में मौजुद जीवाणुओ का परीक्षण किया और पाया कि कक्ष के दरवाज़े खोले जाने और सारा धुआं निकल जाने के २४ घंटे बाद भी जीवाणुओं का स्तर सामान्य से ९६ प्रतिशत कम था। बार-बार परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि इस एक बार के धुएं का असर एक माह तक रहा और उस कक्ष की वायु में विषाणु स्तर 30 दिन बाद भी सामान्य से बहुत कम था।
यह रिपोर्ट एथ्नोफार्माकोलोजी के शोध पत्र (resarch journal of Ethnopharmacology 2007) में भी दिसंबर २००७ में छप चुकी है। रिपोर्ट में लिखा गया कि हवन के द्वारा न सिर्फ मनुष्य बल्कि वनस्पतियों एवं फसलों को नुकसान पहुचाने वाले बैक्टीरिया का भी नाश होता है। जिससे फसलों में रासायनिक खाद का प्रयोग कम हो सकता है ।

Modern India

1. भारतीय रेल (Indian Railways)

भारतीय रेलवेज, एशिया के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क के रूप में जाना जाता है। यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है जो एक ही मैनेजमेंट के अंतर्गत चलाया जा रहा है। रेलवेज के लिए देश में 115,000 किमी के ट्रैक बनाए जा चुके हैं। हर दिन करीब 12,617 ट्रेनों पर 23 लाख यात्री सफर करते हैं। भारतीय रेल ट्रैक की कुल लंबाई 64 हजार किलोमीटर से ज्यादा है। वहीं अगर यार्ड, साइडिंग्स वगैरह सब जोड़ दिए जाएं तो यही लंबाई 1 लाख 10 हजार किलोमीटर से भी ज्यादा हो जाती है। इंडियन रेलवे के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को दुनिया के सबसे बड़े रूट रिले इंटरलॉकिंग सिस्टम के लिए गिनीज बुक्स में जगह मिली है। यूनेस्को ने भारतीय रेलवे के 4 साइट को वर्ल्ड हेरिटेज साइट के तौर पर शामिल किया है। यूनेस्को की सूची में दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे को 1999 में, मुंबई सीएसटी बिल्डिंग को 2004 में, नीलगिरि माउंटेन रेलवे को 2005 में और कालका-शिमला रेलवे को 2008 में शामिल किया गया।

2. आर एंड डी हब (R&D Hub)

भारत न केवल एशिया बल्कि विश्व के अनुसंधान और विकास के प्रमुख केंद्र बन गया है भारतीयों की क्षमता के चलते यह भारत की उल्लेखनीय उपलब्धि है। विश्व में 30% से अधिक कंपनियों की भारत में उनकी मौजूदगी है और यह मुख्य रूप से आरएंडडी और भारत के आईटी क्षेत्र के लिए आर एंड डी की अधिकतम क्षमता प्रदान करता है। यह भारत के बारे में घमंड करने का एक और कारण है।

3. भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian economy)

भारतीय इतिहास के अनुसार भारत के अर्थ वयवस्था की वजह से भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत को विश्व गुरु के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ कृषि, कला, व्यापार, धातु, सोना, चांदी, हिरे, मोती, पन्ना बहुत ही आम तौर से प्रचुर मात्रा में मिल जाता जाता था। आज भी हमारी कला कृतियों ने पुरे विश्व में लोहा मनवा रखा है। आज हम पश्चिमी सभ्यता और सुविधाओं के पीछे इतने भ्रमित हैं जितने वे यहां लूट पाट मचाने से पहले थे। ऐसे कई ख़ज़ानों के किस्से इतिहास में दर्ज हो चुके हैं जिनके बारे में सोचने मात्र पर खुद की अर्थवयवस्था पर गर्व होता है।

4. दूरसंचार उद्योग (Telecommunication industry)

भारतीय दूरसंचार उद्योग दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ता दूरसंचार उद्योग है, जिसके पास अगस्त 2010 तक 706.37 मिलियन टेलीफोन (लैंडलाइन्स और मोबाइल) ग्राहक तथा 670.60 मिलियन मोबाइल फोन कनेक्शन्स हैं। वायरलेस कनेक्शन्स की संख्या के आधार पर यह दूरसंचार नेटवर्क मुहैया करने वाले देशों में जनवादी गणराज्य भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश है।

5. आईटी उद्योग (IT Industry)

भारत का आईटी उद्योग बढ़ रहा है और तेजी से विकास कर रहा है और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा में बेहद योगदान दिया है। आईटी सेक्टर ने न केवल देश की राजस्व उत्पादन के लिए योगदान दिया है बल्कि कई लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान किए हैं। आईटी क्षेत्र ने विश्व के नक्शे में भारत को उजागर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अमेरिका के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा सॉफ्टवेयर विकासशील राष्ट्र है। यह भारत के उभरते उद्योगों में से एक है और बीपीओ क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, आईटी क्षेत्र की वृद्धि के लिए योगदान करना। 1 992 -2001 के दौरान आईटी सेवाओं की वार्षिक वृद्धि दर 50% से अधिक थी। वर्ष 2000-2001 के दौरान सॉफ्टवेयर उद्योग ने 8.26 बिलियन डॉलर टैब्स किए और यह क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि थी।

6. ऑटोमोबाइल उद्योग (Automobile Industry)

विश्व में दो पहिया वाहनों के निर्माण में भारत दूसरे स्थान पर है भारत का ऑटोमोबाइल उद्योग बहुत तेज गति से बढ़ रहा है और देश के आर्थिक विकास की दिशा में योगदान दिया है। भारत मोटर साइकिल की सबसे बड़ी निर्माता कंपनी है और वाणिज्यिक वाहनों के निर्माण में 5 वें स्थान पर है। यह कॉम्पैक्ट कारों का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता है और यह यूरोपीय देशों के लिए छोटी कारों के निर्यात का आधार है। भारत के ऑटोमोबाइल उद्योग ने हाल के वर्षों में एक महान विकास और विकास देखा है और यह भारत के उभरते उद्योगों में से एक है।

7. हस्तशिल्प (Handicrafts)

भारत अपनी जातीयता के लिए जाना जाता है। जहां तक कला और संस्कृति की बात है भारत दुनिया के सांस्कृतिक तौर पर समृद्ध देशों में से है। देश का ये सौभाग्य रहा है कि यहां बहुत कुशल कारीगर रहे हैं। उन्होंने भारतीय हस्तशिल्प को पूरी दुनिया में मशहूर किया है। कई ग्रामीण लोग आज भी कला के रचनात्मक वस्तुएं बनाकर अपनी आजीविका कमाते हैं। विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प बनाने के लिए भारत एक विनिर्माण हब है जो कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी मशहूर है। हस्तशिल्प सामान्य तौर पर हाथों से की गई शिल्पकारी या कारीगरी को कहा जाता है। कुशल लोग सरल उपकरणों से विभिन्न सामान बनाते हैं जिसमें उपभोक्ता सामान से लेकर कागज, लकड़ी, मिट्टी, शेल्स, चट्टान, पत्थर, धातु आदि के सजावटी सामान शामिल हैं। इन वस्तुओं को हस्तशिल्प कहा जाता है, क्योंकि ये पूरी तरह से हाथ से और बिना किसी मशीन की मदद से बनाए गए होते हैं।

8. पर्यटन उद्योग (Tourism Industry)

भारत को यात्रियों के लिए सबसे प्रतिष्ठित स्थलों में से एक में विकसित किया गया है और पर्यटन उद्योग हाल के वर्षों में वृद्धि देखी गई है। यह देश के जी.डी.पी. के लिए योगदान देता है और भारत के वैश्वीकरण में मदद करता है। भारत का पर्यटन उद्योग तेजी से उभरते उद्योगों में से एक है और इसमें बहुत अधिक विकास संभावनाएं हैं पर्यटन उद्योग ने बेरोजगारों की संख्या कम करने में मदद की है और देश के आर्थिक विकास की दिशा में योगदान दिया है। सरकार ने पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में बहुत सी पहल की है। आज, पर्यटन को कैरियर के रूप में चुना जाता है क्योंकि इसमें काफी संभावनाएं हैं।

9. असम सिल्क (Assam Silk)

असम रेशम अपनी विशिष्टता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है असम रेशम तीन प्रकार के हैं, अर्थात् सफेद पॅट, गोल्डन मुगा और गर्म एरी। व्हाइट पॉट भी भारत के अन्य हिस्सों में पाए जाते हैं लेकिन स्वर्ण मुगा और गर्म एरी केवल असम के लिए स्वदेशी हैं। ये रेशे जंगली रेशम के बने होते हैं और देश के राजस्व में योगदान करते हैं। इसके अलावा, इन रेशों को दुनिया के अन्य राष्ट्रों में निर्यात किया जाता है क्योंकि यह अपनी विशिष्टता के कारण लोगों द्वारा इसके लिए उत्सुक है।

Heritage of India (भारत की विरासत)

भारतीय संस्कृति और परंपराएं दुनिया के सबसे पुराने में से एक हैं। इसमें कला, वास्तुकला, नृत्य रूपों, संगीत और अन्य सभी सुंदर सांस्कृतिक परंपराओं की एक विशाल विविधता शामिल है। इन पदों को पढ़ना आपको भारतीय विरासत की एक झलक मिलेगी।

xxiii. **भगवान बुद्ध** - शांति के लिए बौद्ध शिक्षण

xxiv. **महात्मा गांधी** - दुनिया भर के युवाओं के लिए एक प्रेरणा

xxv. **डॉ बी आर अम्बेडकर** - भारतीय संविधान के वास्तुकार

xxvi. **अजंता गुफाएं** : भारतीय कला को व्यापक तौर पर प्रभावित किया था |

xxvii. **अमृतसर स्वर्ण मंदिर** : स्वर्ण मंदिर में दुनिया का सबसे बड़ा किचन है जहां प्रतिदिन करीब 1 लाख लोगों के लिए निशुल्क भोजन कराया जाता है।

xxviii. **वाराणसी** : 3000 वर्ष प्राचीन तो माना ही जाता है। काशी एक असाधारण यंत्र है। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का प्रसिद्ध नगर है। इसे 'बनारस' और 'काशी' भी कहते हैं। इसे हिन्दू धर्म में सर्वाधिक पवित्र नगरों में से एक माना जाता है और इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है.यह संसार के प्राचीनतम बसे शहरों में से एक और भारत का प्राचीनतम बसा शहर है। ये शहर सहस्रों वर्षों से भारत का, विशेषकर उत्तर भारत का सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्र रहा है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बनारस घराना वाराणसी में ही जन्मा एवं विकसित हुआ है। भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे हैं, जिनमें कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, त्रैलंग स्वामी, शिवानन्द गोस्वामी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद

बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम-पूज्य ग्रंथ रामचरितमानस यहीं लिखा था और गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन यहीं निकट ही सारनाथ में दिया था। वाराणसी को प्रायः 'मंदिरों का शहर', 'भारत की धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव की नगरी', 'दीपों का शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विशेषणों से संबोधित किया जाता है। पूरे काशी यनी बनारस शहर की रचना इसी तरह की गई थी। यह पांच तत्वों से बना है, और आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि शिव के योगी और भूतेश्वर होने से, उनका विशेष अंक पांच है। इसलिए इस स्थान की परिधि पांच कोश है। इसी तरह से उन्होंने सकेंद्रित कई सतहें बनाईं। यह आपको काशी की मूलभूत ज्यामिति बनावट दिखाता है। गंगा के किनारे यह शुरू होता है, और ये सकेंद्रित वृत परिक्रमा की व्याख्यां दिखा रहे हैं। सबसे बाहरी परिक्रमा की माप 168 मील है। यह शहर इसी तरह बना है और विश्वनाथ मंदिर इसी का एक छोटा सा रूप है। असली मंदिर की बनावट ऐसी ही है। यह बेहद जटिल है। इसका मूल रूप तो अब रहा ही नहीं। यहां 72 हजार शक्ति स्थलों यानी मंदिरों का निर्माण किया गया। एक इंसान के शरीर में नाडिय़ों की संख्या भी इतनी ही होती है। इसलिए उन लोगों ने मंदिर बनाये, और आस-पास काफी सारे कोने बनाये - जिससे कि वे सब जुड़कर 72,000 हो जाएं। तो यह नाडिय़ों की संख्या के बराबर है। यह पूरी प्रक्रिया एक विशाल मानव शरीर के निर्माण की तरह थी। इस विशाल मानव शरीर का निर्माण ब्रह्मांड से संपर्क करने के लिए किया गया था। इस शहर के निर्माण की पूरी प्रक्रिया ऐसी है, मानो एक विशाल इंसानी शरीर एक वृहत ब्रह्मांडीय शरीर के संपर्क में आ रहा हो। काशी बनावट की दृष्टि से सूक्ष्म और व्यापक जगत के मिलन का एक शानदार प्रदर्शन है। कुल मिलाकर, एक शहर के रूप में एक यंत्र की रचना की गई है।

xxix. **भीमबेटका :** यह आदि-मानव द्वारा बनाये गए शैल चित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है।

xxx. **बृहदेश्वर मंदिर** : इस मंदिर को यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है।

xxxi. **कोणार्क सूर्य मंदिर** : यह मंदिर बहोत बडे रथ के आकार में बना हुआ है, जिसमे कीमती धातुओ के पहिये, पिल्लर और दीवारे बनी है. यह मंदिर UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साईट में भी शामिल है और साथ ही यह मंदिर भारत के 7 आश्चर्यो में भी शामिल है.

xxxii. **कुंभ मेला** : भारतीय संस्कृति इस धरती पर सबसे जटिल और रंगबिरंगी संस्कृति है।

xxxiii. **कमल मंदिर** (बहाई उपासना मंदिर) : मंदिर को कमल के आकार का बनाने का मुख्य उदेश्य क्योंकि कमल का फूल कीचड़ में रहकर पवित्रता तथा शांति का उदेश्य देता है।

xxxiv. **ताजमहल** : ताज महल पुरे के सात अजूबों में से एक है जिसे पुरे विश्व में सराहा गया है। मकबरे की छत की छेद से टपकते पानी की बूंद के पीछे का रहस्य। ताजमहल का आधार एक ऐसी लकड़ी पर बना हुआ है जिसे मजबूत बनाये रखने के लिए नमीं की जरूरत होती है, जिसे नज़दीक ही बहने वाली यमुना बनाए रखती है ऐसे और भी कई रहस्य है जिसने ताज महल को अजूबा बना रखता है।

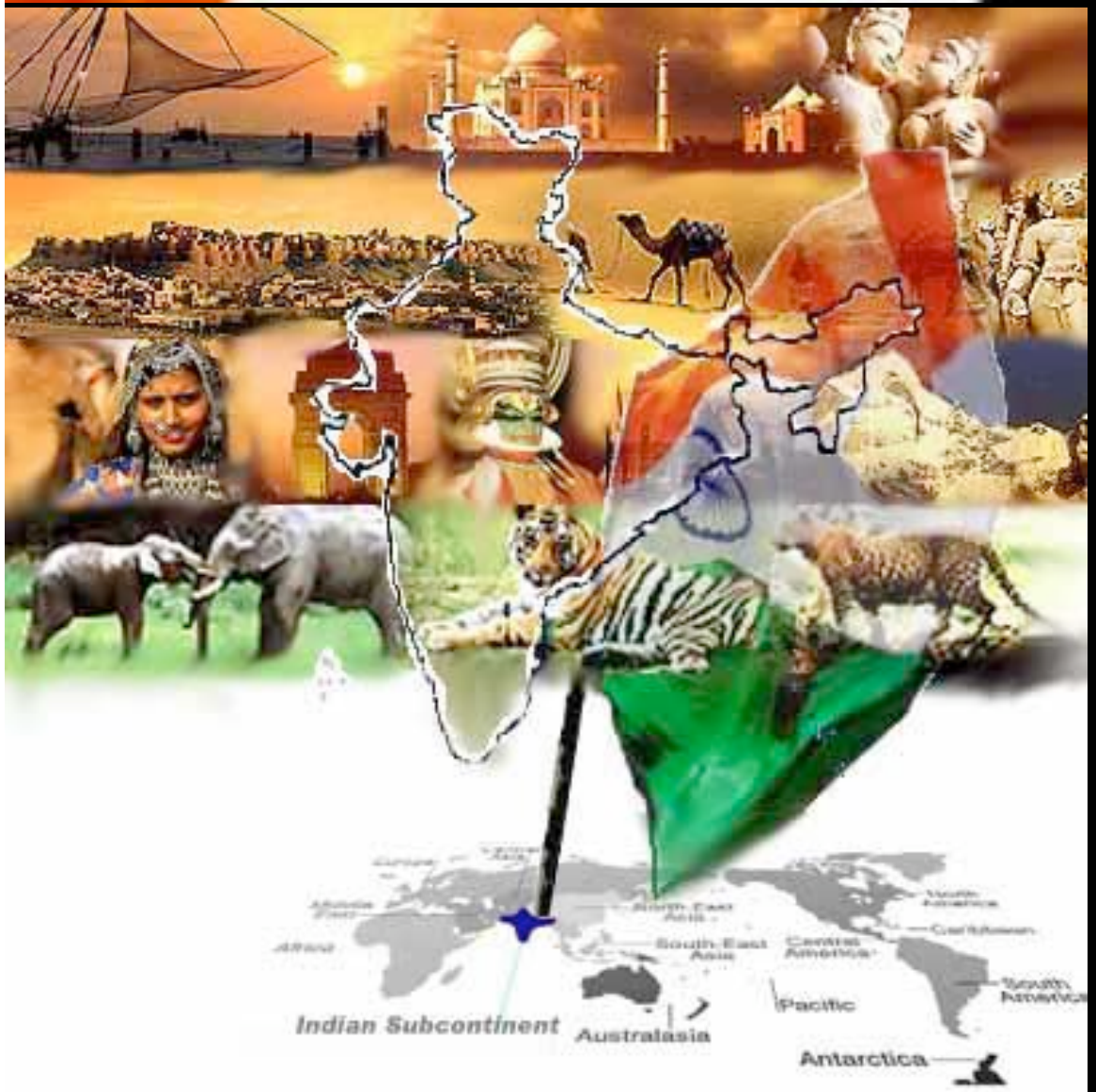

India's
contribution
to the rest of
the world

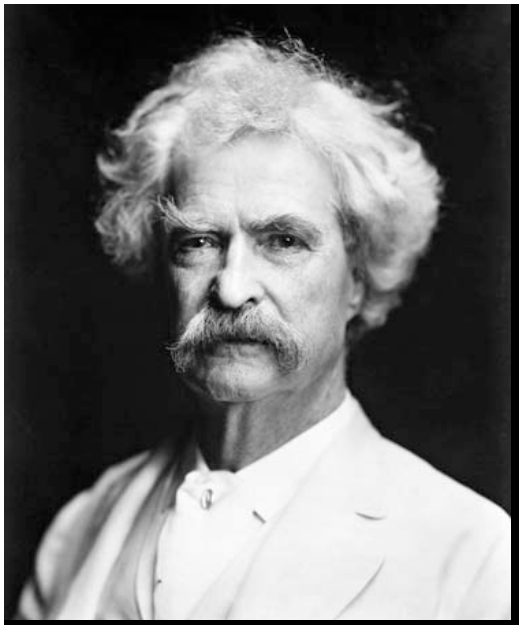

"India is the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of history, the grandmother of legend, and the great grand mother of tradition. Our most valuable and most constructive materials in the history of man are treasured up in India only"

Mark Twain

"India was the motherland of our race
and Sanskrit the mother of Europe's languages.
India was the mother of our philosophy,
of much of our mathematics, of the ideals embodied in christianity... of self-government and democracy.
In many ways, Mother India is the mother of us all."

- Will Durant
- American Historian 1885-1981

“If there is one place on the face of this Earth where all the dreams of living men have found a home from the very earliest days when Man began the dream of existence, it is **India."**

Romain Rolland - French Philosopher 1886-1944

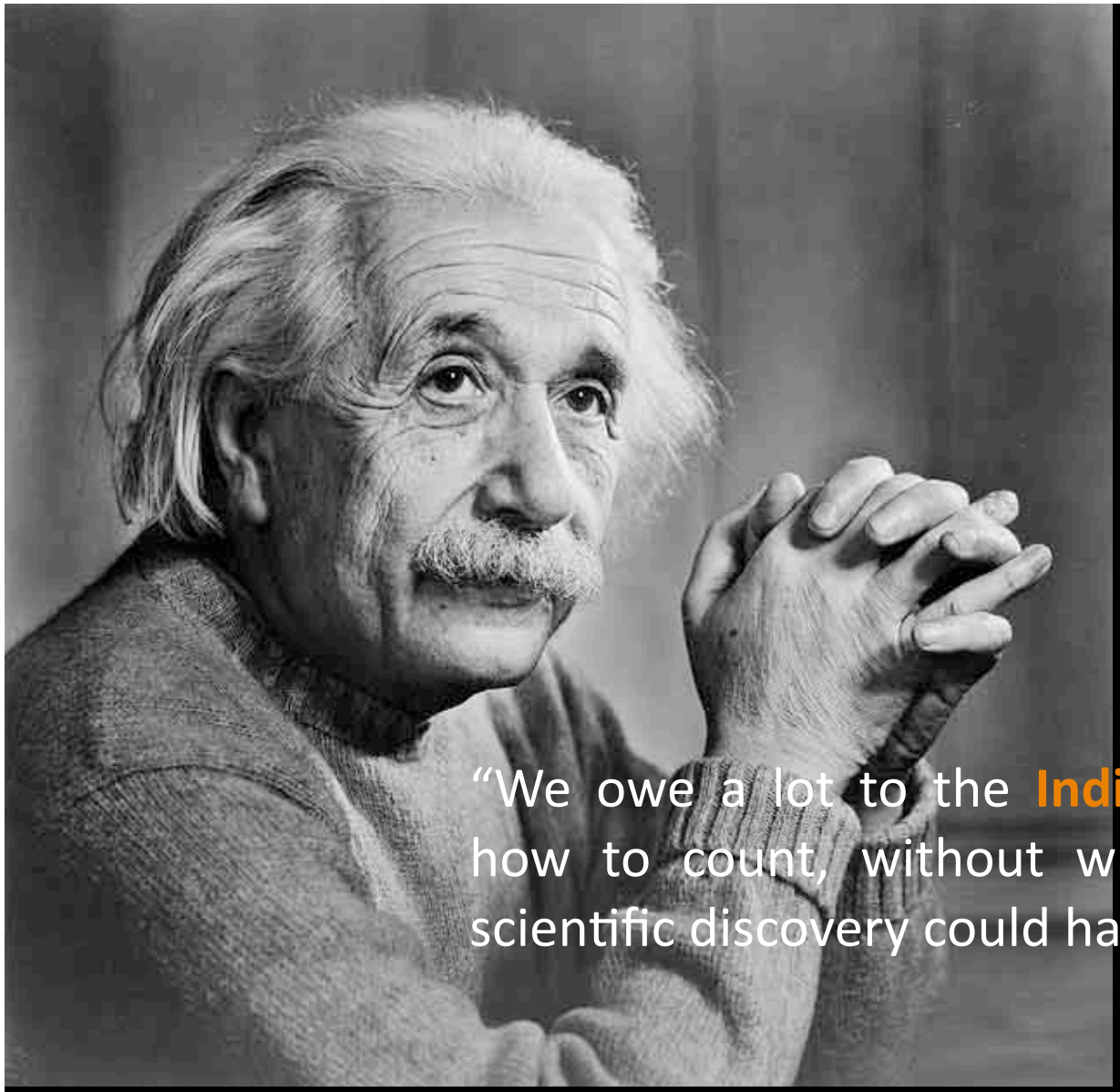

"We owe a lot to the **Indians,** who taught us how to count, without which no worthwhile scientific discovery could have been made"

Albert Einstein

"India conquered and dominated China culturally for 20 centuries without ever having to send a single soldier across her border."

Hu Shih, former Ambassador of China to USA

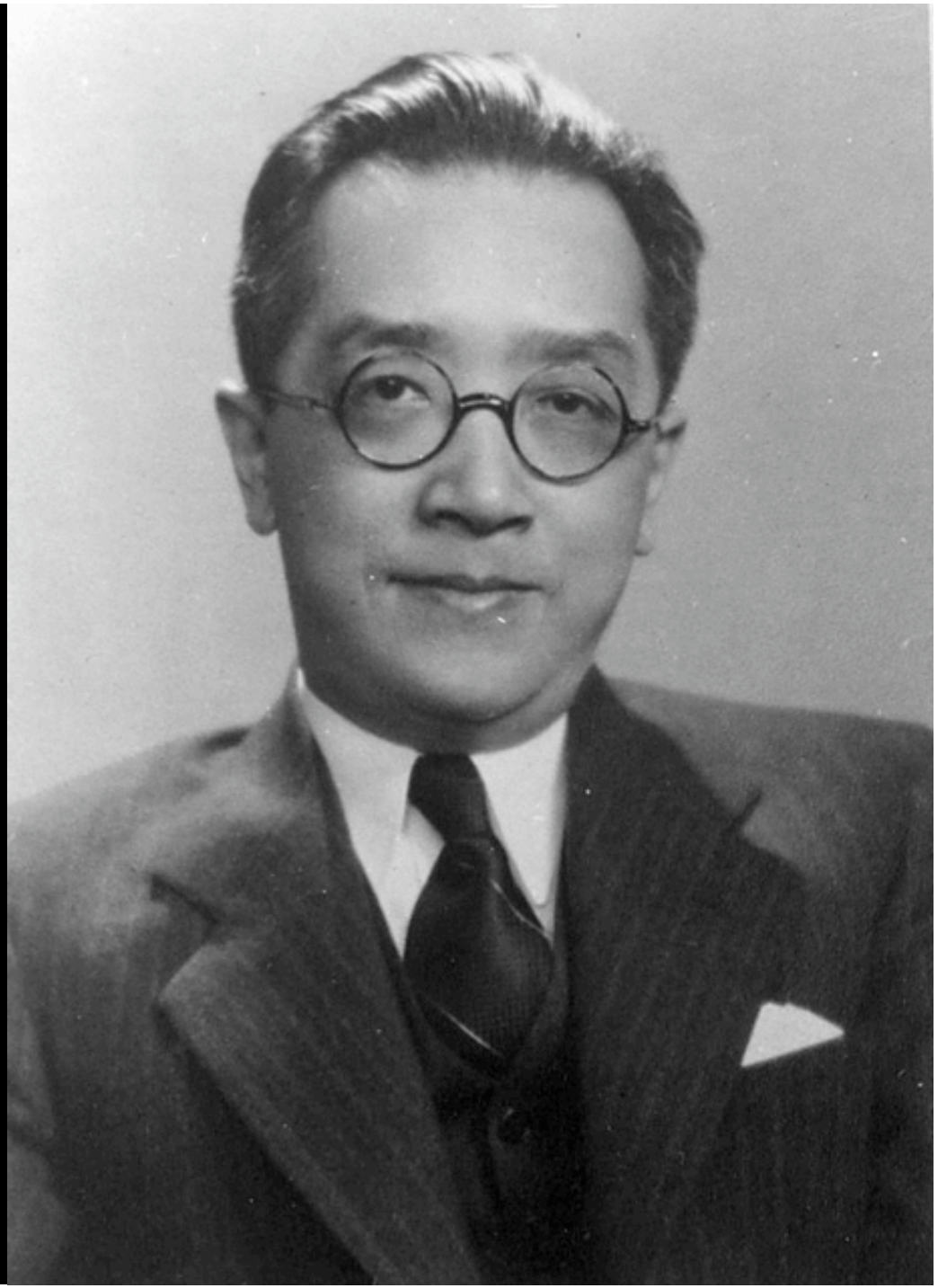

"Many of the advances in the sciences
that we consider today to have been made in Europe were in fact **made in India centuries ago"**

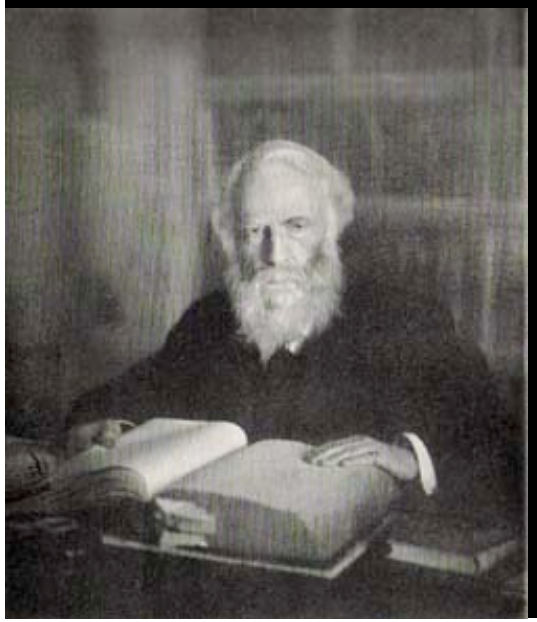

Grant Duff British Historian of India

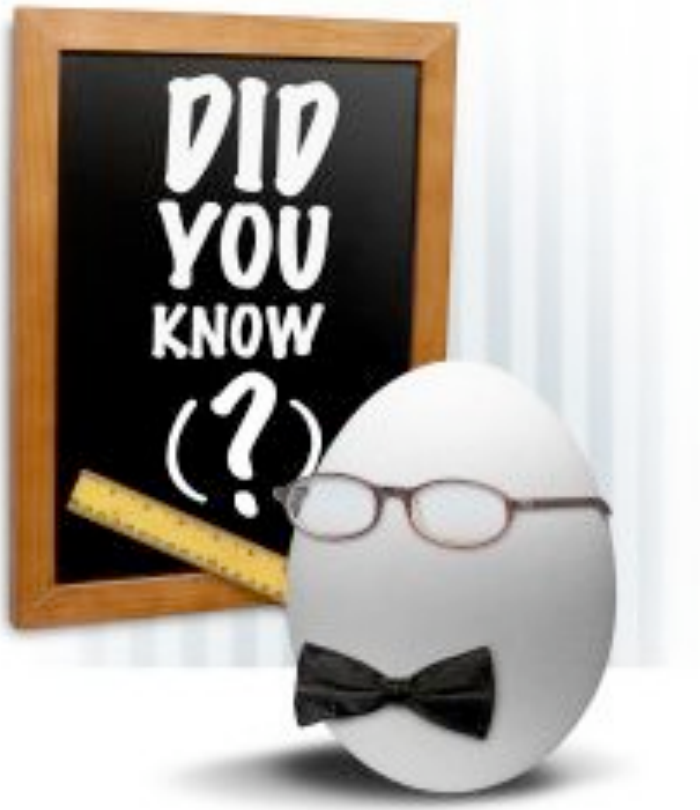
DID
YOU
KNOW
(?)

India never invaded any country in her
last 10,000 years of history.

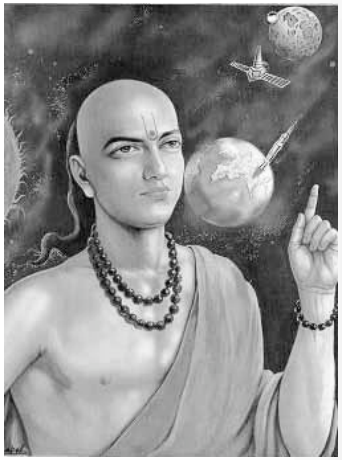

India invented the Number System. Zero was invented by Aryabhatta.

The place value system, the decimal system was developed in India in 100 BC.

śūnya = void

kha = sky

ākāśa = space

bindu = dot

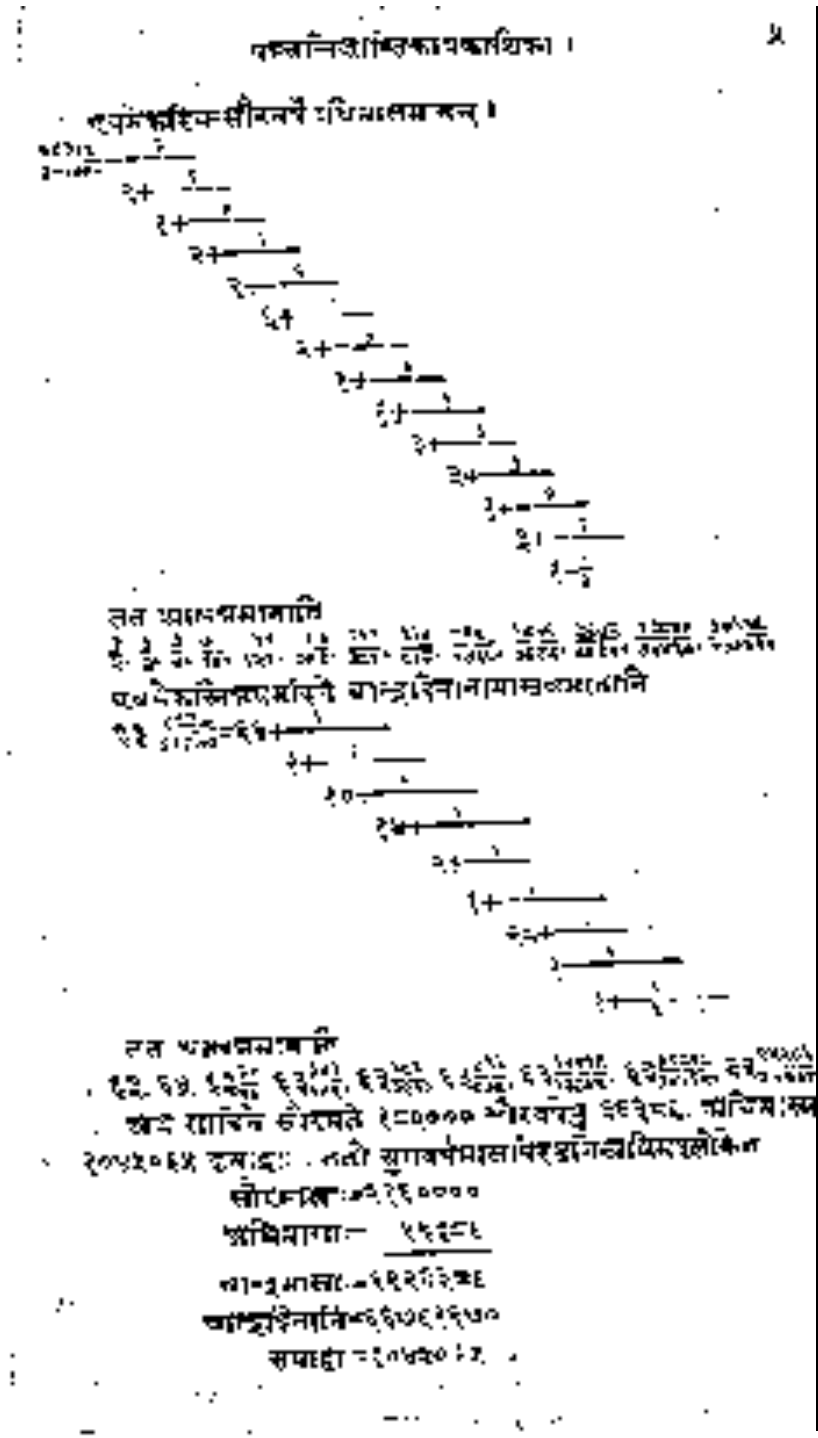

This method of graduated calculation was documented in the Pancha-Siddhantika (Five Principles) in the 5th Century But the technique is said to be dating from Vedic times circa 2000 B.C.

The value of pi was first calculated by Budhayana, & he explained the concept of what is now known as the Pythagorean Theorem

British scholars have last year (1999) officially published that Budhayan's works date back to the 6th Century, which is long before the European mathematicians

3.14159265263124534235679534235453
46665780120305069239693069493968438285743893893428098090765345324535422
85828685891943192301402971286501438285743893893428098090765345324535422
22858286858919431923014029712865016043724611234482374372382991948483922
94123834341432456457749455059435345349494948714707895311231234567678900
98865567453523523434143245645604372461123448237437238299194848392941234
84945505943534534949494871470789531123123456767890988655674535235256542
92439468358578389671151117428342492340449609834092834091834019484573452
90348109384109482507921893401985095803129473425809348094823340928340967
67290734092842309848203948091238490312484902384092348209810934812093812
23534578980979898567456745634112134344546477870078678463423464747919432

Algebra,
Trigonometry &
Calculus
came from India.

$$\frac{d}{d\,\text{☁}} \int_{\pi}^{\text{☀}} \text{☀}\; d\,\text{☀}$$

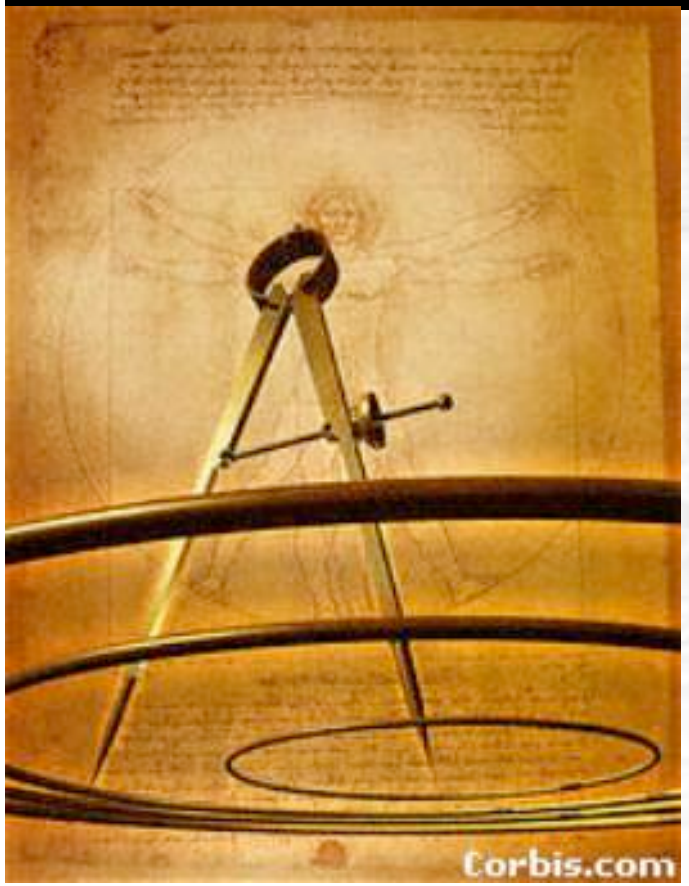

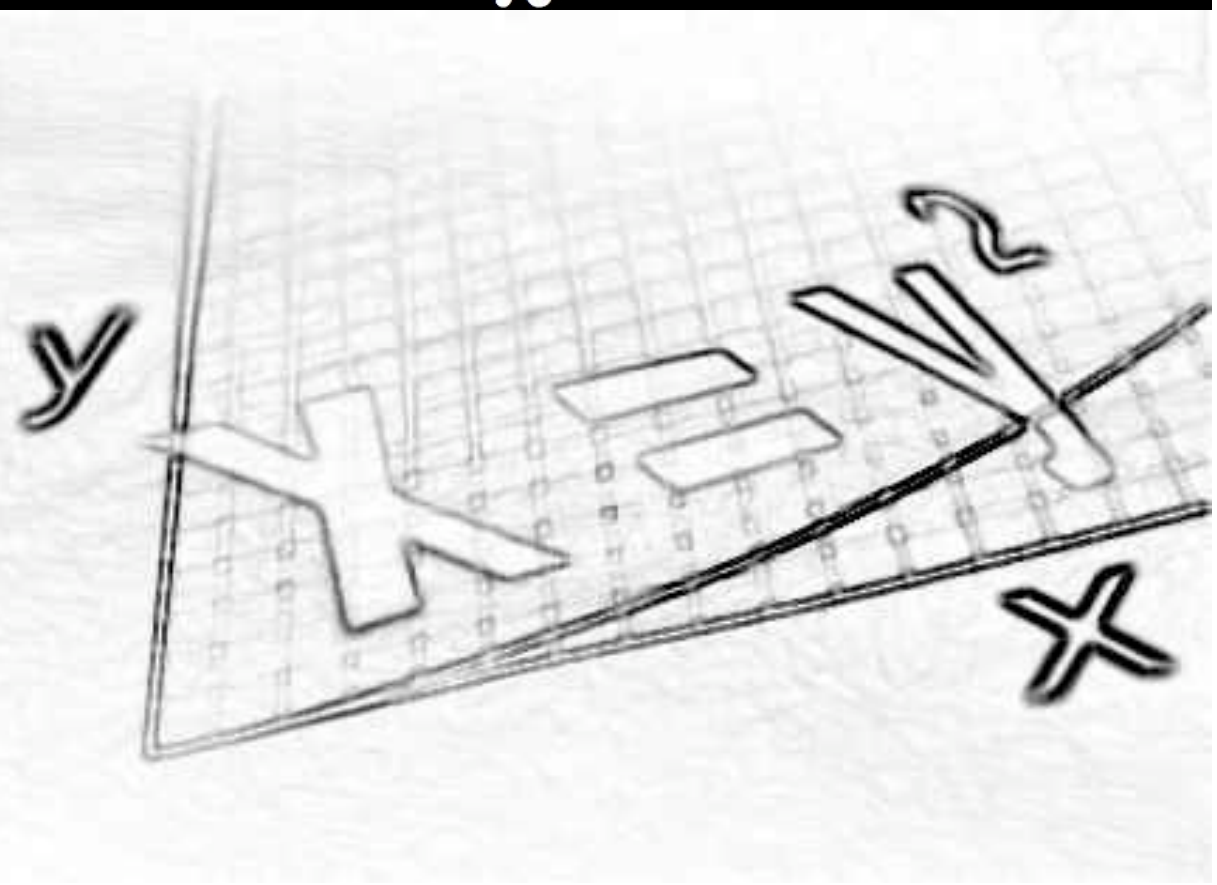

$$ax^2+bx+c=o$$

$$x=\frac{-b\pm\sqrt{b^2-4ac}}{2a}$$

Quadratic equations were by Sridharacharya
in the 11th Century

The largest numbers the Greeks and the Romans used were 10**6(10 to the power of 6) whereas Hindus used numbers as big as 10**53(10 to the power of 53) with specific names as early as 5000 BCE during the Vedic period

Even today, the largest used number is Tera 10**12(10 to the power of 12)

The World's first university was established in Takshila in 700BC.

More than 10,500 students from all over the world studied more than 60 subjects.

The University of Nalanda built in the 4th century BC was one of the greatest achievements of ancient India in the field of education.

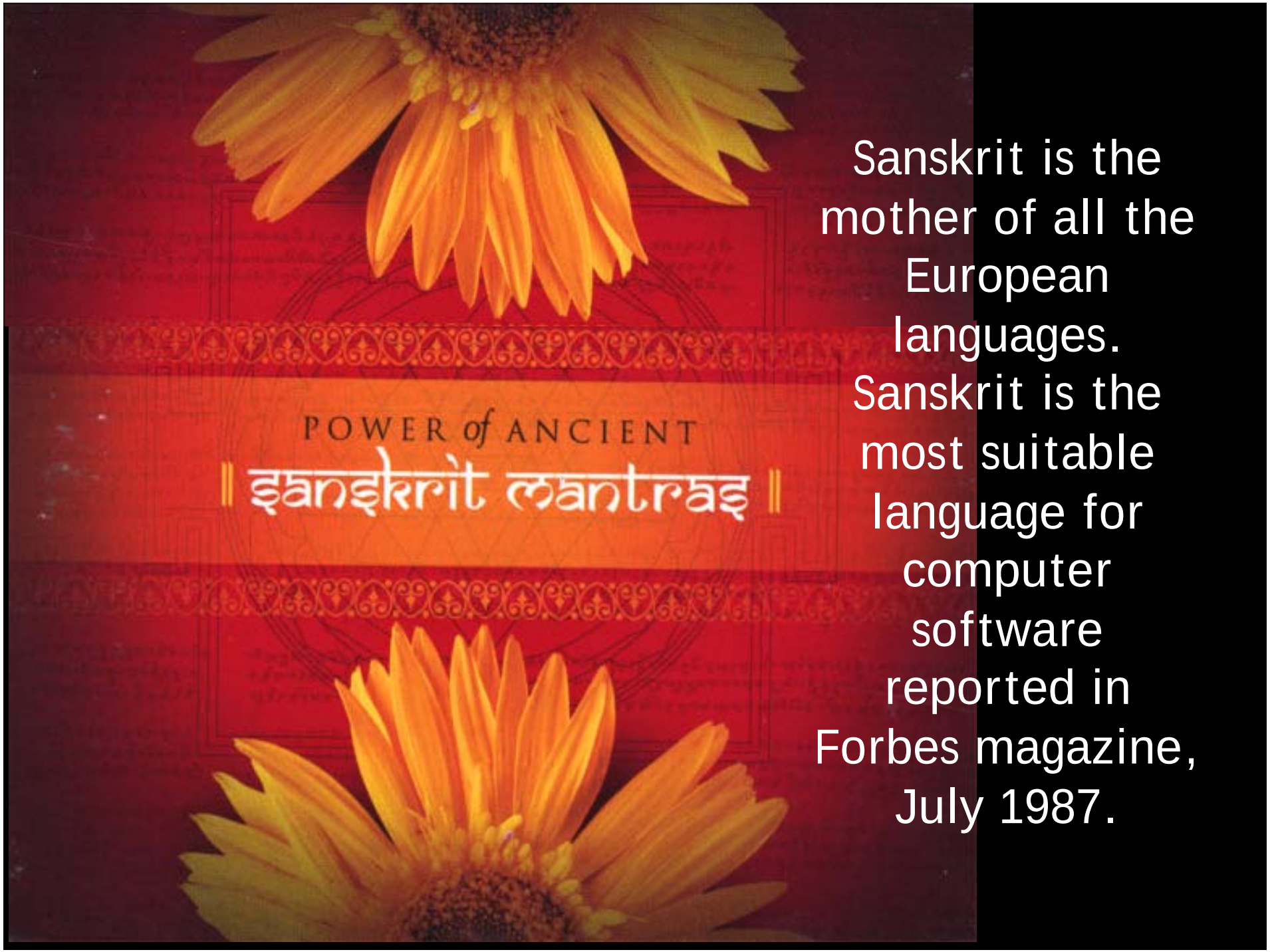

Sanskrit is the mother of all the European languages. Sanskrit is the most suitable language for computer software reported in Forbes magazine, July 1987.

According to the Forbes magazine, Sanskrit is the most suitable language for computer software

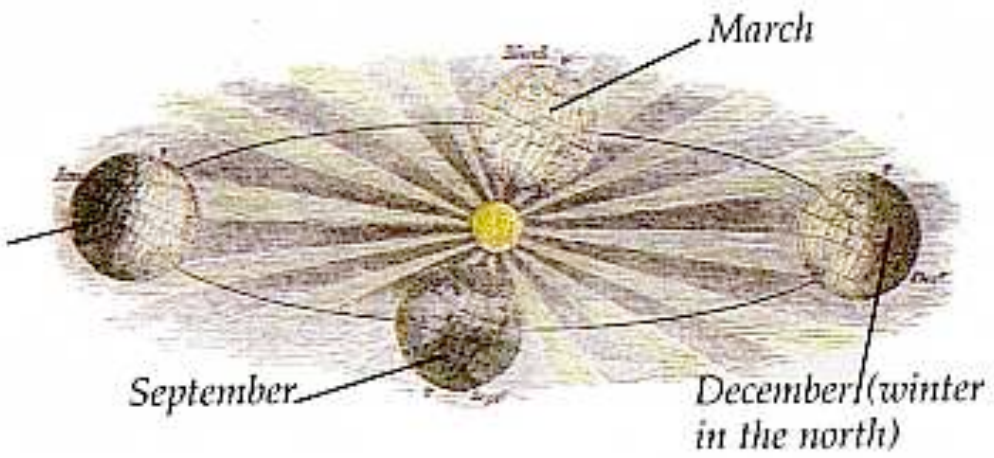

Bhaskaracharya calculated the time taken by the earth to orbit the sun hundreds of years before the astronomer Smart.

Time taken by earth to orbit the sun: (5th century)
365.258756484 days

Ayurveda is the earliest school of medicine known to humans.Charaka, the father of medicine consolidated Ayurveda 2500 years ago.

Today Ayurveda is fast regaining its rightful place in our civilization.

The art of Navigation was born in the river Sindh 6000 years ago.

The very word Navigation is derived from the Sanskrit word NAVGATIH.

The word navy is also derived from Sanskrit 'Nou'.

According to the Gemological Institute of America, up until 1896, India was the only source for diamonds to the world.

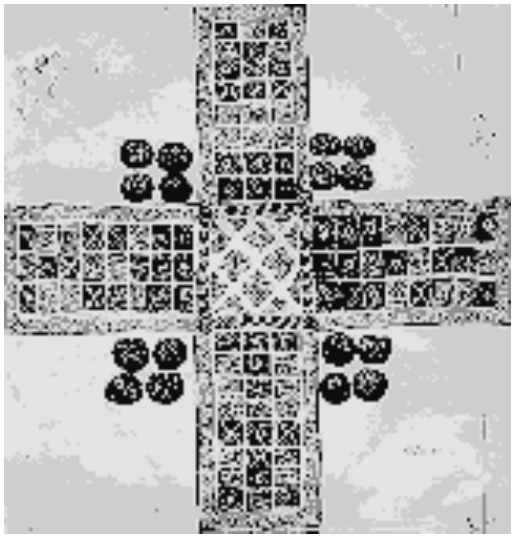

Chess (Shataranja or AshtaPada) was invented in India

Sushruta is the father of surgery.

2600 years ago he and health scientists of his time conducted complicated surgeries like cesareans, cataract, artificial limbs, fractures, urinary stones and even plastic surgery and brain surgery. Usage of anesthesia was well known in ancient India

Over 125 surgical equipment were used

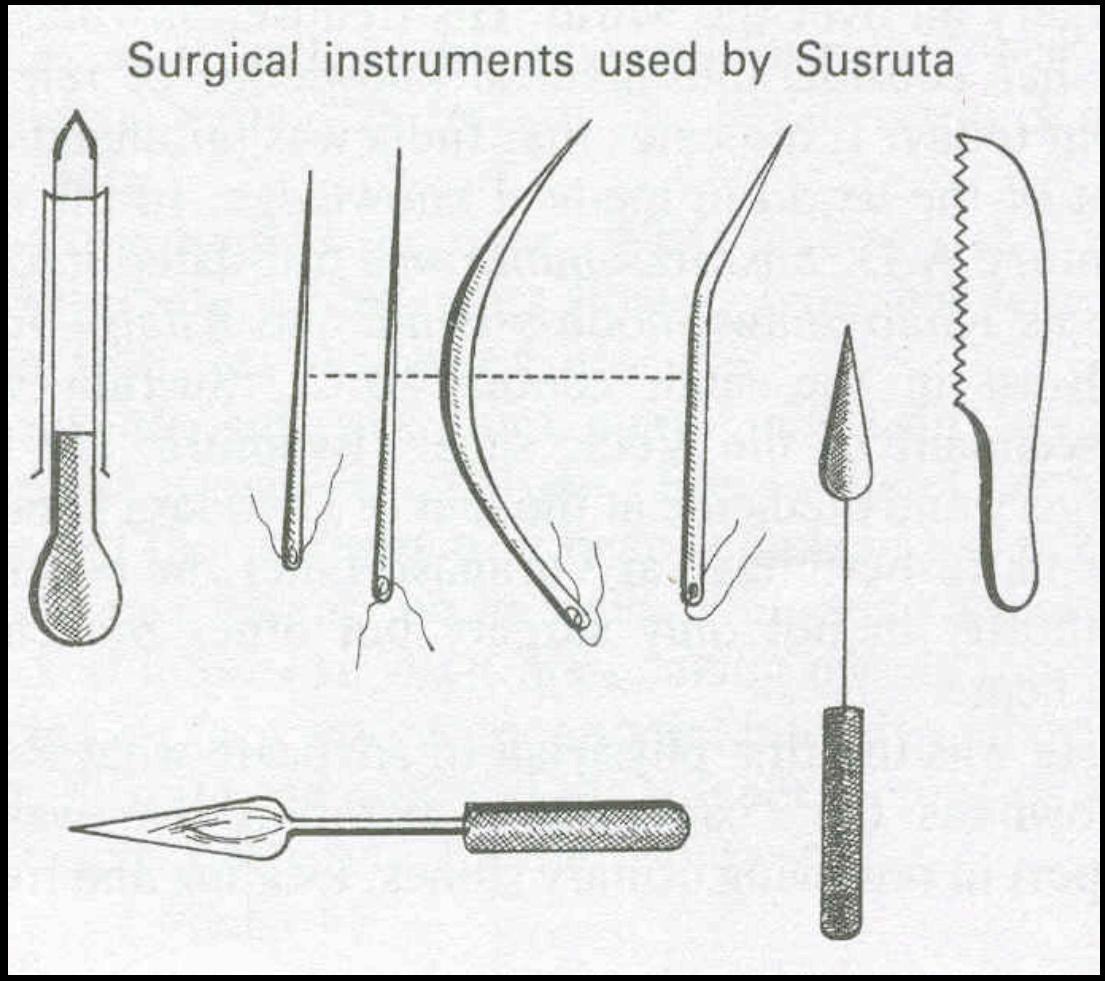

Deep knowledge of anatomy, physiology, etiology, embryology, digestion, metabolism, genetics and immunity is also found in many texts

The earliest reservoir and dam for irrigation was built in Saurashtra

Ancient Indus Civilization

When many cultures were only nomadic forest dwellers over 5000 years ago, Indians established Harappan culture in Sindhu Valley(Indus Valley Civilization)

Sare Jaha Se Accha
Hindusitaan Hamara

Want to know more???

India's Contribution to Production Technology and Mechanical Engineering

In ancient times, commodities like sugar, palm oil, coconut oil, cotton cloth, clarified butter, cast iron, tin sheets, copper vessels, dyes and pigments like cinnabar (ochre), indigo and lac, perfumes like sandalwood oil, musk tamarind, costus, macir, camphor, and even crude glass crockery were being exported from India

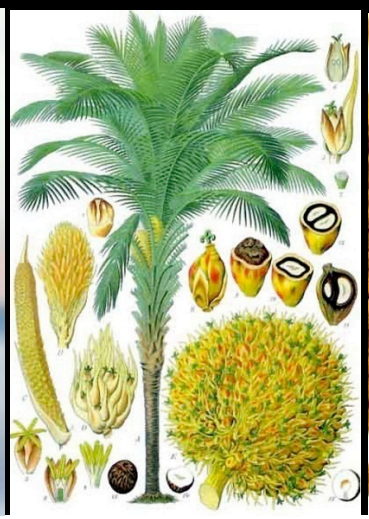

The earliest recorded use of copperware in India has been around 3000 B.C.

The findings at Mohen-jo-daro and Harappa, bear this out The earliest documented observation of smelting of metals in India is by Greek Historians in the 4th Century B.C

India's Contribution to -

ASTRONOMY

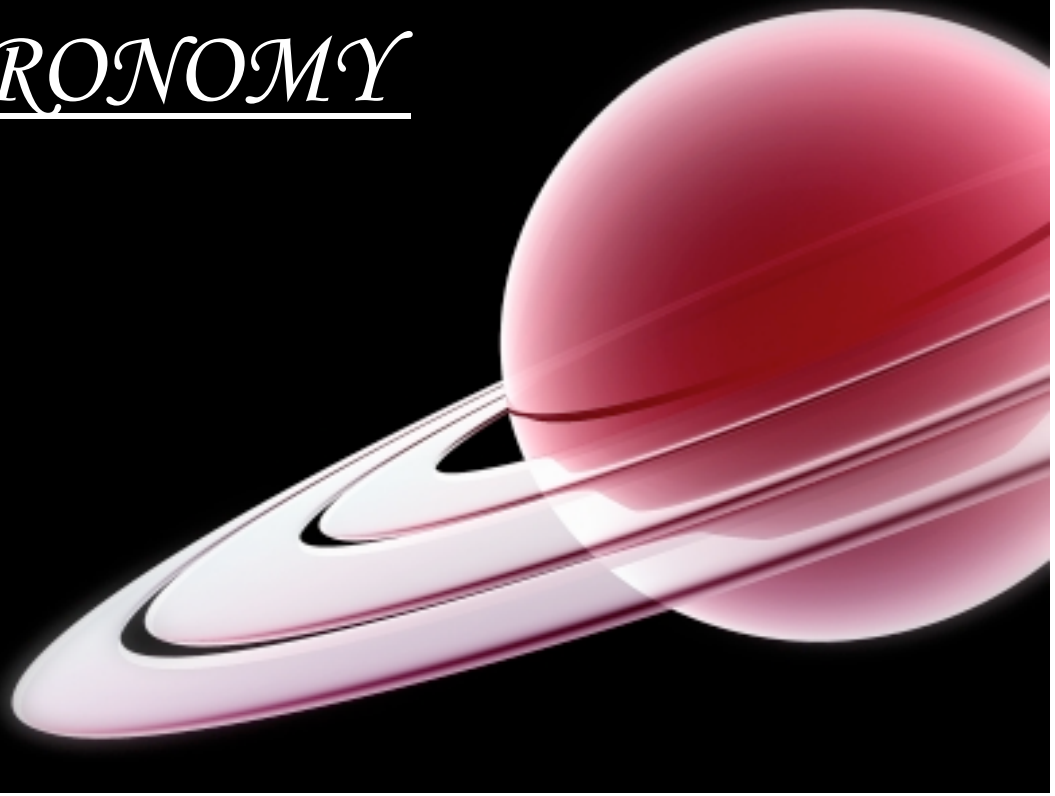

"**In India** I found a race of mortals living upon the Earth. but not adhering to it. Inhabiting cities, but not being fixed to them, possessing everything but possessed by nothing". - Apollonius Tyanaeus

Greek Thinker and Traveller 1st Century AD

In India the first references to astronomy are to be found in the Rig Veda which is dated around 2000 B.C

The Calculation of Eclipses And The Earth's Circumference

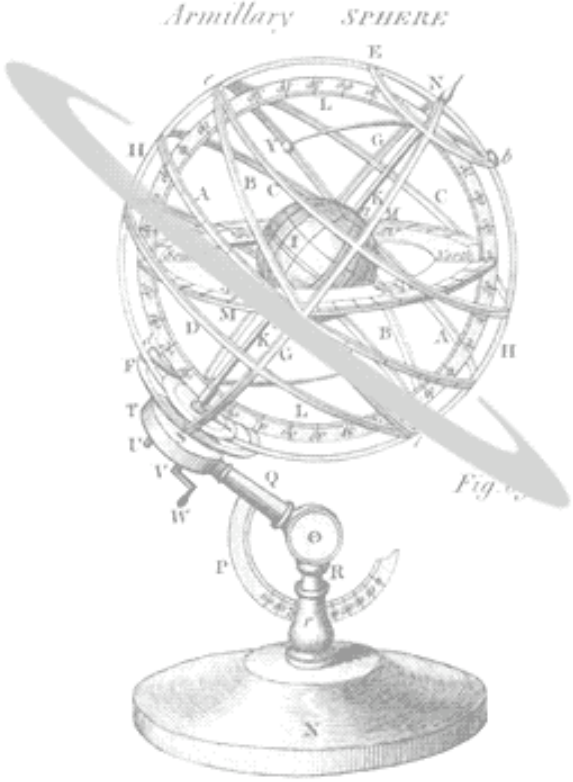

The Heliocentric Theory of Gravitation

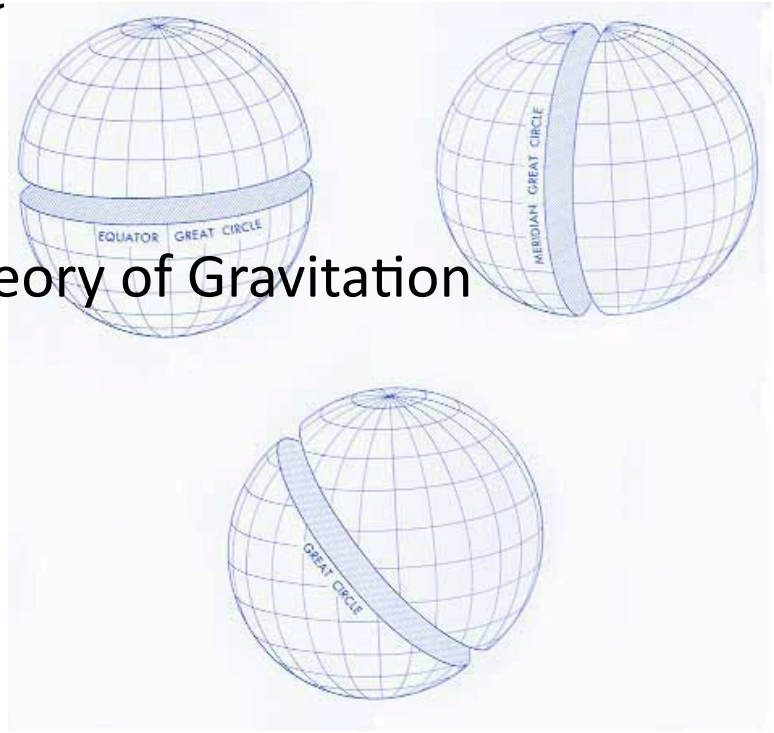

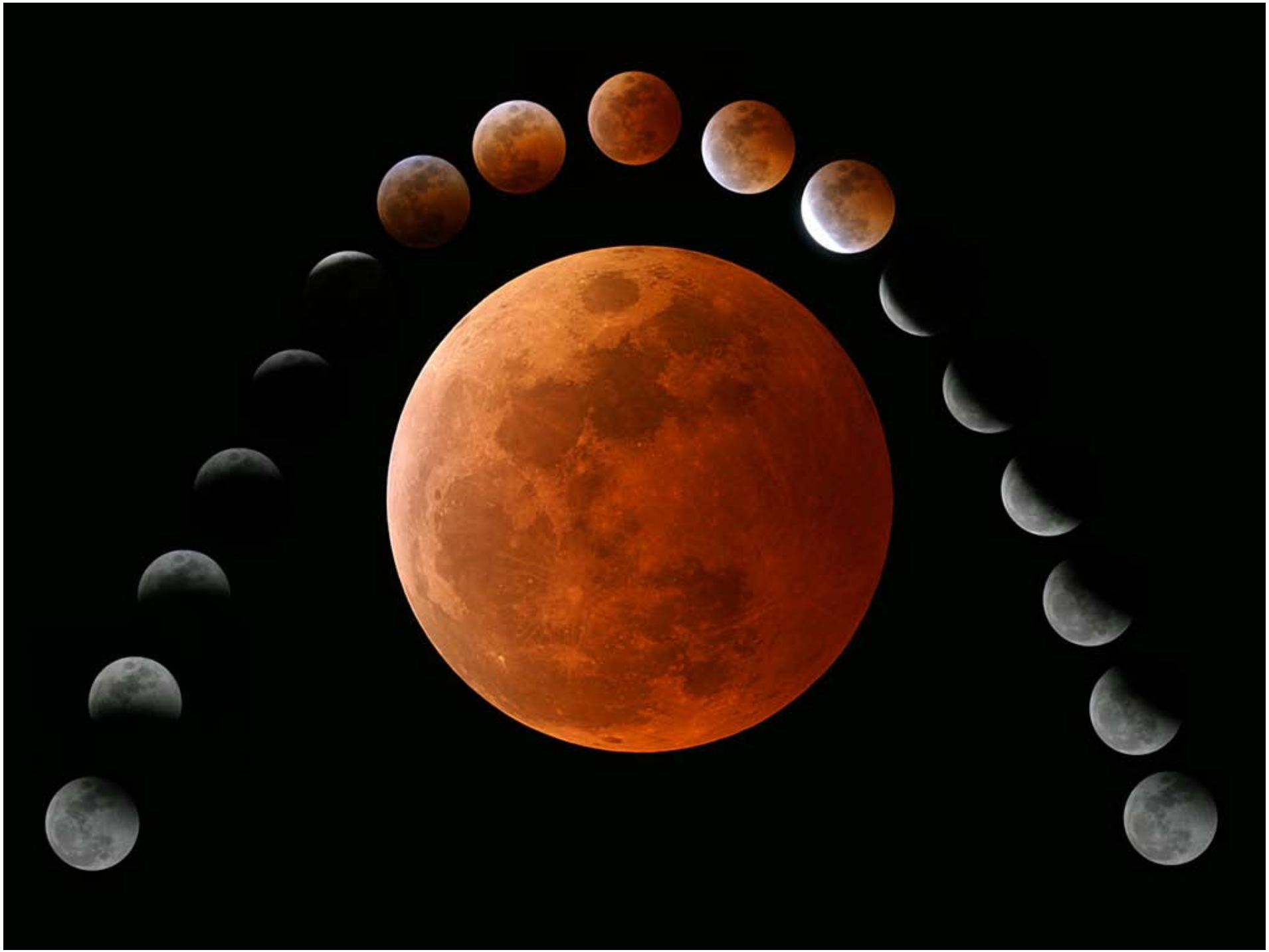

This fascmile is from the Pancha-siddhantika (Five Principles) dated around the 5th century. This text graphically shows how eclipses are to be calculated. Thus this text foreshadows what Westeren Astronomers propounded nearly one thousand years later

India's Contribution to –
PHYSICS & CHEMISTRY

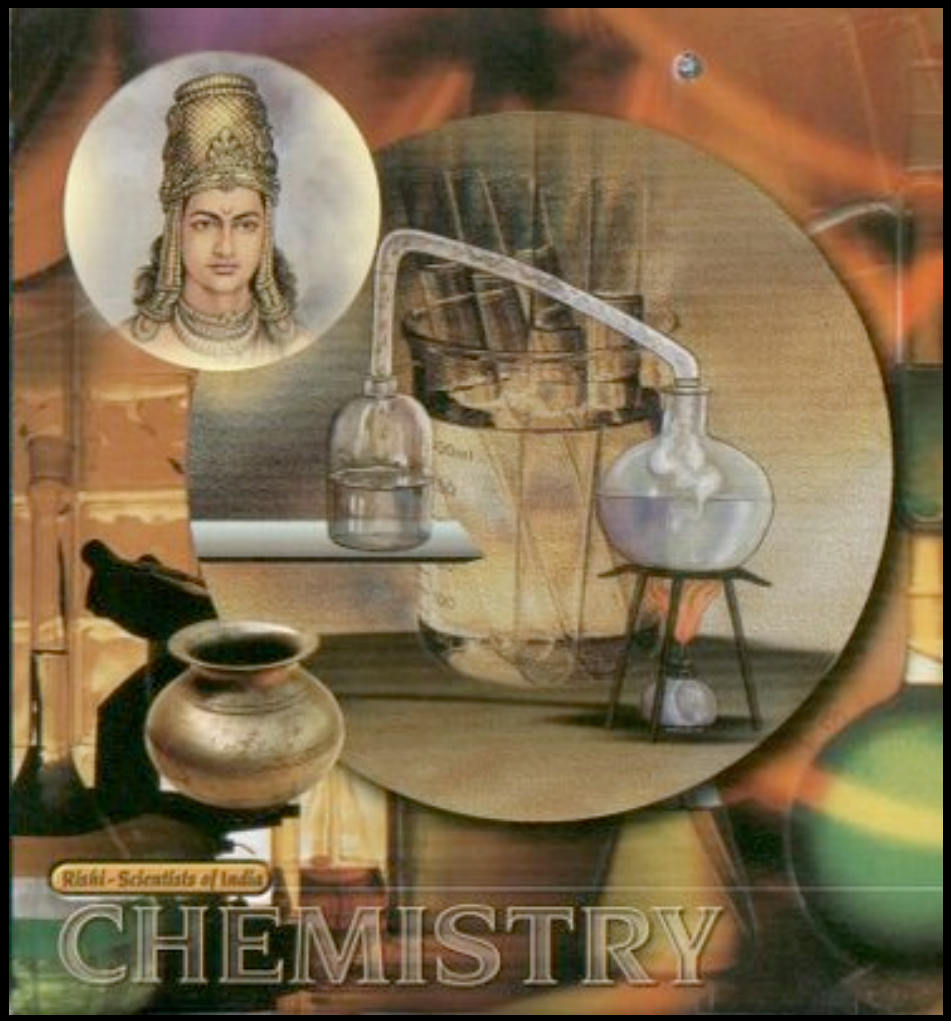

"Ancient Indian theories lacked an empirical base, but they were brilliant imaginative explanations of the physical structure of the world, and in a large measure, agreed with the discoveries of modern physics"

A.L. Basham, Australian Indologist

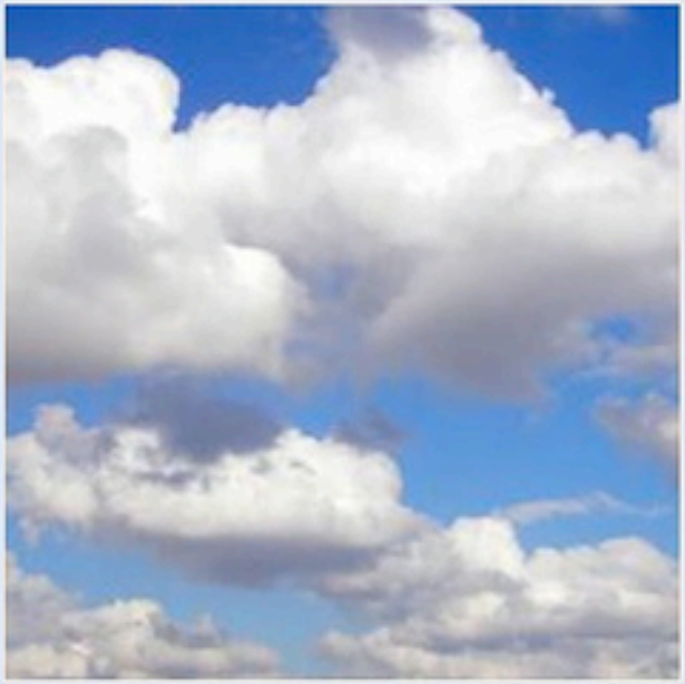

The Five Basic Physical Elements

Anu & Parmanu

Indian Ideas
on Atomic Physics

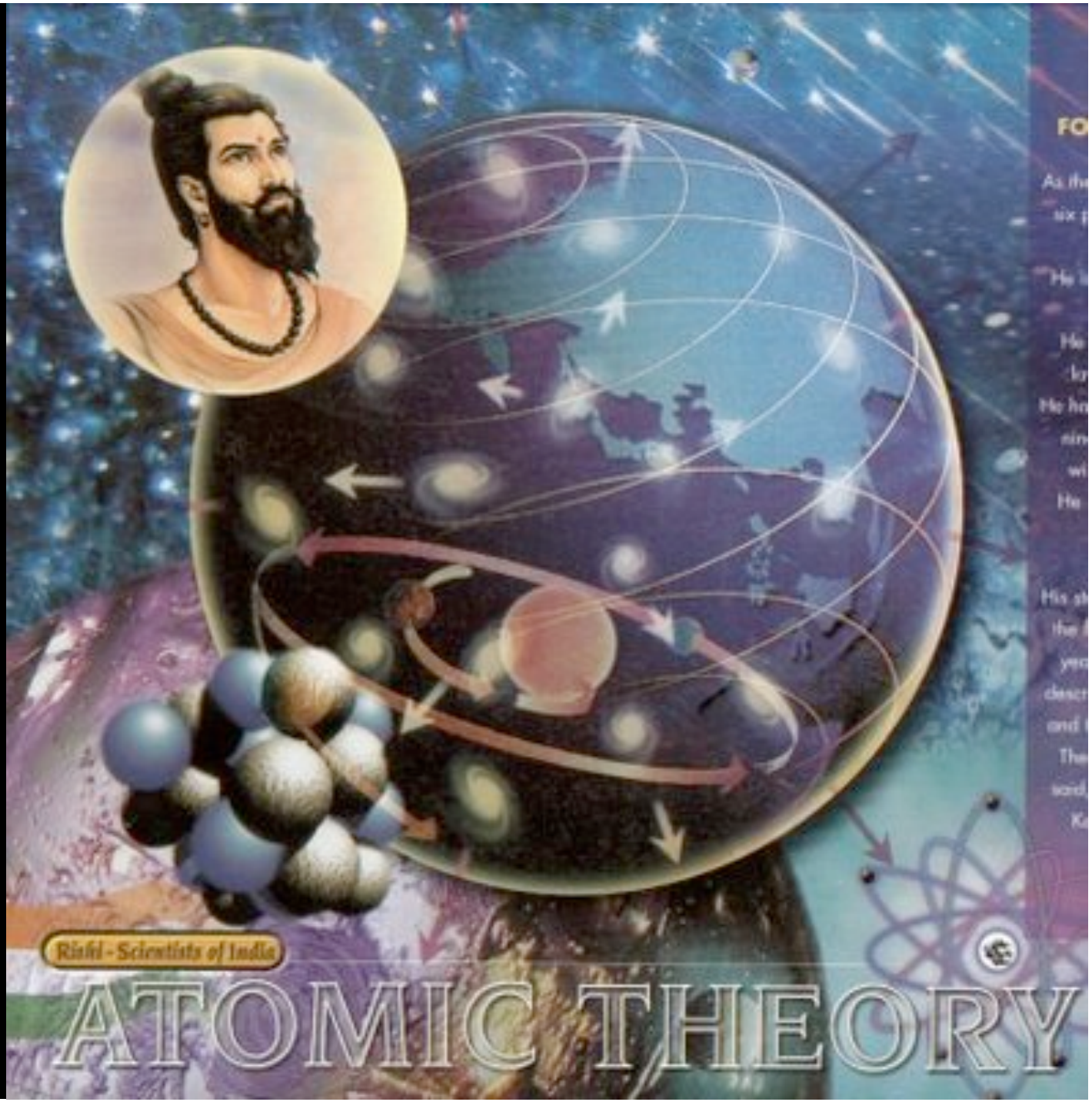

India's Contribution to
MEDICAL SCIENCE

"In the great teaching of the Vedas, there is no touch of sectarianism. It is of all ages, climes and nationalities and is the royal road for the attainment of the Great Knowledge“

Thoreau, American Thinker

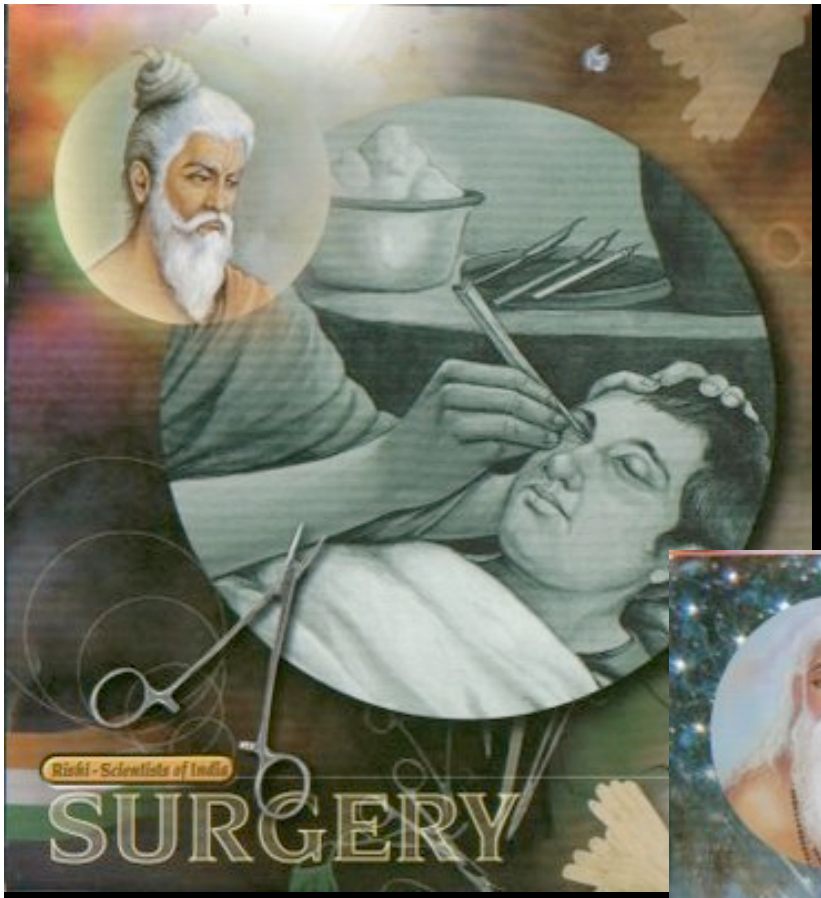

SHASTRAKARMA
THE ART OF SURGERY

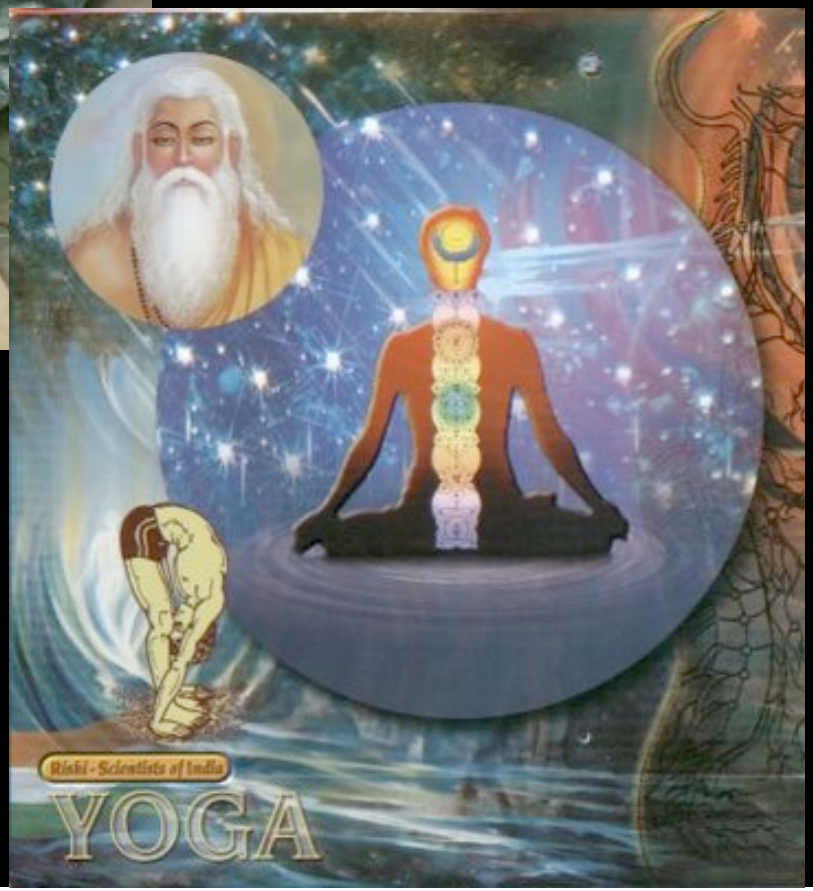

AYURVEDA
THE SCIENCE OF LONGEVITY

YOG - HEALTH OF THE BODY AND MIND

India's Contribution to

THE FINE ARTS

"If I am asked which nation had been advanced in the ancient world in respect of education and culture then I would say it was **– India”**

Max Muller German Indologist

MUSIC

PAINTING

LINGUISTICS

DANCE

THEATRE

SPORTS AND GAMES

- In Ancient India

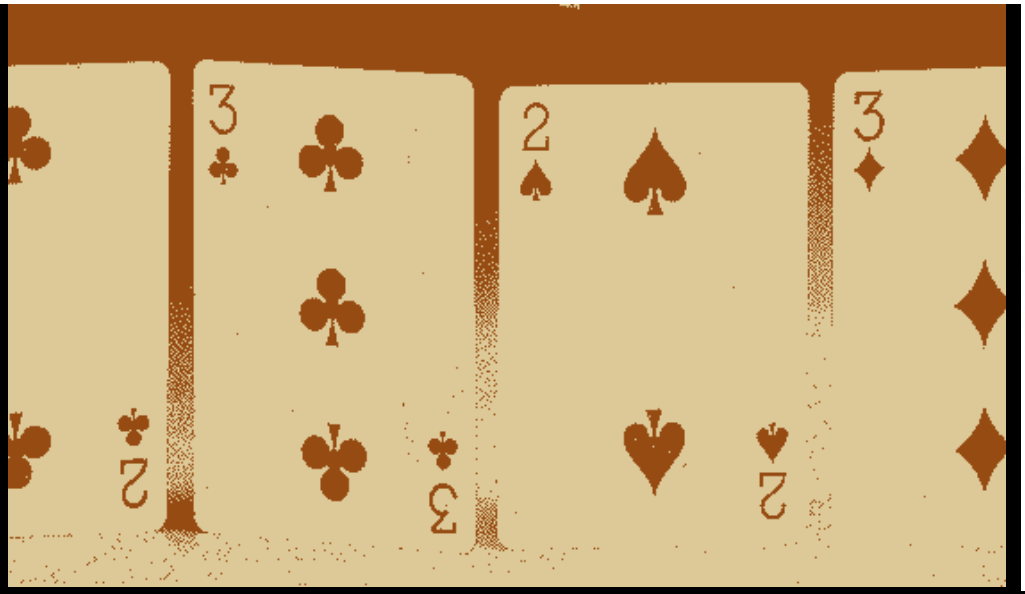

Chess, Snakes and Ladders, Playing Cards, Polo, the martial arts of Judo and Karate

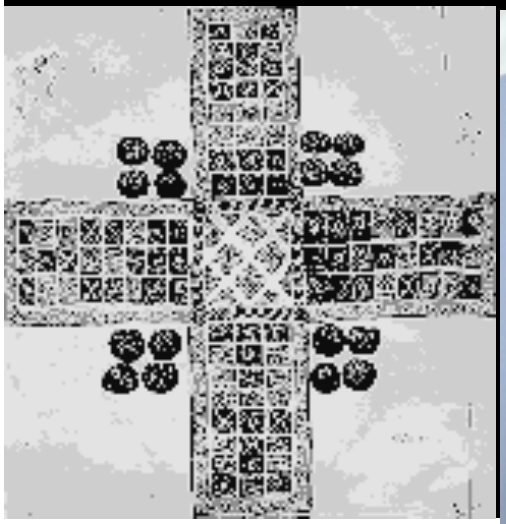

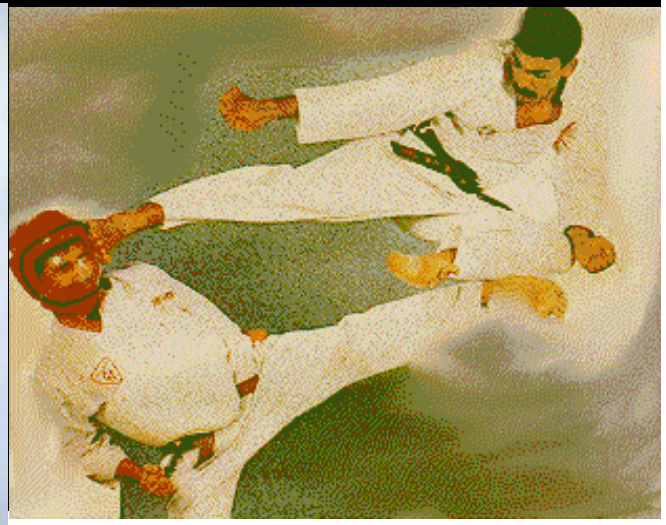

India's Contribution to –

PHILOSOPHY

"In religion, India is the only millionaire .... The One land that all men desire to see and having seen once, by even a glimpse, would not give that glimpse for all the shows of all the rest of the globe combined".

Mark Twain, American Author 1835-1910

MEDITATION AND RENUNCIATION

AHIMSA - NON VIOLENCE

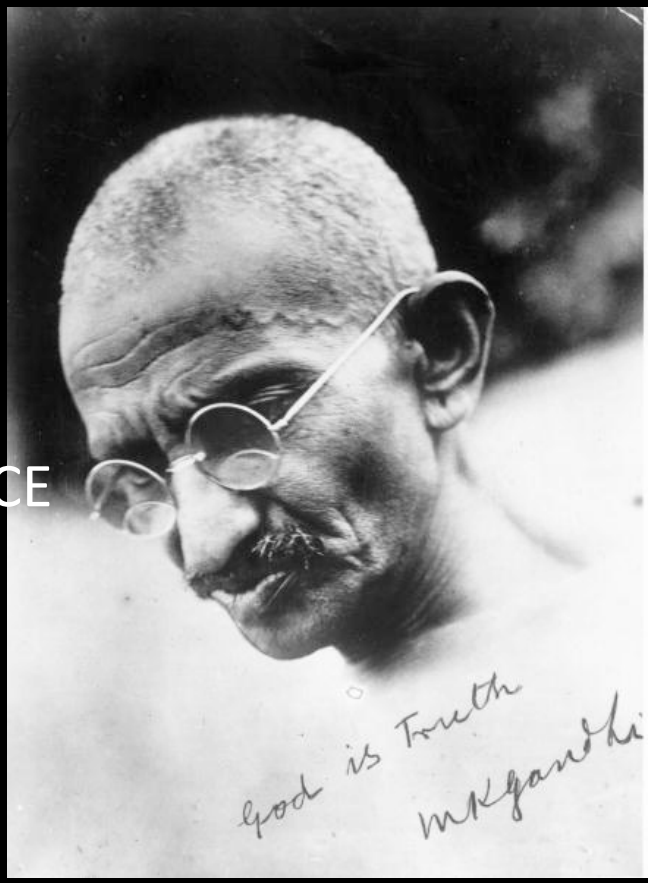

RELIGIOUS TOLERANCE

CURRENT INFORMATION:

There are 3.22 Million Indians in America.
38% of Doctors in America are Indians.
12% of Scientists in America are Indians.
36% of NASA employees are Indians.
34% of MICROSOFT employees are Indians
28% of IBM employees are Indians
17% of INTEL employees are Indians
13% of XEROX employees are Indians

- First democracy to elect a woman Prime Minister.
- India is the 7th nuclear power in the world
- India is the 5th largest economy in the world
- India is the largest democracy in the world
- India has the 2nd largest population in the world(could be a bad point)
- India is the 4th nation in the world to have developed/or developing a nuclear submarine
- India is the 5th nation in the world to be in the multi billion dollar space commerce business.
- India is the 4th nation in the world to develop(or nearly to) ICBM's(can travel up to 14,000km)
- India is the 3rd nation in the world, to be able to develop land based and sea based cruise missiles

SUMMING UP

Human excellence depends on development of culture

World's first culture (Yajurveda 7/14: Sa Prathama Sanskriti Vishwara)
Many small civilizations were formed but were confined to small regions.
Only Indian culture can be called as first world culture.

Indian Culture = Human Culture

Culture that focuses on inculcating human values in a man

Unique features of Indian Culture

1. Freedom of thought

- Every thought is allowed to develop freely.
- Theist & Atheist
- Vedanta speaks of soul as image of the Supreme
- Everyone is free to imagine and accept God's form according to one's beliefs.
- Every thought school is part & parcel of Indian Culture.
- A garden has variety of flowers and plants. These differences increase the beauty of the garden

2. Theory of Karmaphal
 - Rebirth

3. Idealistic families

4. Abundance of saints & reformers.

5. Division of society order (based on personal choice, interest, capabilities) & personal life
for personal development,
for development of society

It is already becoming clearer that a chapter which has a western beginning will have to have an **Indian ending** if it is not to end in the self-destruction of the human race... At this supremely dangerous moment in history the only way of salvation for mankind is the Indian Way“

Dr. Arnold Toynbee British Historian 1889-1975

Mera Bharat Mahan